CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वृहन्नन्दीश्वर विधान

(बावन पूजा)

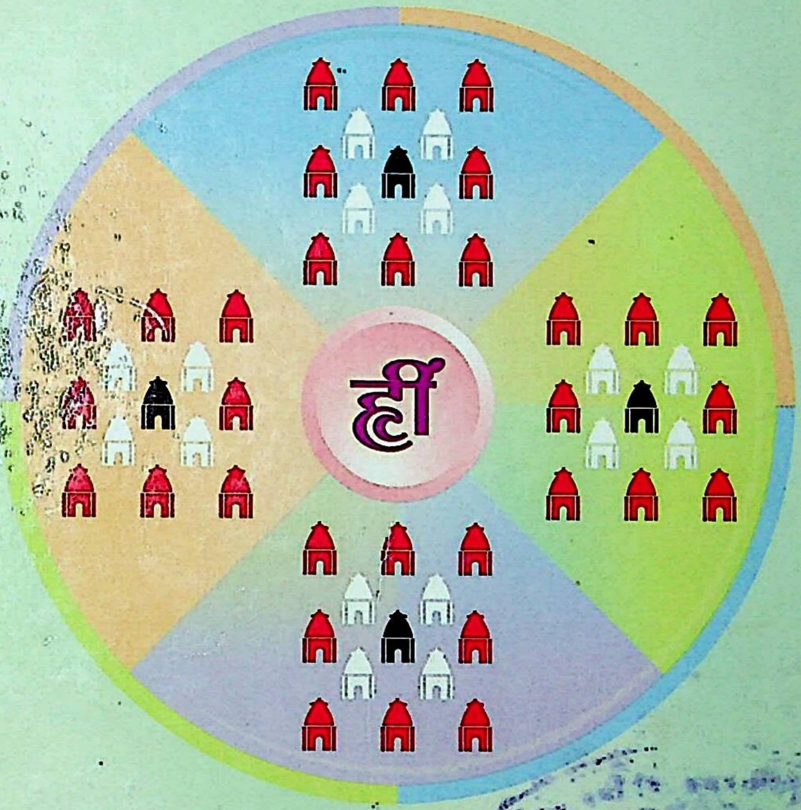

5134

—श्री पण्डित जिनेश्वरदास कृत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानदिवाकर, प्रशान्तमूर्ति, मर्यादा शिष्योत्तम
आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज की 56वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष में

5134

श्री कविवर पं. जिनेश्वरदास कृत

वृहन्नन्दीश्वर विधान

(बावन - पूजा)

भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत परिषद्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत् परिषद् पुष्प संख्या - १३४

आशीर्वाद : आचार्य श्री 108 भरतसागर जी महाराज

प्रेरणा : आर्यिका १०५ श्री स्याद्वादमती माताजी

ग्रन्थ : श्री वृहन्नन्दीश्वर विधान

लेखक : कविवर पं. जिनेश्वरदास जी

संपादन : शान्ति कुमार टोंग्या, ग्वालियर

संस्करण : प्रथम ११०० प्रतियाँ
वीर निर्वाण सं. २५३० सन् २००४

सर्वाधिकार सुरक्षित :

प्रकाशक : भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत् परिषद्

पुस्तक प्राप्ति स्थान :
- आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज संघ
- बीसपंथी कोठी, सम्मेदशिखरजी, मधुवन
- भारतवर्षीय दि. जैन श्रुत संवर्धिनी महासभा लखनऊ

अर्थसहयोग : ब्र. मालती बेन पाटिल
ब्र. सरोज दीदी

मुद्रक : नितिन ग्रॉफिक्स
जनकगंज, ग्वालियर (म.प्र.)
फोन नं. : 0751-2335619

मूल्य 35/-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समर्पण

परम पूज्य सन्मार्ग दिवाकर वात्सलय रत्नाकर

आचार्य श्री 108 विमल सागर जी महाराज के

पट्ट शिष्य

मर्यादा-शिष्योत्तम

ज्ञान-दिवाकर

प्रशान्तमूर्ति

वाणीभूषण

भुवन भास्कर

समता मूर्ति

उपसर्ग विजेता

गुरुदेव परम पूज्य

आचार्य श्री 108 भरतसागर जी महाराज

के

कर-कमलों में

सादर समर्पित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुरू शिष्य की वन्दना प्रतिवन्दना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनभक्ति मुक्तिदायिनी अमरबेल है। मध्यलोक में असंख्यात द्वीप समुद्र हैं। उनमें तेरहवें द्वीप तक शाश्वत अकृत्रिम जिनबिम्ब विराजमान हैं। इनमें से नन्दीश्वर द्वीप अष्टम द्वीप है। यह द्वीप शाश्वत पुण्यार्जन का एक अतिशय केन्द्र है। यहाँ मानव के गमन की कोई शक्ति नहीं है अत: मानव पूजा के माध्यम से अष्टाह्निका पर्व में सातिशय पुण्य कमाते हैं। यह पर्व वर्ष में तीन बार आता है। चतुर्णिकाय के देव इस पर्व में यहाँ त्रिकाल आठ दिनों तक पूजा करते हैं।

सम्यग्दर्शन की प्राप्ति का निकेतन यह द्वीप सर्व भव्यात्माओं के द्वारा आराधनीय है।

ब्र० मालती देवी ने अपनी आर्यिका दीक्षा के उपलक्ष्य में इस ग्रन्थराज का प्रकाशन करवाया। गोम्मटेश्वरमतीजी के नाम से अलंकृत आर्यिकाश्री को मेरा मंगल आशीर्वाद है।

आचार्य भरतसागर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री वीतरागाय नमः

जैन दर्शन एक अलौकिक, सनातन, अनादि निधन अमौलिक दर्शन है। इस दर्शन का भूगोल अचिन्त्य व अवर्णनीय है। जैन दर्शन के भूगोल में मध्यलोक में असंख्यात द्वीपों में एक नन्दीश्वर द्वीप नामक महाद्वीप है जिसमें ५००-५०० धनुष ऊंची, रत्नमयी, वीतराग मुद्रा युक्त जिनप्रतिमाएं विराजमान हैं। उनमें एक अंजनगिरि, चार दधिमुख आठ रतिकर एक दिशा में १३ इसप्रकार चार दिशाओं में ५२ चैत्यालयों में १०८-१०८ प्रतिमाएं विराजमान हैं। एक-एक जिनबिम्ब निजबिम्ब के दर्शन में साधक तम निमित्त है।

मात्र देवों के ही वह पुण्य है जो ऐसी अप्रतिम प्रतिमाओं के साक्षात् दर्शन व पूजन कर सकते हैं। मानव परोक्ष रूप से विधान पूजा के माध्यम से आराधना कर सातिशय पुण्यार्जन करते हैं। सर्वोपयोगी, सर्वजन पुण्यार्जन की दृष्टि को लक्ष्यकर ब्र. मालती बाई ने जिनभक्ति से प्रेरित अपनी आर्यिका दीक्षा के उपलक्ष में इस ग्रन्थ का प्रकाशन कराकर सातिशय पुण्यार्जन किया है। उन्हें मंगल आशीर्वाद है।

सुन्दर, शुद्ध छपाई के लिये नीतिन ग्राफिक्स को भी मंगल आशीर्वाद। ऐसे जिनागम को शुद्धता से छपाकर जिनवाणी की प्रभावना करें। इत्यलम्

आर्यिका स्याद्वादमती

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री 105 आर्यिका गोमटेश्वरी माताजी

संक्षिप्त परिचय

सोलापूर (महाराष्ट्र) क्षु. राजुलमती दि. जैन श्राविकाश्रम छात्रावास की होनहार छात्रा नें भगवान महावीर 2500 वां निर्वाणमहोत्सव वर्ष पर 4 अगस्त 1974 को छात्रावास में प्रवेश पाया। आचार्य कल्प 108 श्री श्रुत सागर जी महाराज के संघ में टोंक ऐतिहासिक नगरी में 30 एप्रिल 1974 में आर्यिका चंद्रमतीजी की समाधि के अनंतर में बाहुबली (कुंभोज) में पूज्य 108 श्री समंतभद्र जी महाराज के दर्शनार्थ तथा मातृवियोग का शोक उपशमनार्थ में मेरा जाना हुआ। बाहुबली के मंदिर में स्वरुप लावण्यमती, फूलों के समान कोमल लेकिन बाल विधवा महिला मिली। वह थी श्रीमती मालती बाई पाटील। जिसे उसके मामा ने (बाहुबली के कर्मचारी) वहाँ भविष्य का पथ प्रशस्त हेतु लाया था। बाल विधवा मालती के प्रति वात्सल्य स्नेहभाव उमड आया, याद आई ''महिला जीवन हाय तुम्हारी कहानी'' पंक्ती। मैने उसे शोलापूर श्राविकाश्रम में अपना वैधव्य दुःख ज्ञान और सेवा सेपिघलाने के लिये शोलापूर आने के लिये प्रेरित किया। उसने भी कुटुंबियो को न मानकर 20/21 उमर की अवस्था में श्राविकाश्रम में प्रवेश पाया। तब मैने उसे 4थीं कक्षा से विठाया। प्राथमिक शाला से हाईस्कूलं तक काम करते-करते सच्चाई से पढ़ रही थी तभी यात्रा के लिये हमारे साथ इंदौर पू. 108 एलाचार्य श्री विद्यानंद के दर्शनार्थ हट किया। पढ़ाई छूट गई, लौकिक ज्ञान के अलावा उन्हें धर्म शिक्षा के प्रति अधिक रुचि थी। व्रतोपवास में उत्साह था पहले से ही षोडसकारण व्रत घर से लेकर आई थी। यह व्रत संपन्न 16 वर्षो तक होने पर उद्यापनादि कार्य विधिवत प्रभावना पूर्वक किया था। तब उसी समय संस्था द्वारा 'धर्म चंद्रिका' उपाधी से अलंकृत किया। दशलाक्षणिक, अष्टान्हिका, रत्नत्रय छोटे बडे व्रतो की धारणा पारणा हरसाल करने का अभ्यास चालू था। वे श्राविकाश्रम छात्रावास की 'गृहमाता' अनभिसिक्त सम्राट के समान 22 साल रही। स्वयं व्रतशील संपन्न होकर छात्रावासो की हाई स्कूल/कॉलेज की छात्राओं का अनुशासन, पालन पोषण करती रही। भारतीय स्तर पर विभिन्न गाँवो की दुःखी, परित्याक्ता, विधवा सनाथ-अनाथ सभी पर प्यार से सेवाए देती थी। शोलापूर उत्तर-दक्षिण यात्रियों के लिये मुनि संघस्थ त्यागियों के लिये ऐसा स्थान है - कि वहाँ श्राविकाश्रम में ठहरना अनिवार्य होता है। अनेक त्यागियों ने भी चातुर्मास अध्ययनार्थ संपन्न करते समय श्री मालती बेन आहारादि व्यवस्था तथा निवास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का कार्य आत्मीयता से करती रही। अनायास छात्राओं पर सुसंस्कारों का आदर्श अनुकरणीय और सराहनीय रहा। श्राविकाश्रम सातिशय भगवान महावीर जिनबिम्बों की प्रतिष्ठाएं बडी प्रभावना के साथ होने के लिये इनकी तन-मन की सेवाएँ प्राप्त हो चुकी है - इसी से निर्विघ्न कार्य सफल हुऐ। श्राविकाश्रम की तथा उनके कारंदवाडी गांव की मानस्तंभ की मूर्तिया स्वयं लेकर स्थापनाऐं कराईी। अपनी सच्ची कमाई का जो मान धन प्राप्त होता था उसी धन की राशियाँ जिनबिम्ब स्थापना पूजा प्रभावना से लगाई। अल्पसंतोषी होकर वे एक श्रावकधर्म की षद् क्रियाओं का पालन करने के लिये कर्तव्यपरायणा रहती थी।

सोलापूर श्राविका संस्था नगर को 'तपोवन' उपाधी से ईडर पंचकल्याणक में गौरवान्वित किया था। तपोवन की आज कई महिलाओं ने नारी जन्म की सफलता संयमी/महाव्रती होकर पाई है। आर्यिका सुपार्श्वमती जी की संघस्था आर्यिका सश्रप्रभावती जी 37 सालों से स्वपर कल्याणार्थ उत्तर प्रांत के गांवो में समाज उद्‌बोधन कर रही है। मालती बेन आचार्य भरत सागर जी के संघ में कैसी आई ? निमित्त ज्ञानी, बात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री108विमल सागर जी संघ संचालिका श्री सरोज दीदी शोलापूर आचार्य श्री के 66 चातुर्मास संपन्न होने पर उनके संघ के साथ बिहार में शामिल हुई थी। सरोज दीदी ने भी 30 साल पहले श्राविकाश्रम का सहारा अध्ययनार्थ लिया था। उन्हें शारीरिक पीडा ऐसी हुई की हर अमावस्या को सारा शरीर फोडों से फूल जाता - किसी ने कुछ करनी घटनी की है। यह सभी समझते थे - किन्तु आचार्य श्री विमलसागर जी ने - इसे चित्रबाई के पास करुणा बुद्धी से रहने की अनुज्ञा दी। उनके तंत्र-मंत्र जलो से उसकी पीडा भाग गई। एक कुशल संघ संचालिका को पूज्य गुरुदेव" झांसी की रानी"कहकर संबोधित करते थे। यह मिनी चित्राबाई आज आचार्य श्री भरत सागर जी का विशाल संघ कौशल्यपूर्ण प्रभावना के साथ सम्भाल रही है।

मालती बेन और सरोज दीदी श्राविकाश्रम की भूतपूर्व होनहार छात्राएँ रही है। संघ में आर्यिका श्रीमतीजी भी संस्था की छात्रा है। अपने ऊपर सेवा/वैराग्य के साथ धर्म-शिक्षा तीनो ने यहाँ एक समय पाई है। अपनी सहेली मालती बेन को आचार्य भरतसागर जी के संघ की व्यवस्थापना तथा सद्‌गुरु समागम के लिये पत्रो द्वारा प्रेरित किया। शोलापूर श्राविकाश्रम की गृहमाता अब स्वयं आर्यिका गोमटेश्वरी के रुप में समाज की माताजी आदरणीय बनी है तपोभूमी के छायादार बहरने वाली मालती - लता। संघ में सम्मेद शिखर से अपनी सेवाएँ देकर अष्टान्हिका पर्व में आषाढ़ शुदी अष्टमी सोमवार 7 जुलाई 2003 के शुभ दिन आचार्य श्री भरतसागर जी के कर कमलों द्वारा 7 भव्य दिव्य महिलाओं की दीक्षाएँ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बडी प्रभावना करके संपन्न हुई थी। सारा दक्षिण भारत का जैन समाज ने इस मंगल दृश्य देखकर आँखे सफल की थी। पूज्य गोम्टेश्वरी माता जी की दीक्षा दिन के प्रीत्यर्थ मुनिभक्त, दान शूर श्रावक शिरोमणि श्री टोंग्या जी ग्वालियर द्वारा नंदीश्वर विधान की अनमोल कृती प्रकाशित हो रही है – यही समाज की भूषणास्पद दातृत्व की कृती पूज्य श्री गोमटेश्वरी माताजी का अंतःकरण समाधान होगा। उसी में आचार्य श्री भरत सागर जी का आशीर्वाद छत्र पाने पर चार चांद लगे है।

समाज को, संस्था को, इनके अति गौरव है। स्व पर कल्याणार्थ जो आर्यिका पद विभूषित हुआ है – रत्नत्रय की साधना में उन्हें दिनदूना रात चौगुना सुफल बल प्राप्त हो। शरीर स्वास्थ्य और आत्मिक बल शुक्लेन्दुवत् वृद्धीगत हो। श्री नंदीश्वर विधान की किताब भी इनकी भूतपूर्व घटनाओं से जुडी हुई है। सोलापूर सातिशय भगवान महावीर मंदिर में हम लोग पं. सुमती बाई जी के साथ हर अठाई में 52 चैत्यालयों की पूजा प्रभावनापूर्ण करते थे – 8 दिनों में श्री मालतीबेन अपनी कोयल जैसी मधुर स्वरों में गाती थी, तब सभी जन भाव विभोर हो जाते थे। उसी घटना की यादगार अब यह नंदीश्वर विधान कृती हमारे लिये रहेगी। मेरा संबंध मालती बेन का पहले गुरु–शिष्या का हुआ किन्तु आज वे हमारी गुरुमाता बनी है। आश्रम की छात्राएं गृहमाता की छत्र छाया विरहित अनाथ जैसी हुई है। निमित्त ज्ञानी आचार्य श्री विमलसागर जी के 10 वीं पुण्यतिथि के समारोह में विशाल संघस्थ–त्यागी वृंद तथा अनके विद्वानों द्वारा कृतज्ञता उद्‌गार प्रत्यक्ष सुनकर, दर्शन पाकर, लोहारिया की भक्त गणों की दर्शन पाकर धन्य हुई हूँ।

वात्सल्य रत्नाकर, निमित्त ज्ञानी श्री 108 विमल सागर जी की समाधी की पुण्य पर्वणी देश के हर कोनों में यह 10वीं पुण्य तिथि के अनंतर भी दशगुनी, सौगुनी, सहस्त्रगुणित यावत्चंद्र दिवाकरो, रहे उनके पट्टाधीश आचार्य श्री भरत सागर जी और उनके उपकृत सभी शिष्य, चतुर्विध संघ – आचार्यो के गुणों का '' वंदे तद्गुण प्राप्तये'' पुरुषार्थ जागृत हो।

इन भावनाओं के साथ......

ब्र. विद्युवता हिराचंद शाह
अध्यक्षा - श्राविका संस्था नगर
सोलापूर (महाराष्ट्र)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विधान की विधि

अष्टम नन्दीश्वर द्वीप की चारों दिशाओं में चार अंजनगिरि हैं। हर एक अंजनगिरि के चारों कोनों में एक एक वापिका है। प्रत्येक वापिका के बीच एक दधिमुख पर्वत है। हर एक दधिमुख के चारो कोनों में दो दो रतिकर पर्वत हैं। इस प्रकार एक दिशा में 13 पर्वतों पर 13 अकृत्रिम जिन मन्दिर है। चारों दिशाओं में 13, 13 एकत्र 52 मन्दिर है। इन्हीं की पूजा क्रमशः इस विधान में है। इसका मंडल (मांड़ना) भी मांड़ा जाता है।

कार्तिक, फाल्गुन और आषाढ़ के शुक्लपक्ष के पिछले आठ दिनों में अष्टाह्निका (नन्दीश्वर) पर्व होता है । इस पर्व के दिनों में देवगण उस नन्दीश्वर द्वीप में जाकर वहां की अकृत्रिम जिन प्रतिमाओं की पूजन कर अपना जीवन सफल करते हैं किन्तु मनुष्य वर्तमान पर्याय से वहां नहीं जा सकते, इसलिये वे यहां उनकी कल्पना कर पूजा करते है।

पूजा करना श्रावक का दैनिक कर्तव्य है। पूजन के द्वारा जितनी परिणामों की निर्मलता होती है। उतनी अन्य कार्यों से नहीं। पूजा, मण्डल और विधान से धर्म की प्रभावना भी होती है। जो सम्यक्त्व का अंग और मोक्ष का कारण है।

अन्य सिद्धचक्र आदि विधानों के समान इस विधान का भी महत्व कम नहीं है। इसके अनेक उदाहरण भी जिनागम में प्रसिद्ध हैं। सर्व साधारण के श्रेय के हेतु यह विधान बड़ा ही उपयुक्त है। इसकी अच्छाई का यह प्रबल प्रमाण है कि केवल दो ही वर्ष में इसकी एक हजार प्रतियां हाथों हाथ उठ गई हैं।

मोहनलाल शास्त्री, कव्यतीर्थ

जबलपुर, सी. पी.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5134

ॐ

श्री सिद्धाय नमः

कविवर पण्डित जिनेश्वरदास कृत

श्री वृहन्नन्दीश्वर विधान

(वावन पूजा)

दोहा

श्री अरिहन्त महन्त पद, सिद्ध स्वहित कर्त्तार ।
सिद्धि देहु निर्ग्रन्थ गुरु, भवदधि तारक सार ।।
जिनपद निज पर काज में, जपों त्रियोग सम्हार ।
कृत्त्याकृत्त्य जिनेश की, प्रतिमा स्तुति कर सार ।।
नन्दीश्वर वर द्वीप में, वावन जिनगृह सार ।
निजपरहित पूजा करों, सर्वसिद्धि दातार ।।

जिनस्तुति, छन्द कुसुमलता

जै जै जै जिनवर जगत्राता, जन्म असाता दूर करो ।
जै जै जै भवतापनिकन्दन, भवाताप मम चूर करो ।।
जै जै जै जग शरण सहायक, मम सहाय भरपूर करो ।
जै जै जै सुखकन्द चन्द्रप्रभ, मम उर वास जरुर करो ।।
जै जै कर्म करुर घाति, चक-चूर कूर बल दूर करो ।
जै जै जै वर वीर वृत्ति कर, मम शरीर बल पूर करो ।।
जै जै केवलज्ञानभांनुप्रभ, मोह महातम दूर करो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जै जै जै बहुशक्ति अंश मम, उर प्रकाश भरपूर करो ।।
आननचन्द्र वचन अम्मृत से, कुमतिताप मम दूर करो ।
वसुविधिहरण करण अनुपम सुख, सुमतिप्रकाश हजूर करो ।।
जगहितवधि उपदेशक वानी, दिव्यरुप बहुरुप करो ।
सुर नर पशुगण सभानिवासी, सबै स्वयं सुखरुप करो ।।
जिनवरचरणनखावलि उपमा, कहत शक्र अकुलाये हैं ।
गणधर ऋषिमुनि भक्ति भरेउर, इकटक नेत्र लगाये हैं ।।
जिनकी प्रभा शचीपति शिर के, मुकुटरत्न चमकाये हैं ।
जिनवरचरण-सरोजनखावलि, केशर मम उर आये हैं ।।
जड़ता भ्रमतम कुमति विनाशो, सुमति प्रकाशो सुखदाता ।
महापुण्य से या जग माहीं, कदाकाल कोइ भवि पाता ।।
आज काल सुख साज मिल्यो, जिन-राज सुजस यातें माता ।
ख्यातिलाभ की चाह न मेरे, आत्मलाभ मम मन भाता ।।

दोहा

चाह नहीं पर द्रव्य की, यह अरजी उर धार ।
दीजे निज की ऋद्धि को, कीजे यह उपकार ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशास्थितांजन गिरिजिनमन्दिर पूजा

स्थापना (कुसुमलता छन्द)

नन्दीश्वर वर द्वीप आठमों, ताकी पूरब दिशा महान ।
संहस चुरासी योजन ऊँचा, श्यामवरण अंजनगिरि जान ।।
ढोलसमान गोल तिहि ऊपर, जिन मन्दिर उत्कृष्ट महान ।
इकशत आठ अधिक जिन प्रतिमा, तिन पद पूजों उर धरध्यान ।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशास्थितांजनगिरि जिन प्रतिमा समूह ! अत्रावतरावतर सम्वौषट् (इत्याह्वानम्) अत्र तिष्ठ ठः ठः (स्थापनम्) अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधापनम्)

अष्टकम् (सुन्दरीछन्द)

द्रह तिगिञ्छ समान सुहावनो, शुचि सुभाजन में भर लावनों ।
जल जिनेश्वर चर्ण चढ़ावनो, शिव महीरुहमूल बढ़ावनों ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

मलय चन्दन पावन लायके, कुसुम केसर संग घिसायके ।
जजत श्री जिन हर्ष बढ़ायके, लहत भवसुख ताप नशायके ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम् ।

सरस निर्मल शालि सुहावने, अनुपमान मयंक प्रभा बने ।
विमल अक्षत सों जिन पूजिये, अखय पद पा शिव हूजिये ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

अतिसुगन्ध सुवर्ण सुहावने, कुसुम बहुविध के अतिपावने ।
जिनपदाम्बुज पूज रचाइये, अतनु तापहि आप बचाइये ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चरु अनूप पवित्र बनाय के, अति प्रमोद हृदय में लायके।
चरण चारु जजों जिनराज के, करनहार सभी सुख साजके।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम्।

शुचि अनूप प्रकाश महान है, रतनदीप मनों द्युतिमान है।
चरण पूज करों जिनराज की, प्रगट ऋद्धि करो हितसाज की।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः दीपम्।

अतिसुगंध सुद्रव्य मिलाय के, चरण पूजत जिनवर पायके।
अशुभकर्म निवारण हेतु हैं, सुखसमाज सबै निज देत हैं।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः धूपम्।

सरस मिष्ट विशिष्ट सुहावने, निज सुयोग्य महाफल पावने।
चरण भेंट धरें जिनराज की, लहत रिद्धि सबै सुखसाज की।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः फलम्।

जलफलादिक द्रव्य मिलाइये, अरघ सो जिन चर्ण चढ़ाइये।
लहत सो जग में सब रिद्धि को, बहुरि पावत है शतसिद्धि को।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

जयमाला

(घत्ता छन्द)

जय जय सुखसागर, जगत उजागर, वृषरत्नाकर, विश्वपती।
मैं पूज रचाऊँ, तुम गुण गाऊँ, निज निधि पाऊँ, कृपापती।।

छन्द मोतीदास

जयो जग में अरिहन्त महन्त, जयो तुम ध्यान धरें मुनिसंत।
जयो गरभागम मंगल मांहि, शचीपति आय प्रणाम करांहि।।
जयो प्रभु क्षायिक सम्यकवान, जयो त्रयज्ञान समेत महान।
जयो जग में जब जन्मत देव, जयो जयशब्द करें सुर सेव।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुराधिप आय महागज शीश, सुगोद लियो वसुधापति ईश।
महागिरि मस्तक पाण्डुक नाम, महावन जाय कियो विसराम ।।
तहाँ अभिषेक शिला मणिरुप, जहाँ त्रय आसन मध्य अनूप।
सुमध्य सिंहासन में जिनभूप, विराजत ज्यों नभ चंद्र स्वरुप ।।
सुवर्ण सुरत्न जड़े द्युतिमान, महाकलशा सुर हाथन आन।
भरे जल पंचमसागर तान, सुहाथहिं हाथजु लाय महान ।।
करे सुर उत्सव न्हावन काल, बजे सुर दुन्दुभि दिव्य रसाल।
नचै सुरनारि नवाय सुभाल, बजै सब साज समाज विशाल ।।
महारस भक्ति भरी सुर नार, सुजन्म महोत्सव के अनुसार।
सुगावत गान अमीसम वान, बजें पग नेबर तान समान ।।
झनाझन नेवर की झंकार, करैं घुंघरु पग में टंकार।
तनातन तानत तानस्वरुप, घनाघन घोर मृदंग अनूप ।।
सुवीन बजाय सुरी परवीन, नवों रस भावमयी लयलीन।
तिसी अनुसार करें जयकार, सुरासुर हर्ष हिये अनिवार ।।
सुराधिप न्हौन करें जिहि वार, सभी मिल शब्द करें जयकार।
बजें नभ में सुर दुन्दुभि जोर, सुछाय रहो दशहू दिश शोर ।।
निरन्तर नृत्य प्रसन्न शरीर, असंख्यसुरी गुणगान गहीर।
करें बहु भक्ति भरी सतभाव, धरें निजदर्शन को उर चाव ।।
रहो चिरंजीव जिनेश्वर आप, रहो जग में जयवन्त प्रताप।
करो हमको भवसागर पार, वरो प्रभुजी शिवसुन्दर नार ।।
सरो सब जीवन को हितकाज, भरो सुखसम्पति श्रीमहाराज।
हरो हमरी भववेदन आज, करो मम काम गरीब निवाज ।।
प्रभू ये जन्म महोत्सव सार, हमें करियो भवसागर पार।
सुरासुर सर्व नवाय जु शीश, गये निज थानक देय अशीश ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभू कर राज धरो तप सार, हरो अरि मोहबली अनिवार।
लयो वर केवलज्ञान अनूप, कह्यो सब तत्व चराचर रुप ।।
वही छवि सुन्दर है अधिकार, अकृत्य जिनालय में अनिवार।
करें सुर सेव सबै सुखकार, जिनेश्वर को भवसागर तार ।।

दोहा

नन्दीश्वर पूरब दिशा, अंजनगिरि के शीश ।
जिनमंदिर प्रतिबिम्ब मैं, नमों नाय निज शीश ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

अडिल्ल

नन्दीश्वर वर द्वीप आठमों जानिये,
ताकी चहुँ दिशि वावन जिनगृह मानिये।
पूरब अंजन शिखर जिनालय कों नमों
या प्रसाद जग मांहि मिले वृष अनुपमों।।

।। इत्याशीर्वाद ।। १ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीपदिशांजनगिरिपूर्वदधिमुख पर्वतस्थजिनमन्दिरपूजा

छन्द जोगीरासा

नन्दीश्वर वर द्वीप आठमों, पूरब दिश सुखराई ।
अंजनगिरि ताकी पूरब दिश, नन्द वापिका भाई ।।
तिहि विच दधिमुख दधिसम उज्ज्वल, गिरिवर गोल सुहाई ।
तापर श्रीजिन मन्दिर सोहें, पूजत हर्ष बढ़ाई ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपूर्वदधिमुख पर्वतस्थजिनमन्दिर जिनप्रतिमासमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वनम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अष्टकम् (जोगीरासा)

जन्म जरा अरु मरण महादुख, काल अनादि सह्यो है ।
और बहुत दुख जान जगत में, बाकी नांहि रह्यो है ।।
तिहि दुखहरण करण सुखसाता, जल सों जिनवर पूजों ।
परम वीतरागी निजनिधि के, ईश जिनेश्वर हूजों ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपूर्वदधिमुखजिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

भव आताप तपत यह प्राणी, शान्ति कभी नहिं पावे ।
सुर नारक नर पशुगति माहीं, विषयदाह दुख पावे ।।
शीतल शुद्ध सुगन्धित चन्दन, ले जिन मन्दिर आवे ।
पूजत श्री जिनवर पदपंकज, शान्ति सुधा सुख पावे ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपूर्वदधिमुखजिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम् ।

जो कछु उपजत जग में दीखे, सब क्षयरुप बताई ।
अथिर पदारथ अपने मानें, यह भ्रम बुधि दुखदाई ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

या भ्रमबुद्धिहरण के कारण, अक्षत सों जिन पूजों ।
अक्षय पद की प्रापति कारण, सुबुधि-सतीवर हूजों ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपूर्वदधिमुखजिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

या जग में बलवन्त सन्त नर, ब्रह्मा विष्णु महेशा ।
शक्र चक्रपति मकरध्वज ने, वश कीने सुर शेषा ।।
ता अशरीर पीर निरवारण, कारण शुद्ध मँगाओ ।
देशकाल निज शक्ति समाना, जिनपद कुसुम चढ़ाओ ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपूर्वदधिमुखजिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

सकल चराचर को दुखदाता, दोष क्षुधा विख्याता ।
ताके वश विललात जीव सब, क्षण नहिं पावत साता ।।
बहुदुख दूर करन के कारण, चरु सों जिनवर पूजों ।
क्षुधारोग निरवार जगत जन, निज लक्ष्मीपति हूजों ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपूर्वदधिमुखजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

मिथ्या मोह महातम भारी, जग जीवन के छायो ।
ता वश पावस पावस कीजो, ज्ञान शशी न लखाओ ।।
ताके दूर करन के कारण, दीपक सों प्रभु पूजों ।
ज्ञानप्रकाश विषें निजनिधि को, पाय सुखी भव हूजों ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपूर्वदधिमुखजिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

कर्म गहन वन मांहि भयानक, विषय चोर दुखकारी ।
प्रबलकषाय सिंहसर्पादिक, रहत सदा अनिवारी ।।
भव वन गहन दहन के काजे, धूप दशाङ्गी लावो ।
परम पूज्य अरिहन्त देव के, चरणन अग्र चढ़ावो ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपूर्वदधिमुखजिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जा फल कोऋषि मुनि सब चाहें, इन्द्रादिक ललचावें ।
श्री अरिहन्त चरण बिन जग में, अन्त कहीं नहिं पावें ।।
ता फल प्रापति कारण भोनर, उत्तमफल बहु लीजे ।
श्री अरिहन्त चरण युग आगे, भेंट मनोहर दीजे ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपूर्वदधिमुखजिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल फल द्रव्य मिलाय मनोहर, अर्घ बनाओ भाई ।
बहुबिध हर्ष सहित उत्सव करि, नृत्य करों सुखदाई ।।
भव भ्रामण निरवारण कारण, अर्घ जिनेश्वर आगें ।
भक्ति बढ़ाय चढ़ाय गाय गुण, अशुभ उसी क्षण भागें ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपूर्वदधिमुखजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल (घत्ता छन्द)

जय जय त्रिपुरारी, शिव सुखकारी, तुम स्वामी त्रैलोक्य पती ।
जिनपद के पूजे, शिवसुख हूजे, ततक्षण पावे ज्ञान अती ।।

मोतीदाम छन्द

जयवन्त जगत्पति देव तुम्हीं, सुखदायक लायक देव तुम्हीं ।
अघघायक दायक दान महा, वृषक्षायिक सम्यग्ज्ञान महा ।।
प्रभु समवसृती में राजत हें, शशि सूरजकोटिक लाजत हैं ।
चतुरानन आप विराजत है, धुनि दिव्य मनो घन बाजत हैं ।।
हरि आसन ऊपर पद्म महा, पद्मासन आसन आप गहा ।
सुर चामर चोंसठ ढारत हैं, अधपुञ्ज मनों सब झारत है ।।
त्रय छत्र महेश्वर शीश धरे, त्रयलोक सुरेश्वर सेव करें ।
जहां वृक्ष अशोक विराजत है, फल फूल महां अति छाजत है ।।
नभ में सुर दुन्दुभि राजत है, मधुरी मधुरी धुनि बाजत है ।
जिनदेह प्रभा बहु फैल रही, भव सात निहारत सर्व मही ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वरसावत हैं सुर पुष्प सही, तिनकी महिमा नहिं जाय कही ।
प्रतिहारज आठ विराजत हैं, जिनके निरखें अघभाजत हैं ।।
प्रभु तत्त्व प्रकाश करें सबही, तहां जीव अजीव कहें सबही ।
उपयोगमयी यह जीव कह्यो, वह दर्शन ज्ञान दुभेद कह्यो ।।
चउ दर्शन चक्षु अचक्षु तथा, अवधी अरु केवलदर्श जथा ।
वसुभेद मतिश्रुति अवधि कहा, मनपर्यय केवलज्ञान महा ।।
कुमती कुश्रुती व विभंग महा, इमि आठ प्रकार जु ज्ञान कहा ।
त्रस थावर भेद विषें लहिये, सब जीव अनन्त प्रभा कहिये ।।
त्रस चार द्विइंद्रिय आदि कहे, पण थावर इंद्रिय एक लहे ।
पृथिवी जल तेज समीर अबै, अरु जाति वनस्पति भेद सबै ।।
इक इन्द्रिय सूक्षम बादर हैं, विकलत्रय तीन मिले पण हैं ।
पण इन्द्रिय दोय प्रकार कहे, समना अमना इमि सात भये ।।
पर्याप्त अपर्याप्त सबही, इमि चौदह जीव समास सही ।
इन आदि अनेक सुभेद कहे, भवि जीवन ने सतभाव गहे ।।
वह श्रीजिनकी छवि छाजत है, जिन मंदिर मांहि विराजत है ।
जिनपूजन को सुर आवत हैं, चित में बहु भक्ति बढ़ावत है ।।
जिनराज गरीब निवाज सनों, हमरी अरजी प्रभु आज सुनों ।
भवपार करो जगतार सुनो, शिवकामिनि के भरतार सुनो ।।

दोहा

अंजन गिरि से पूर्व दिश, दधिमुख गिरि जिन धाम ।
जिन प्रतिबिम्ब विचार के, पुनि पुनि करहुँ प्रणाम ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपूर्वदधिमुखजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं ।

।। इत्याशीर्वादः ।। २ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीं नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशांजनगिरिदक्षिण दधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिरपूजा

कवित्त छन्द -

नन्दीश्वर पूरब अंजनगिरि, ताकी दक्षिण दिश सुविशाल।
मध्य वापिका नन्दवती है, दधिसरुप दधिमुख गिरिसार ।।
दसहजार योजन उन्नत गिरि, ढोल समान गोल आकार ।
तापर श्रीजिन मंदिर प्रतिमा, नमों अकीर्तम हित निरधार ।।

ओ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दिशांजनगिरि दक्षिणदधिमुख पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिनप्रतिमासमूह! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अष्टकम् (छन्द टे़र)

सहज शांति सन्तोष रसायन, ज्ञान बिना दुख पायो ।
तृष्णा तृषा बहुत दुखदाई, काल अनन्त गँवायो ।।
तिहि दुख के निरवारन कारण, शीतल जल ले आयो ।
शांति सुधासागर जिनवर के, चरणन मांहि चढ़ायो जी ।।
चिन्तामणि पायो, मानुषभव, आयो प्राणी हाथ में ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजन गिरिदक्षिण दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

विति चतुरिन्द्रिय विकलत्रयमें, भटकि भटकि दुख पायो ।
विषयचाह की दाह दह्यो जग, कबहुँ न निजसुख पायो ।।
भवाताप निरवारन कारण, चन्दन केशर लायौ ।
शीतल गुणदायक जिनवर के, चरणन पूज रचायोजी, चि.।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजन गिरिदक्षिण दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः सुगंधम्।

पंचेन्द्रिय पशु नारक गति में, बहु प्रकार दुख पायो ।
जनमि जनमि मरि मरि फिर जन्म्यो, अजहूँ अन्त न आयो ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिहि भव भ्रमण नाशके कारण, जिनवर पूजन आयो।
अक्षयपद प्रापति के कारण, अक्षत पुंज चढ़ायो जी, चि.॥

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजन गिरिदक्षिण दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

सुर नर गति में बहुविध भटको, सब थल काम सतायो।
अतनु बली से हरि हर ब्रह्मा, कोई जीत न पायो॥
तिहि अरित्रास हरण जगत्राता, जगदीश्वर सुन पायो।
सुमन सुगंध पवित्र यथोचित, जिनपद भेंट चढ़ायो जी, चि.॥

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजन गिरिदक्षिण दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम्।

कर्म असाता, जम को भ्राता, आवत जगत डरायो।
सूर्य शशी बलपूर चराचर, कोई थिर न रहायो॥
ता दुख भंजन देव निरंजन, भाग उदय सुन पायो।
क्षुधादोष निरवारण कारण, चरु चढ़ाय गुण गायो जी, चि.॥

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजन गिरिदक्षिण दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम्।

चारों गति चौरासी लख में, मोह महातम छायो।
हित अनहित पहिचाने नाहीं, यों ही काल गमायो॥
निजहित ज्ञानप्रकाशन कारण, जिनवर पूजन आयो।
रत्नद्वीप वा यथाशक्ति शुचि, द्वीप जिनेश्वर लायो जी, चि.॥

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजन गिरिदक्षिण दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः दीपम्।

कर्मोदय वश जग के प्राणी, अनिवारित दुख पायो।
सांचो सुख पायो ना कबहूँ, काल अनन्त गमायो॥
दुखपरिहारक सुखपरिचारक, जिनवर पद अब आयो।
दुष्ट कर्मवन दहन काज अब, धूप खेय गुण गायो, चि.॥

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजन गिरिदक्षिण दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः धूपम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जा फल बिन सब जग निष्फल है, सुरपति भी ललचायो ।
कठिन कठिन तप करे कुधीनर, तो भी हाथ न आयो ।।
ऐसो मुक्ति महाफल दाता, तीर्थेश्वर सुन पायो ।
शक्तिसमान शुद्ध फल लेकर, निजवर चरण चढ़ायो जी, चि.।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजन गिरिदक्षिण दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल फल द्रव्य मिलाय गाय गुण, चरण बिषें चित लायो ।
जन्म सफल अनुपम फल प्रापति, कारण पूज रचायो ।।
पूजन समय सुधी पूजक को, तृणसम शक्र लखायो ।
इमि विचार उर धार अर्घ ले, जिनपद पूजन आयो जी ।।
चिंतामणी पायो, मानुषभव, आयो प्राणी हाथ में ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजन गिरिदक्षिण दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

दोहा

नन्दीश्वर पूरब दिशा, अंजनगिरि सुविशाल ।
दक्षिण दधिमुख जिनभवन, तिनकी यह जयमाल ।।

पद्धडी छन्द

जय नन्दीश्वर वर दीप जान, ताकी पूरब दिश में महान ।
अंजनगिरि शोभित श्याम रंग, ताकी दक्षिण दिश में अभंग ।।
है नन्दवती वापी महान, वर्गाकृति लख योजन प्रमान ।
दशशत योजन गहरी अनूप, जल उज्वल निर्मल सुधारुप ।।
ताकी चारों दिश वनविशाल, बहु वृक्ष फूल फल लता जाल ।
लख योजन लम्बे अर्घ तास, चौड़े जानो अतिशोभ तास ।।
सब वेदी गोपुर युत अनूप, बहु विध रचना तहँ रतन रुप ।
वापी का मध्य जु शोभमान, दधिमुखगिरिजानोदधिसमान ।।
ता पर्वत के मस्तक मँझार, सोहे अकृत्रिम जिन अगार ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वसु अधिक एकशत शोभमान, तामें जिनबिम्ब विराजमान ।।
वसु प्रातिहार्य मंगल सुदर्व, है स्वयं सिद्ध रचना जु सर्व ।
तहां चतुर्णिकाय सुदेव आय, बहु भक्तिसहित पूजा रचाय ।।
मुख पाठ पढ़े बाजे बजाय, जयवन्त होहु तुम जगतराय ।
तुमही हो अधम उधार देव, तुमही हो भवदधितार देव ।।
तुमही हो शरण सहाय देव, तुमही कृपाल हितदाय देव ।
स्वयमेव सर्व सुखदाय देव, सुर असुर नमें तव पांय देव ।।
यों भक्ति भरे सुखवृन्द सार, प्रभु चरण कमल में बारबार ।
निज शीस नाय उर हर्ष धार, सुरदेव सफल जाने सुसार ।।
हम शरणागत आये जिनेश, सब दोष माफ कीजे महेश ।
हम तनिक चाकरी चूक भेष, प्रभु जी करुणा कीजे हमेश ।।
मत मेरी कृति निरखो हजूर, विरदावलि अपनी करो पूर ।
बिन कारण जगबांधव दिनेश, यह नामनिवाह करो हमेश ।।
भव भव में मिलियो तुमहिं देव, भव भव में मिलियो सुगुरु सेव ।
भव भव जिनवाणी ग्रहण टेव, यह देव जिनेश्वर सुजसलेव ।।

दोहा

श्री अरिहन्त महन्त पद, जो पूजे मन लाय ।
रिद्धि सिद्धि जग में मिले, सुख पावे शिव जाय ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजन गिरिदक्षिण दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

स्वहित सिद्धि करतार, सिद्धदेव उर में बसो ।
करो कर्म परिहार, यह वाञ्छा मेरी फलो ।।

।। इत्याशीर्वादः ।। ३ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशांजनगिरि पश्चिम दधिमुखपर्वतस्थ जिन मन्दिर पूजा

कुसुमलता छन्द

नन्दीश्वर पूरव अंजनगिरि, ताकी पश्चिम दिश में जान।
मध्य वापिका नन्दोत्तर है, दधिमुखगिरिदधिवरणमहान ।।
ताके शीश जिनेश्वर मन्दिर, रत्नरचित उत्कृष्ट प्रमान।
तामें जिनवर बिम्ब विराजे, तिनके पद पूजों गुणखान ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशांजनगिरिपश्चिमदधिमुख पर्वतस्थजिनमन्दिर जिन बिम्ब समूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अष्टकम् (चौपाई छन्द)

जन्म जरा मरणों दुखदाई, यातें रहित तुम्हें जगराई।
जलसों जिनवर पूज रचावें, जन्म मरण यातें नहिं पावें ।।

ओ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपश्चिमदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

कर्म उदय दुख दाह अपारा, सो तुमने कीनो परिहारा।
शीतल चन्दन आन चढ़ाऊँ याते शांति सुधा सुख पाऊँ ।।

ओ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपश्चिमदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

अक्षत पुञ्ज मनोहर लीजे, श्रीजिनवर की भेंट करीजे।
अक्षयपद के पावन काजे, पूजत भविजन श्रीजिनराजे ।।

ओ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपश्चिमदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

कामवाण दाहन के काजे, कामवाण दाहक जिनराजे।
पूजत जन्म सफल हो जावे, प्रगट स्वभाव ज्ञान दरसावे ।।

ओ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपश्चिमदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोष दहन गुण गहन अपारा, श्री अरिहन्त चरण सुखकारा।
क्षुधारोग निरवारन काजे, चरु सों पूजत श्री जिनराजे ।।

ओ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपश्चिमदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम्।

ज्ञान बिना जग अंध समाना, आपा पर को भेद न जाना।
तम अज्ञान नशावन काजे, दीपसों पूजों श्री महाराजे ।।

ओ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपश्चिमदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः दीपम्।

कर्मकलङ्क रहित जगनामी, नंत चतुष्टय मंडित स्वामी।
कर्म कलङ्क विनाशन काजे, खेबों धूप जिनेश्वर आजे ।।

ओ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपश्चिमदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः धूपंम्।

मोक्ष महापुर उत्तम भारी, जामें अलौकीक सरदारी।
तिहि पुर राजग्रहण के काजे, फलसों पूजत श्री जिनराजे ।।

ओ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपश्चिमदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः फलम्।

जल फलं द्रव्यमिलाय बनायो, उत्तम अर्घ पवित्र सुहायो।
श्रीजिनपद पूजत सुख पायो, जन्म जन्म को अशुभ नशायो ।।

ओ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपश्चिमदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम।

जयमाल

दोहा

श्री जिनवरपद पूजके, कर चित बहुत खुशाल।
भक्तिसहित जिनराज की, अब वरणों जयमाल ।।

(चाल अहो जगतगुरु देव)

जै जै जै जिनराज, तुम जगदीश्वर स्वामी,
मेरी अरजी आज, सुनिये अन्तर्यामी।
या भव वन के मांहि, काल अनन्त गमायो,
सुख को नामहु नांहि, दुख ही दुख भवि पायो ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इक इन्द्रिय तन मांहि, भू जल अग्नि समीरा,
वनस्पति की काय, पाइ बहुविध पीरा।
फोरे तोरे देह, खोदे कुचरे भारी,
टोरे बोरे जेह, पाये दुख अनिवारी।।
उदय भयो दुर्भाग, दमरी रुंक बिकायो,
बहुरि पचायो आग, साग हरित तन पायो।
पाई त्रस पर्याय, विकल चतुष्क शरीरा,
सम्म्‌र्च्छन तन पाय, बहुत सही तहां पीरा।।
सेती पशु नर देह, गर्भ विषें दुख पायो,
तन धन से कर नेह, विछुरत बहु घबरायो।
विधिवश नर्क मँझार, अथवा स्वर्ग सिधायो,
ज्ञान बिना अविचार, यों ही जन्म गमायो।।
इमि चारों गति मांहि, फिर फिर थिर न रहायो,
निजहित करन उपाय, सम्यग्ज्ञान न पायो।
अब पायो यह दाव, तुम जिनदेव निहारे,
धनि यह दिवस सुआय, अरु धनि भाग हमारे।।
पाये जिनवर देव, श्रीगुरु परम विरागी,
धर्म दयामय एव, सम्यक बुधि अब जागी।
अपनो सुगुन विशाल, विधाव्रत हितकारी,
दीजे देव कृपाल, लीजे यश जगतारी।।
मेरे उर यह चाह, और न दूजी स्वामी,
पूरणहित जग मांहि, तुम समरथ सुखदामी।
ज्यों आगे जिनदेव, जगजीवन सुख दीनों,
त्यों अजहूँ स्वयमेव, काटो कर्म नवीनों।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा

गणधर पार न पावहीं, हारे सुरपति शेष ।
को समरथ या जगत में, को कह सके विशेष ।।

ओ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशांजनगिरिपश्चिमदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

सोरठा

नाम मात्र आधार, अविवेकी पशु हित लहे ।
सो जिनवर उर धार, क्यों न लहे शिव सम्पदा ।।

।। इत्याशीर्वादः ।। ४ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशांजनगिरि उत्तर दधिमुखपर्वतस्थ जिन मन्दिर पूजा

कुसुमलता छन्द

नन्दीश्वर वर द्वीप आठमों, ताकी पूरव दिश अविकार।
श्यामवर्ण अंजन भूधर के, उत्तरदिश दधिमुख गिरिसार॥
नन्दषेण वापी मधि राजै, श्वेतवर्ण मनहरण अपार।
तापर जिनमंदिर की प्रतिमा, तिनपद जजूं विनय उरधार॥

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्वदिशांजनगिरिस्थोत्तरदधिमुख पर्वत जिनमन्दिर जिन बिम्ब समूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

कुसुमलता छंद

पद्मद्रह सम उज्वल जल ले, शुचि शीतल उर भक्ति बढ़ाय।
जन्म जरा दुख दूर कारण कों, जिनचरणाम्बुज देय चढ़ाय॥
नन्दीश्वर की पूरब दिश में, अंजनगिरि सोहे सुखकार।
ताकी उत्तरदिशदधिमुखगिरि, तापर पूजों जिनगृह सार॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशांजन गिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

बावन चन्दन दाह निकन्दन, कुं कुंम अरु कर्पूर मिलाय।
पूरण सुखी जगत्पति पद को, सुखकारण पूजों हरषाय॥ न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशांजन गिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः सुगंधम्।

शशिसम श्वेत वरण मोतीसम, उज्वल अक्षत धोय बनाय।
अक्षय निधिपति परमेश्वर के, चरणकमल पूजों हरषाय।न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशांजन गिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुसुमायुध शर पीर निवारन, कुसुमायुधविजयी जिनराज।
कुसुमपुञ्ज निर्दोष लायकर, जिन चरणन कूं देत चढ़ाय॥
नन्दीश्वर की पूरब दिश में, अंजनगिरि सौहै सुखकार।
ताकी उत्तरदिश दधिमुखगिरि, तापर पूजों जिनगृह सार॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशांजन गिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम्।

फैनी गोजा मोदक खाजें, ताजे तुरतहिं लेत बनाय।
क्षुधाहरण जिनचरणकमलकूं, भक्तिसहित भविदेत चढ़ाय॥न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशांजन गिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम्।

शशिसम उज्वल विविधवर्णके, रत्नदीप या अन्य प्रकार।
शक्तिसमान शुद्ध दीपक सों, जिनवरपद पूजों हितकार॥न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशांजन गिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः दीपम्।

दशविध धूप सुगन्ध बनाकर, हर्ष सहित जिनमंदिर जाय।
कर्मदहन कारण जिनवर के, चरणअग्र खेवहुँ मनलाय॥न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशांजन गिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः धूपम्।

सरस सुगंध मिष्ट शुचि फल ले, वीतराग के पद उर ध्याय।
वीतरागपद काज सुधी नर, जिनचरणाम्बुज देत चढ़ाय॥ न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशांजन गिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः फलम्।

जल फल वसुविध द्रव्य मिलाकर, अर्घ बनावत मन हरषाय।
वसुविधिहतन जतन जिन पूजन, करत जिनेश्वर के पद पाय॥न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशांजन गिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

जयमाल

वसुविध जिनपद पूज के, वसुविध अंग नवाय।
सुबुधि बढ़ावन सुबुधिपति, गुण गाऊँ मन लाय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्धड़ी छन्द

जै जे जगदीश्वर तुम कृपाल, सुरभक्ति करें निज नाय भाल।
प्रभु समवसरण के मध्य जान, उपदेश करें करुणानिधान ।।
सतधर्म देशना करें देव, मुनि श्रावक धर्म दुभेद एव।
मुनिधर्म अनागारी महान, गृहवासी धर्म द्वितीय जान ।।
सब धर्म मूल सरधान जान, सम्यग्दर्शन आगम प्रमान।
ताके सब भेद कहै पुरान, सो सुनो भव्यन सुरुचिमान ।।
जीवादि सप्त तत्वार्थ जान, इनकी प्रतीति सम्यक प्रकार।
'नहिं संशयादि इनमें लगार, पच्चीस दोष कर रहित सार ।।
अरिहन्त दिगम्बर सुगुरुदेव, इनकी वानी आगम लखेव।
इनकी प्रतीति दृढ़ सतस्वरुप, सो सम्यक है व्यवहार रुप ।।
निश्चय निज आतम को विलास, सब जान प्रवतैं सुगुन खास।
अब आगे दोष पचीस जान, तिनको त्यागे समकित महान ।।
शंकादिक आठों दोष त्याग, मद आठरहित वृषपंथ लाग।
तज घट अनायतन कुपथरुप, त्रय शठता तज ह्वै शुद्धरुप ।।
या बिन संसार समुद्र पार, कबहूँ नहिं पावे भव्य सार।
जपतपव्रत याविन बिफलजान, ज्यों एक बिना बिंदी महान ।।
श्रीजिनवर ने यह प्रथम सार, उपदेश कियो जगहित विचार।
ताही क्रम कहत भये गणेश, सब परम दिगंबर गुरु अशेष ।।
यह जिनवर आज्ञा समझ वीर, समकित गुण चित में धार धीर।
यह दुर्लभ नर भव पाय वीर, करस्वहितकाज मनलाय वीर ।।
जय जय जगबांधव देव सार, जिनने जिनधर्म कियो प्रचार।
जय जय बिनकारण हितस्वरुप, जगजीवन को कल्याणरुप ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिहिमग जगजीव अनंत सार, शिवपुर पहुँचे पहुँचे अपार।
तिहिमग की महिमा अगमजान, कर सके नहीं सुरपति बखान ।।
मैं हाथ जोड़ अरु शीश नाय, नवकार करूँ मन वचन काय।
मेरे उर तिष्ठो वह स्वभाव, जो मोहि बनावे मुक्तिराव ।।
हे करुणानिधियह अरज सार, अरिहन्त जिनेश्वर सुन अवार।
अब ढील करो मत देव एव, मम कारज सब कीजो स्वमेव ।।

दोहा

श्री अरिहन्त अपार गुण, को करि सके बखान।
नाम मात्र उर धार के, पावे सब कल्यान ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पर्वू दिशांजनगिरिस्थोत्तरदधिमुखपर्वत जिनमन्दिर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

सोरठा

सुनो जगत्पति देव, शिवमग साधक साज दे।
प्रभु इतनों जस लेव, तुम दाता शिरताज हो ।।

।। इत्याशिर्वादः ।। ५ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा प्रथम रतिकरगिरि जिन मन्दिर पूजा

गीता छन्द

वर दीप नन्दीश्वर मनोहर, दिशा पूरव जानिये ।
अंजन सुगिरि महानंद वापी, वाह्य कोन प्रमानिये ।।
तिहि थान रतिकर जान पर्वत, कनक वर्ण सुहावनो ।
तापर जिनेश्वर भवन सोहे, सुरासुर मन मोहनो ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाप्रथमरतिकर पर्वतस्थ जिनमन्दिर जिन बिम्बसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम्

प्राणी श्रीजिनवर पद पूजिये, जाके पूजे पातक जाय।
प्राणी उज्वलजल शुचिसीयरो, भरि कनक कटोरी सार ।।
प्राणी श्रीजिनचरण चढ़ाइये, सब जन्म जरा निरवार।
प्राणी श्रीजिनवर पद पूजिये, जाके पूजे पातक जाय ।।
प्राणी नन्दीश्वर पूरब दिशा, रतिकर गिरि पहलो जान।
प्राणी तापर जिनगृह पूजिये, जिनबिम्ब अकृत्रिम मान ।। प्रा.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाप्रथमरतिकरगिरि जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

प्राणी केशर चन्दन गारिके, करपूर सुगन्ध मिलाय ।
प्राणी कर्मदाह निरवारने, जिनचरण जजों मन लाय ।।
प्राणी श्री.। प्राणी नन्दी. । प्राणी तापर. । प्राणी श्री.।।

ओ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशाप्रथम रतिकरगिरिजिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राणी सोम समान सुहावने, मुक्ताफल की उनहार ।
प्राणी अक्षत पुञ्ज चढ़ायके, पद पाओ अक्षय सार ।।
प्राणी श्रीजिनवर पद पूजिये, जाके पूजें पातक जाय ।
प्राणी नन्दीश्वर पूरब दिशा, रतिकर गिरि पहलो जान ।।
प्राणी तापर जिनगृह पूजिये, जिनबिम्ब अकृत्रिम मान ।
प्राणी श्रीजिनवर पद पूजिये, जाके पूजे पातक जाय ।।

ओ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशाप्रथम रतिकरगिरिजिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

प्राणी उत्तम कुसुम सुहावने, शुचि गन्ध मनोहर सार ।
प्राणी अथवा सुवरण आदि के, जिनचरण जजों अनिवार ।।
प्राणी श्री.। प्राणी नन्दी. । प्राणी तापर. । प्राणी श्री.।।

ओ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशाप्रथम रतिकरगिरिजिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

प्राणी घेवर मोदक आदि ले, नानाविध के पकवान ।
प्राणी सद्य शुद्ध कर लीजिये; पद पूजों श्री भगवान ।।
प्राणी श्री.। प्राणी नन्दी. । प्राणी तापर. । प्राणी श्री.।।

ओ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशाप्रथम रतिकरगिरिजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

प्राणी दीप मनोहर लीजिये; निर्दोष रु शक्तिसमान ।
प्राणी श्री जिनवर पद पूजिये, यातें पाओ केवलज्ञान ।।
प्राणी श्री.। प्राणी नन्दी. । प्राणी तापर. । प्राणी श्री.।।

ओ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशाप्रथम रतिकरगिरिजिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

प्राणी चन्दन अरु कर्पूर ले, दशविध धूप बनाय ।
प्राणी खेवो जिनगृह जायके, यातें कर्म बली जर जाय ।।
प्राणी श्री.। प्राणी नन्दी. । प्राणी तापर. । प्राणी श्री.।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशाप्रथमरतिकरगिरि जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राणी फल बहुविध के लेय के, ऐला अरु लोंग बदाम ।
प्राणी श्रीजिनवर पूजा करों, यातें पाऊँ शिव अभिराम ।।
प्राणी श्री. । प्राणी नन्दी. । प्राणी तापर. । प्राणी श्री. ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशाप्रथमरतिकरगिरि जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

प्राणी जल फल सव मिलायके, करि अर्घ महा अभिराम ।
प्राणी जिनवर पद पूजा करो, यातें पाऊँ अविचल धाम ।।
प्राणी श्री. । प्राणी नन्दी. । प्राणी तापर. । प्राणी श्री. ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपपूर्वदिशाप्रथमरतिकरगिरि जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल

दोहा

पूरब अंजनगिरि तनो, रतिकर प्रथम विशाल ।
अकृत्रिम जिनगृह तहाँ, ताकी सुन जयमाल ।।

पद्धड़ी छन्द

जय नन्दीश्वर दिश पूर्व जान, जय अंजनगिरि पर्वत महान ।
जय ताकी पूरब दिश अनूप, जय नन्दावापी जलस्वरुप ।।
जय ताके बाहर कौन मद्ध, जय रतिकर पर्वत स्वयं सिद्ध ।
ऊँचो योजन इक सहस जान, जय तापर जिनगृह शोभमान ।।
लम्बाई शत योजन प्रमान, योजन पचास चौड़ाई जान ।
पचहत्तर योजन उच्च जास, सब समवसरण शोभा प्रकाश ।।
शत आठ रत्नमय जिनसरुप, पद्मासन राजत हैं अनूप ।
बत्तीस जुगल सुर चमर हाथ, दोनों पखवाड़े खड़े साथ ।।
सिरछत्र तीन अति जगमगांय, जिनकी महिमा बरनी न जाय ।
वसु मंगल द्रव्य धरे अनूप, अरु प्रातिहार्य उत्तम स्वरुप ।।
जिनबिम्ब विराजे अन्तरीक्ष, वैराग्यभाव बाढ़ै सुवीक्ष ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनकीमहिमा कछुकहि न जाय, मनु अभी हँसै बौलैं सुभाय ।।
जय लाल वरण नखमुख महान, जयनयनश्यामसितअरुणजान।
जय मोह और शिरकेश स्याम, बाकी शरीर सब स्वर्ण धाम ।।
जय जय जिन देखत बढ़त मोह, भविजीव लहें समकित प्रमोद।
जय वर्ष वर्ष में तीन बार, कार्तिक फागुन आषाढ़ सार ।।
जय अंत आठ दिन हर्ष धार, सब देव करें पूजन अपार ।
बहु गीत नृत्य बाजे बजाय, दिनरात जिनेश्वर भक्ति भाय ।।
हम शक्तिहीन पहुँचो न जाय, यातें अपने उर भक्ति लाय ।
जिनराज आपका धरें ध्यान, तुमकों पूजें आगम प्रमान ।।
तुम चरणकमल कल्याणरुप, मम हृदयविराजो हितस्वरुप ।
हम शरणागत आये कृपाल, जगबांधव कीजे कृपा हाल ।।
जिन दर्शन चारित ज्ञान रिद्धि,दीजे प्रभु जी जग में प्रसिद्धि ।
संसार खार से करो पार, यह सुनो जिनेश्वर अर्ज सार ।।

दोहा

पहलो रतिकर जिनभवन, पूरण यह जयमाल ।
मन वच काय लगायकें, भव्य नवावत भाल ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाप्रथमरतिकरगिरि जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

सुखदाता जिनराज, जग में सुख साता करो ।
यह अरजी सिरताज, आश जिनेश्वर की भरो ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। ६ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशा द्वितीय रतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

कवित्त छन्द

नन्दीश्वर पूरब अंजनगिरि, ताकी पूरब दिश सुखकार ।
नन्दा वापी बाह्य कोण में, रतिकर पर्वत दूजो सार ।।
सुवरण वर्ण गोल तल ऊपर, ऊँचो योजन एक हजार ।
तापर जिनगृह जिनवर प्रतिमा, तिनपद पूजों नमि त्रय वार ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशा द्वितीय रतिकरगिरि जिन मन्दिर जिन बिम्बसमूह ! अत्रावतरावतर सम्बौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम (अडिल्ल छंद)

उत्तम जल शुचि शीतल भृंङ्ग भराय के,
भक्तिभाव उर धार सुजिनगृह जायके ।
जन्म मरण निरवारण कारण देव के,
पूजों भविजन चरण दिगम्बर देव के ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाद्वितीय रतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः जलम्।

चन्दन सरस सुगन्ध कपूर मिलाइये,
सुवरण रतन कटोरी में धरि लाइये ।
भवाताप निरवारन कारण पूजिये,
श्री जिनवर के चरण सुधी नित हूजिये ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाद्वितीय रतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

वासमती सुखदास कमोद अनूप है,
चन्द्रकिरणसम तन्दुल स्वच्छ स्वरुप है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अक्षयपद के काज भक्ति उर लायके,
जजों जिनेश्वर चरण जिनालय जायके ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाद्वितीय रतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

वरन वरन के सुमन सुगन्ध सुहावने,
शुद्ध अनूपम शक्तिसमान बनावने ।
कामदाह के दाहक जिनपद पूजिये,
कामदाह नहिं व्यापै निर्भय हूजिये ।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाद्वितीय रतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

व्यंजन बहुत प्रकार अनूप बनाइये,
षट् रसमय सुखकार जिनालय जाइये ।
क्षुधाहरण के काज भक्ति उर लायके,
जजों क्षुधाहर देव चरण चित लायके ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाद्वितीय रतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

दीप रतनमय सार तथा शचि घृत मई;
तथा थापना रुप और बहुविध सही ।
कनक रकेवी लाय प्रभू ढिग पूजिये,
मोहाज्ञाननिवारक जिनपति हूजिये ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाद्वितीय रतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः दीपम् ।

दशविध धूप बनाय सुगन्ध अपार है,
खेबों जिनपद अग्र भक्ति उर धार है ।
धूप धूम मिस दुष्टकर्म जरि जात है,
यही भाव उर धार पूज भवि करत हैं ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाद्वितीय रतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः धूपम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एला लोंग बदाम छुहारे सार हैं,
और विविध के शुचि फल सुवरण थार हैं।
भक्तिभाव उर लाय जिनालय में सजो,
मुक्ति महाफल काज जिनेश्वर पद जजों।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाद्वितीय रतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्य: फलम्।

वसुविध के शुचि द्रव्य मिलावो सर्व ही,
पूजों जिनवर चरण कमलद्वय सर्व ही।
नन्दीश्वर जिनधाम हृदय में लायके,
पूजों श्री जिनचरण सु अर्घ चढ़ायके।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाद्वितीय रतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्य: पूर्णार्घ्यम्।

जयमाल

घत्ता

जै जै स्वामी, त्रिभुवन नामी, शिव सुखदामी धर्मपती।
मैं तुम पद ध्याऊसुगुणमनाऊं, अचल ऋद्धि द्यो कृपापती।

पद्धड़ी छन्द

जय तीर्थंकर त्रिभुवन दयाल, शत इन्द्र जजें नित नाय भाल।
तुम चरणकमल की द्युतिप्रभाव, सुरमुकुट प्रभा दुगुनी लखाय।।
जै जै मुखचन्द्र प्रभा अनूप, जै जै जिनवचन सुधा स्वरुप।
भविजीवन को दुख जनम रोग, जै श्रवण करत सब जाय शोग।।
गति चार चुरासी लाख जोन, बहुवार भ्रमों जिन दुःख भौन।
यह दुर्लभ नर पर्याय पाय, मत वृथा गमाओं सुकुल आय।।
नित इतर निगोद सुभेद जान, भू तेज वायु पानी प्रमान।
सब सात सात लख योनि भेद, दश लाख वनस्पति योनि भेद।।
विकलेन्द्रिय दो दो लाख जोन, पंचेन्द्रिय पशु चौलाख भोन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरनारक चौ चौ लाख सार, नरयोनि चतुर्दश लाख धार ।।
इहि लाख चौरासी योनि भेद, इनमांहि भ्रमत बहु लहत खेद ।
हे दीनबन्धु जगपति दयाल, तुम इनसे न्यारे हो कृपाल ।।
संसारभ्रमण से दूर होन, जो क्रियाकरी तुम सुखदभौन ।
सो सर्व प्रकाशी है जिनेश, यह जगउपकार कियो जिनेश ।।
जिहि प्रभाव रिषि मुनि महन्त, निज रिद्धि लहे जग पुण्यवंत ।
अजहूँ वह धर्म करे प्रकाश, भवि शिव पथ पावे जिहि उजास ।।
सो पुण्यमूर्ति अरिहन्त देव, जिनकी नित करत सुरेश सेब ।
हम शीश नाय निज वार वार, तुम गुण मनमें निज धार धार ।।
यह अरज करत बहुविध पुकार, संसार खार तें करो पार ।
तुमही जग में वरदाय देव, यह जान जिनेश्वर करत सेव ।।

घत्ता

जय जय जगनायक, शिवसुखदायक, अघनाशक, त्रैलोक्यपती।
तुमही सब लायक, हो वरदायक, दो गुणक्षायक, शर्म अती ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाद्वितीय रतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

तारण तरण जिहाज , इस असार संसार में ।
दीन बन्धु महाराज, मम उर वास करो सदा ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। ७ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नंदीश्वरद्वीप पूर्व दिशा तृतीय रतिकर गिरि जिन मंदिर पूजा

कुसुमलता छन्द

नन्दीश्वर पूरब अंजनगिरि, ताकी दक्षिणदिशा अनूप ।
वापी बाहर कोन बीच में, तीजो रतिकर स्वर्ण सरुप ।।
एक सहस योजन को ऊँचो, ढोल समान गोल समरुप ।
तापर जिनगृह प्रतिमा बंदों, जो सुखदायक शान्ति स्वरुप ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशा तृतीय रतिकर गिरि जिनमंदिर जिनबिम्बसमूह ! अत्रावतरावतर सम्बौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम् (चाल नन्दीश्वर पूजा की)

गंगा सम निर्मल नीर, प्रासुक शुद्ध महा ।
भरि सुवरण भृंङ्ग गहीर, चित में हर्ष लहा ।।
नन्दीश्वर पूरब कोन, अंजन गिरि सोहे ।
दक्षिण रतिकर जिन भौन, पूजत मन मोहे ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशातृतीय रतिकरगिरि पूर्व जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

केशर करपूर मिलाय, चन्दन गन्ध महा ।
पूजों जिनवर पद जाय, शान्त स्वभाव महा ।।न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशातृतीय रतिकरगिरि पूर्व जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

तन्दुल सित चन्द्र समान, सरस सुगन्ध भरे ।
कर पूज जिनेश्वर थान, सब अघ पुंज हरे ।।न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशातृतीय रतिकरगिरि पूर्व जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

वर सुमन सुमन सुखदाय, धार दृगन प्यारे ।
निजवर पद पूज रचाय, काम विथा टारे ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नन्दीश्वर पूरब कोन, अंजन गिरि सोहे ।
दक्षिण रतिकर जिन भौन, पूजत मन मोहे ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशातृतीय रतिकरगिरि पूर्व जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

चरु सरस अनेक प्रकार, उत्तम बनवावो ।
जिनवर पद भक्ति सुधार, पूजत सुख पावो ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशातृतीय रतिकरगिरि पूर्व जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

अति उज्वल दीप बनाय, जिन पद पूजत हैं ।
सो भविजन केवल पाय, शिवपति हूजत हैं ।।न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशातृतीय रतिकरगिरि पूर्व जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

कृष्णागरु मलय कपूर, धूप सुगन्ध करो ।
विधि दहन गहन गुण पूर, जिनपद अग्र धरो ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशातृतीय रतिकरगिरि पूर्व जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

फल उत्तम बहुत प्रकार, सरस सुगन्ध भरे ।
भवि पूजत जिन पद सार, वसु विधि नाश करे ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशातृतीय रतिकरगिरि पूर्व जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल फल वसु द्रव्य मिलाय, जिन गुण गावत हैं ।
भवि पूजत श्रीजिन पाय, सो शिव पावत है । न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशातृतीय रतिकरगिरि पूर्व जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल

रतिकर गिरि जिनभवन की, पूजा कर सुविशाल ।
अब जयमाला वरणऊँ, भक्ति सहित नमि भाल ।।

पद्धड़ी छन्द

जै जै जिनराज महान देव, त्रयलोक सुरासुर करत सेव ।
जै समवसरण के मध्य सार, चतुरानन राजे निराधार ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वसु प्रातिहार्य मंगल सुदर्व, इत्यादि अतुल महिमा जु सर्व ।
लोकोत्तर लक्ष्मी देख शेष, सब विस्मयवंत भये सुरेश ।।
धुनि दिव्य अनक्षर घनसमान, अति श्रवणसुखद गरजैमहान ।
नहिं ओठ तालवो लगै सोय, नहिं जीभ कंठतल हले सोय ।।
वह अतिशयवन्त अवाज सार, भवि श्रवण मांहि अक्षराकार ।
जै सुरनर पशु जो जिन हजूर, होवे तिनके सन्देह दूर ।।
गति जाति आदि बहु भेद सार, दरशाये प्रभु ने बहु प्रकार ।
तहां जातिभेद जिनराज भूप, इक वे ते चौ पण अक्षरुप ।।
संसारी जिय का जोहि चिह्न, सो इन्द्री जानो अविच्छिन्न ।
अहमिन्द्रदेव स्वाधीन जेम, निज विषय अक्षस्वाधीन तेम ।।
सो द्रव्यभाव कर दोय भेद, इनके भी दो दो भेद वेद ।
भावेन्द्रिय आतम अंश जान, द्रव्येन्द्रिय तसु उपकरणमान ।।
भावेन्द्रिय ज्ञान स्वभाव सार, द्रव्येन्द्रिय जड़ पुद्गल प्रचार ।
भावेन्द्रिय लब्ध्युपयोग रुप, दूजी निर्वृति उपकार रुप ।।
विधि के क्षयोपशमज्ञान अब्धि, सो जानो भावेन्द्रिय सुलब्धि ।
जानत प्रवृत्ति जो तदनुसार, सो भावेन्द्रिय उपयोग धार ।।
कार्माणवर्गणा जीव संग, निर्वृति भेद जानो अभंग ।
सित श्याम अरुण इत्यादि रंग, दृगपलक आदि सब तन उपंग ।।
ये सब उपकरण प्रभेद जान, जिनवर ने कीने श्रुत बयान ।
वह धन्य देव उपदेशदाय, हमको भव भव हूजे सहाय ।।
तुम वचजग मांहि करो प्रकास, यातें भवि पाये मुक्ति वास ।
बिनकारण जगहित करनखास, द्योसिद्धि जिनेश्वर यही आस ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा

जिनवर चरणसरोज रज, रहे सदा मम शीश ।
अरज जिनेश्वर की यही, पूरण कर जगदीश ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशातृतीय रतिकरगिरि पूर्व जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

रतिकर जिनगृह सार, पूजा सुखदायक सदा ।
रे नर मन वच धार, कर पूजा जिनराज की ।।

।। इत्याशिर्वाद ।। ८ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशा चतुर्थ रतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

कवित्त

नन्दीश्वर पूरब अंजनगिरि, ताकी दक्षिण दिश में जान।
नन्दोत्तरा वापिका बाहर, कोन मध्य रतिकरगिरि मान।।
एह सहस योजन उन्नत अरु, कंचन वर्ण गोल पहिचान।
तापर जिनमंदिर जिनप्रतिमा, तिनपद पूजों उर धर ध्यान।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिन मन्दिर जिन बिम्बसमूह! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम

चाल छन्द

जल उज्वल चन्द्र समाना, शुचि कंचन भृंङ्ग भराना।
जिनवर के चरण चढ़ावौ, तसु जन्म मरण दुख जावै।।
नन्दीश्वर पूरव जानों, अंजनगिरि दक्षिण मानों।
रतिकर पर जिनगृह सोहे, सुर असुर जजें मन मोहें।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाचतुर्थरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

शुचि चन्दन केशर लावे, जिनवर पद अग्र चढ़ावे।
भवताप सभी नश जावे, कछु जन्म लेय शिव जावे।।न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाचतुर्थरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

सित स्वच्छ सरल शुचि सारे, अक्षत के पुञ्ज प्रचारे।
श्रीजिनपद अग्र सुकीजे, अक्षयपद सम्पति लीजे।। न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाचतुर्थरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुविध सुवर्ण सुखकारी, दशदिश सुगन्ध विस्तारी ।
शुचि पुष्प जिनेश्वर आगे, धरि भेंट मोह अरि भागे ।।
नन्दीश्वर पूरव जानों, अंजनगिरि दक्षिण मानों ।
रतिकर पर जिनगृह सोहे, सुर असुर जजें मन मोहें ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाचतुर्थरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

चरु विविध प्रकार बनावे, शुचि श्रीजिन मन्दिर लावे ।
श्रीजिनपद अग्र चढ़ावे, सब पापकर्म नश जावे ।। न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाचतुर्थरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

दीपक निज शक्ति समाना, अविरुद्ध प्रमाणिक लाना ।
श्री जिनवर चरण चढ़ावो, क्रम क्रम केवलपद पावो ।। न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाचतुर्थरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

दश गन्ध हुताशन माहीं, खेवो बहु भक्ति बढ़ाहीं ।
तसु किंचित भव के माहीं, वसुकर्म सभी जर जाहीं ।। न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाचतुर्थरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

फल सरस सुगन्ध अपारा, शुचि शोभित कंचन थारा ।
जिनवर की भेंट करीजे, क्रम-क्रम शिवनारि वरीजे ।।न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाचतुर्थरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल फल वसु द्रव्य मिलाई, शुभ लीनों अर्घ बनाई ।
श्री जिनपद पूज रचायो, निजजन्म सफल करपायो ।। न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाचतुर्थरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल

दोहा

नन्दीश्वर पूरब दिशा, रतिकर चौथो जान ।
पूजन कर जिनभवन की, विनय करो हितमान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्धड़ी छन्द

जै जै जिनराज दयानिधान, गुण सागर आगर धर्मखान ।
तुम चरणकमल को शची ईश, नित नमन करत निज नायशीश ।
जै दयाधर्म को सदुपदेश, जै जै तुमही दीनों विशेष ।
सतदया जगत में सुखस्वरुप, यह सब मत में जाहिर अनूप ।।
तुम भेद दोय भाषे जिनेश, इक स्वपरदया दूजी अशेष ।
निज आतम की रक्षा करन्त, अधमूल महा मिथ्या हरन्त ।।
करिशक्ति समान कषाय छीन, परमेष्ठि भक्ति में सदा लीन ।
निज शक्तिमान व्रत करे भाव, जानों यह स्वदया हितउपाव ।।
परदया सकल परजीव राश, तापर करुणा मनवच प्रकाश ।
षट्काय जीव आगम प्रमान, प्रत्यक्ष केवली लखे जान ।।
भू तेज नीर तरु पवन रुप, ये पंच कहे थावर स्वरुप ।
त्रस काय एक तसु चार भेव, बितिचउं पंचेन्द्रिय कहे देव ।।
इमि छहूँ काय रक्षक महान, सो परम दिगम्बर सुगुरु जान ।
नित इतर निगोद दुभेद जान, तरुवर जिन थावर चार मान ।।
ये छह सूक्षम बादर स्वरुप, इमि बादर भेद भये अनूप ।
दो भेद वनस्पति के मिलाय, विकलत्रयमिल सत्रह गिनाय ।।
मनरहित सहित दो भेज जान, पंचेन्द्रिय और करो मिलान ।
इमि उगनिसजीवसमास सोय, इनकी रक्षा परदया होय ।।
यह दयाभेद गर्भि अनूप, सब जीव भेद गुरु कहो रुप ।
गोमट्टसार आगम प्रमान, तामें देखो हे बुद्धिमान ।।
इत्यादि दयावर्णन कहन्त, जो धारे सो निजगुणमहन्त ।
हे देव दयानिधि कर्म जीत, तुम प्रगट करी निज धर्मनीत ।।
तुम सब दरशी गतदोष प्रीति, मम हृदय होहु तुमवच प्रतीति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भव भव तुमही हूजो सहाय, भव भव ममचित्त वसो सुआय ।।
भव भव सतसंगति सुगुण दाय, भव भव में मिलियो सुगुरुपाय।
इक घड़ीमात्र मम है जिनेश, तब दर्शन बिन जावे न शेष ।।
संसार खार से पार होन, जगमें नहिं कोई और भोन ।
इस कारण अरज करुँ जिनेश, कर कृपा जिनेश्वर पै अशेष ।।

दोहा

दीनबन्धु महाराज तुम, सदा सुधारो काज ।
यह अरजी चित धारियो, करो कृपा सिरताज ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाचतुर्थरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

सोरठा

अशरणशरण सहाय, इस असार संसार में ।
तुम देखे जिनराय, यातें मम अरजी सुनो ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। १।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशा पंचम रतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

कुसुमलता छन्द

नन्दीश्वर पूरव अंजनगिरि, ताकी पश्चिम दिशा विशाल।
सजल वापिका बाह्य कोन में, जिनगृह रतिकरगिरि के भाल।।
कंचनमय पर्वत छवि छाजे, जिनगृह शिखर सुरंग प्रबाल।
पूजन करत मिटत भव फेरी, मैं पूजों त्रय योग सँम्हाल।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशापंचमरतिकर गिरि जिन मन्दिर जिन बिम्बसमूह ! अत्रावतरावतर सम्बौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम् (चाल पंचमेरु पूजा)

शीतल नीर सुगन्ध अपार, कंचन मणिमय भरि भृंगार।
दया निधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ।।
जन्मादिक दुखहरण अनूप, पूजों जिनवर तिहुँ जग भूप।
दया निधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ।।
नन्दीश्वर पूरब दिश जान, पंचम रतिकर जिनगृह मान।
दया निधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ।।
सकल सुरासुर पूजन आंय, हम जिनगृह पूजत हर्षाय।
दया निधि हो, जय ज़गबन्धु दयानिधि होय ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशापंचमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

वावन चन्दन पावन लाय, ता सुगन्ध तैं दिश महकाय।
मलयागिरि कर्पूर मिलाय, केशर संग घसों मनलाय।। द.
नन्दी.। पंचम.। दया.। सकल.। हम.। दया.।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशापंचमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्द्र कुंद सम श्वेत अनूप, तन्दुल सरल सुगन्ध सरुप ।
अक्षयपद पावन के काज, श्री जिन चरण चढ़ाऊँ आज ।।
नन्दीश्वर पूरब दिश जान, पंचम रतिकर जिनगृह मान ।
दया निधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ।।
सकल सुरासुर पूजन आंय, हम जिनगृह पूजत हर्षाय ।
दया निधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि होय ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशापंचमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

वरन वरन के कुसुम अनूप, रतन हेम निजशक्ति सरुप ।
समरशूल निरवारन काज, पूजों समरजयी महाराज ।। द.
नन्दी. । पंचम. । दया. । सकल. । हम. । दया. ।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशापंचमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

षट्रस व्यजन विविध प्रकार, मन इन्द्रिय को सुख दातार ।
क्षुधाहरण जिनचरण महान, पूजत पावें निधि शत ज्ञान ।। द.
नन्दी. । पंचम. । दया. । सकल. । हम. । दया. ।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशापंचमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

दीप अनूप यथाविध लेय, भक्तिभाव उर हर्ष धरेय ।
केवलज्ञानपती महाराज, पूजों निधिप्रापति के काज ।।द.
नन्दी. । पंचम. । दया. । सकल. । हम. । दया. ।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशापंचमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

अगर तगर करपूर मिलाय, दशविध धूप सुगन्ध बनाय ।
कर्म रहित जिनवर के पाय, पूजत सब विध सौख्य लहाय ।। द.
नन्दी. । पंचम. । दया. । सकल. । हम. । दया. ।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशापंचमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वसुविध उत्तम फल मँगवाय, कंचन थाल भरों सुखदाय।
मुक्ति महाफल पावनकाज, पूजों मुक्तिपती महाराज ।।
नन्दीश्वर पूरब दिश जान, पंचम रतिकर जिनगृह मान।
दया निधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो ।।
सकल सुरासुर पूजन आंय, हम जिनगृह पूजत हर्षाय।
दया निधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि होय ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशापंचमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः फलम्।

जल फल आठों द्रव्य मिलाय, गीत नृत्य वादित्र बजाय।
जिनवर चरण जजों हरषाय, सत्य जिनेश्वरपद सुखदाय ।।
नन्दीश्वर पूरब दिश जान, पंचम रतिकर निजगृह मान।
सकल सुरासुर पूजन जांय, हमजिनगृह पूजत हरषाय ।।द.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशापंचमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

जयमाल

दोहा

मन वच काय त्रियोग करि, पूजि जिनेश्वर देव।
निज हितकारण सुगुण में, कहत सहाय करेव ।।

पद्धड़ी छन्द

जै जै जगवान्धव देव सार, जै परमज्ञानधारी अपार।
जै दर्शनज्ञान अनन्त धार, अरु सुख अनंत बलनंत सार ।।
जै छियालिस गुण संयुक्तदेव, जन्मत दश अरु दश ज्ञान लेव।
सुरकृत चौदह अतिशय महान, वसु प्रातिहार्य अति शोभमान ।।
अरु नंत चतुष्टय निज प्रकाश, कीनों भवि का भ्रम मोहनाश।
जगमांहि कर्म सों बँधो जीव, मन वचन काय ये बंधनीव ।।
इन योगन में मिथ्या कषाय, मिलि कर्मबंध कों दें बढ़ाय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुद्गल विपाक तन उदय सोयं, मन वचन काय संयुक्त होय ।।
कर्मागम कारण शक्ति धार, आत्मोपयोग है योग सार ।
तिहि भेद कहे पन्द्रह जिनेश, मन वचन काय त्रय मूलदेश ।।
सतअसत उभय अनुभयसुजान, इमि चार चार मनवचन जान ।
पुनि काययोग के सात भेद, जगजीवन को बहु देत खेद ।।
औदारिक अरु तसु मिश्र जान, वैक्रियिकमिश्रवैक्रियिकमान ।
आहार - मिश्र आहाररुप, कार्माण सातमों सर्व भूप ।।
ये यथायोग्य सब जीव संग, चेतन को करते बहु तंग ।
कबहूँ नर नारक पशु मँझार, कबहूँ निगोद में देंय डार ।।
कबहूँ सुरगति में सुख दिखाय, तहां से एकेन्द्रिय पशु बनाय ।
भवविधिभटक्यो भव भव मँझार, ताके दुख को नहिं लहे पार ।।
हे दीनबन्धु करुणानिधान, बल वीर्य पराक्रम अप्रमान ।
तुमने सब योग निरोध कीन, शिवसम्पति कीनी निज अधीन ।।
मैं निजस्वरुपलखि मुदितगात, अतिहर्ष बढ़ो उर नहिं समात ।
आनन्द अश्रु मिस नेत्र द्वार, बाहर बरसे मनु सुधाधार ।।
अथवा जल के मिस हृदयताप, सब दूर भयो बहु जन्म पाप ।
अथवा जिनमूर्ती उन मँझार, है विद्यमान तसु चिह्न सार ।।
अथवा जिन देखा पुण्य नीर, उर बढ़ो विशेष तर ङ्ग तीर ।
सो सर्व पूज्य अरिहन्त देव, गणधर मुनीश तसु करत सेव ।।
जै जै जबलों मम जगतवास, जबलों विधि दुश्मन देत त्रास ।
तबलों सहाय प्रभु करो वास, जगदीश जिनेश्वर भरो आस ।।

दोहा

जोग धारि के जोग सब, टारे दुख दातार ।
सो अरिहन्त महन्त मम, सब विधि कारज सार ।।

सोरठा

दीन बन्धु महाराज, हरो हमारी वेदना ।
वसुविध कृत जिनराज, सुबुधि शक्ति मम दीजिये ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। १०।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशाषष्ठ रतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

कुसुमलता छंद

नन्दीश्वर वर द्वीप आठमों, ताकी पूरब दिश मे जान।
अंजनगिरि पर्वत के पश्चिम, सजल वापिका लसे महान॥
ताके बाहर कोने षष्ठम, रतिकरगिरि है हेमसमान।
ताके ऊपर श्रीजिन मन्दिर, वसुविध तिन्हें जंजों धरिध्यान॥

ओं ह्रीं श्रींनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाषष्ठरतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अष्टकम् (गीतिका छन्द)

मन्दाकिनी को नीर उज्वल, उठत तेज तरङ्ग है।
शुभ जलज गन्ध अनन्दकारी, तास मांहि अभङ्ग है॥
सो नीर कंचन भृङ्ग भरिके, श्री जिनालय जाइये।
अरिहन्त पद को ध्यान धरिके, विनय सहित चढ़ाइये॥

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशाषष्ठरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

अति मधुर भ्रमर अबाज गुंजै, सर्व दिश तैं आयके।
घनसार अरु गोसीरमलया-गिर सुचन्दन लायके॥
भरि रत्नझारी हर्ष भारी, श्री जिनालय जाइये॥ अरि.॥

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशाषष्ठरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

हिमकर किरण हिम हारकारी, कामकुन्द अनन्द है।
जनु फटिकमणि मुक्ता विराजे, मनों दामिन खण्ड है॥
ऐसे अखण्डित शालि अक्षत, लाय जिनगृह जाइये॥ अरि.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशाषष्ठरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जसु गंधलुब्ध अनेक षट् पद, दूर दिशतें आयकें ।
कलरब करत मृदु गुञ्ज भारी, बहु प्रमोद बढ़ायकें।।
ऐसे कुसुमवर शुद्ध गंधित, लेय जिनगृह जाइये ।।अरि.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशाषष्ठरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

शुचि सुरभिघृत पकवान सुन्दर, मिष्ट रसपूरित महा ।
दृग मन प्रफुल्लित करन हारे, सूपकृत षट्रस महा ।।
सो चरु अनूपम थाल भरिके, श्री जिनालय जाइये ।। अरि.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशाषष्ठरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

बिन धूमबतिं सनेह दीपक, जोति जगमग होत है ।
अथवा अनेक प्रकार दीपक, शुद्ध स्वच्छ उद्योत है ।।
सुवरण रकाबी धार करके, श्रीजिनालय जाइये ।।अरि.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशाषष्ठरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

निर्दोष परिमल सुरुचिकारी, गंध द्रव्य महान है ।
सो सर्व कर एकत्र चूरण, धूप नाम प्रधान है ।।
वह लेय अति उमगाय मनमें, श्री जिनालय जाइये । अरि.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशाषष्ठरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

जिहि गंध नासारन्ध जाकर, लुब्ध रसना को करे ।
दृग लखेमन बिन चखै उपमा, तृप्ति करतें अति करे ।।
सो शुद्ध फल बहु लाय ताजे, श्री जिनालय लाइये ।।अरि.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशाषष्ठरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल गंध अक्षत कुसुम चरु वर, दीप धूप महान है ।
फल ललित मिश्रित अर्घ कीजे, शक्ति के अनुमान है ।।
अतिहर्ष सहित बजाय बाजे, श्री जिनालय जाइये ।
अरिहन्त पद को ध्यान करिके, विनय सहित चढ़ाइये ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशाषष्ठरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

नाम स्थापन द्रव्य अरु, भाव रुप भगवान ।
हितदायक हूजो सदा, करो सकल कल्यान ।।

पद्धड़ि छन्द

जै जै सब दरशी प्रभु दयाल, जै जै जग में प्रभु तुम कृपाल ।
कर कृपा दियो उपदेश सार, यातें भवदधि भवि लहे पार ।।
प्रभु सदुपदेश है सुधाधार, भविचातक तृप्त भये अपार ।
कोई कुजीव तरु अर्क मान, नहिं रुचे सोइ हतभाग जान ।।
ज्यों सूरज ज्योति प्रकाश होय, सुख सर्व मेदिनी लहे सोय ।
इक चमगादड अरु पशु उलूक, दुख पावत रविकी नांहि चूक ।।
जै जै जिनराज महान देव, सब वस्तु प्रगट करि कहे भेव ।
निक्षेप चार करि ज्ञान होय, इन बिन नहिं जाने वस्तु कोय ।।
जे नाम थापना द्रव्य भाव, निक्षेप चार आगम लखाव ।
सन्मात्र वस्तु को नाम सोय, निज इच्छासे किहु धरो होय ।।
सो प्रथम नाम निक्षेप जान, याको विशेष आगम प्रमान ।
जो और वस्तु को और मांहि, थांपे सुथापना भेदमांहि ।।
ताके दो भेद कहे पुरान, अतदाकृति आकृतिवान मान ।
बहिरंग वस्तु सम जो सरुप, सो तदाकार जानो अनूप ।।
जो बाहिर आकृति मिले नांहि, जड़ चेतन को कछु भेद नांहि ।
सो अतदाकार कह्यो स्वरुप, यो वरणों श्री जिनराज भूप ।।
यो वरणों श्री गोमट्टसार, तत्त्वार्थराज वार्तिक मँझार ।
सब श्री गुरु ने कीनों बयान, भविजन भ्रम भंजन अतुलभान ।।
अरिहन्त बिम्ब लग पूजनीक, निक्षेप यही उर आन ठीक ।
जिनवचन थापना शास्त्र जान, जिनही से पावे भवि कल्यान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनपूजन में कल्याण काल, अरु पुण्यक्षेत्रबहुविध विशाल ।
तिनकों पूजों थापना रुप, यह आज्ञा श्री जिनराज भूप ।।
जो मण्डल मांडे रंगदार, वह जान थापना को प्रचार ।
अथवा वसु द्रव्य मँझार सोय, कुसुमादिक का थापन जुहोय ।।
यह सब श्रीजिन आज्ञा प्रमान, हे भव्य अन्यथा नहीं मान ।
भ्रम होय यदी तो शास्त्र देख, यातें उर ज्ञान बढ़ै विशेख ।।
सो होनहार जिस रुप होय, ताको तिस रुप कहे जु कोय ।
सो जान द्रव्य निक्षेप सार, ज्यों नृपसुतको नृप कहै सार ।।
जिस रुप जा समय वही नाम, सो कहो भावनिक्षेप नाम ।
ज्यों गमन समय में गऊ नाम, बैठे में रखता गउ न नाम ।।
इत्यादि बहुत विध वस्तु भाव, दरशायो प्रभुजी सुख उपाव ।
सो देव जगत्पति सदा काल, उर वस्यो जिनेश्वर के विशाल ।।

दोहा

जयवन्तो जग में रहो, जिनवर गिरा महान ।
या प्रसाद कलिकाल में, पावे धर्म प्रमान ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशाषष्ठरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सुन विनती भगवान, ज्ञान दान मम दीजिये ।
यही सर्व कल्याण, करो कृपा मुझ दीन पै ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। ११ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशा सप्तम रतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

कुसुमलता छन्द

नन्दीश्वर पूरब अंजन गिरि, ताकी उत्तर दिश में सार ।
नन्दोत्तरा वापिका गहरी, एक हजार योजन जल धार ।।
पृथिवीकाय जलजकर शोभित, फैली गंध बड़े विस्तार ।
ताके बाह्य कोन रतिकरगिरि, तापर पूजों जिनगृह सार ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपपूर्व दिशासप्तमरतिकर गिरि जिन मन्दिर जिनबिम्बसमूह ! अत्रावतरावतर सम्वौषट् इत्याह्वानम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधापनम् ।

अथाष्टकम् (गीतिका छन्द)

भव भ्रमत काल अनादि खोयो, शरण ढूंड़त मैं फिरो ।
कोई न पायो निज सहायक, मोहवश भ्रमतम घिरो ।।
परमोपकारी सुगुरु मुख से, प्रभु सुजस सुन पाइये ।
जल ल्याय तुम पद तर चढ़ाये, जन्म मरण गमाइये ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरपूर्व दिशासप्तमरतिकरगिरि जिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

भवताप दाह्यो चिर गमायो, मोह ज्वर तेजी चढ़ी ।
निज बल गमायो दुख लहायो, अतितृषा तृष्णा बढ़ी ।।
प्रभु राजवैद्य महान सुनके, चरण शरणों आइयो ।
शुचि गंध चंदन लाय केशर, पूज शीश नवाइयो ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरपूर्व दिशासप्तमरतिकरगिरि जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम् ।

जगवस्तु जो कहु श्रवणगोचर, तथा दृष्टि प्रत्यक्ष है ।
पर्यायरुप विनाश सब को, लखे दृष्टि प्रत्यक्ष है ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस हेतु सुर नर सर्व पदवी, उर विनाशक धारने ।
तुम चरण अक्षत सों जजों, मैं अखय पद के कारने ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरपूर्व दिशासप्तमरतिकरगिरि जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

नर नारि षंढ स्वभाव वेदी, सर्व ही दुख में फँसे ।
सत ज्ञान बिन निज पर न सूझे, कर्मबन्धन में फँसे ।।
विधि बंधफंद निकंद कारण, तुम्हें सुन करि आइयो ।
वर पुष्प ले मैं करुं पूजा, आप पास बसाइयो ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरपूर्व दिशासप्तमरतिकरगिरि जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

चहुँ ओर जाको जोर छायो, सुर असुर सब थरहरे ।
बहु ज्ञानधारी अतुल बल, अहमिन्द्र भी शंका करे ।।
तिहि क्षुधा पीड़ित चतुर्गति में, बहुत वार दुखी भयो ।
जिनराज पद तर चरु चढ़ावत, शान्ति सुख सहजें लयो ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरपूर्व दिशासप्तमरतिकरगिरि जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

जिस मोहतम में जगत घूमे, स्वहित मग नहिं पाइयो ।
बिन ज्ञान अंध समान बहुविध, कुपथ पथ में धाइयो ।।
प्रभु सर्वज्ञायक ज्ञान दाता, जान दीपक लाइयो ।
पद पूज श्रीअरिहन्त प्रभु के, मोह अरि बिनसाइयो ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरपूर्व दिशासप्तमरतिकरगिरि जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

वज्राग्नि वडवानल भयानक, तथा चपला चण्ड है ।
नारक तनी विषमाग्नि अथवा, और अग्नि अखण्ड है ।।
विधि अंश भी नहिं जर सके, सो कर्म तुम सब दाहियो ।
यह जान निज अरि दहन कारण, धूप आन चढ़ाइये ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरपूर्व दिशासप्तमरतिकरगिरि जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नर राय चक्री यक्षनायक, उरगपति धरणीश जी ।
शशि सूर्य कल्प सुरेश कोई, देश के नहिं शेष जी ।।
सो फल अनूपम आप पायो, आप ही दाता बड़े ।
तिहि फल प्रापति हेतु फल से, पूजि पद आगे खड़े ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरपूर्व दिशासप्तमरतिकरगिरि जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु वर, दीप धूप सुहावना ।
फल सहित आठों द्रव्य मिश्रित,अर्घ कीजे पावना ।।
बहु हाव भाव प्रभावना कर, चरण जिनवर के जजों ।
संसार सन्तति छेद के, शिवमहल के सामा सजों ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरपूर्व दिशासप्तमरतिकरगिरि जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल

दोहा

हे जिनवर कल्याण कर, तुम कल्याण स्वरुप ।
मम भवभ्रामर मेटिके, द्यो कल्याण अनूप ।।

पद्धड़ि छन्द

जय श्रीपति गुण सागर महान, जय महिमा को कहि सके आन ।
जय शुद्ध स्वरुपी शुद्ध भाव, जय शुद्ध शरीरी शुचि प्रभाव ।।
जय श्रद्धाकृति निर्दोष जान, जय मुक्तिपंथ निर्दोष मान ।
जय सदुपदेश निर्दोष येह, जय इस प्रभाव निर्दोष देह ।।
सो रत्नत्रयगुण अतुल जान, संक्षेपरुप सुनिये बखान ।
शुचि सम्यग्दर्शन ज्ञान सार, अरु सम्यक्चारित मयप्रचार ।।
या रत्नत्रय बिन मुक्ति नांहि, यों भाखी जिन आगमसुमांहि ।
अहमिन्द्रलोक अनुतर विमान, सवार्थसिद्ध ना मिले थान ।।
कल्पेन्द्र शची दिव लोकपाल, इस बिना होय नहिं कोटिकाल ।
दिव पंचम देव ऋषी महान, अरु दक्षिणदिश सब इन्द्र मान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनपर्यय केवलज्ञान सिद्धि, आहार आदि उत्कृष्ट रिद्धि।
बिन रत्नत्रय के मिले नांहि, कोटी उपाय किमि करों नांहि।
श्री तीर्थंकर त्रैलौक्य ईश, सो जाय विराजे जगत शीश।
सो पूरब रत्नत्रय अराधि, पावे पुरुषारथ पूर्ण साधि।।
इस भव परभव शिव सुख बढ़ाय, यह रत्नत्रय जानो सहाय।
या कबहूँ ऋषि मुनिवर महन्त, उर धारि विनय बहुविध करंत।।
याके प्रभाव नर अशुचिकाय, तिसको शिर नावे देवराय।
याके प्रभाव यह काय सोय, अति जोतवंत क्षण मांहि होय।।
याके प्रभाव अतिशय अनेक, वर प्रापति होवे स्वहित टेक।
याके प्रभाव पशु मनुज क्रूर, सब शान्त होय कर रहें दूर।।
बहु दुष्ट यक्ष व्यन्तर पिशाच, शिर नाय करे पद अग्र जांच।
शनि सूर्य ज्योतषी कूर और, इनकी न बने कहुँ भांति दौर।।
सब निधि में रत्नत्रय महान, रतनन में सबकी खान मान।
सुखदायक जितनी वस्तु भाय, तिन सबकी जानो इसे माय।।
जिन जननी सम यह पूज्यमान, कर आदरयुत नितप्रतिप्रमाँण।
तिहुँलोक और तिहुँकाल मान, सुखदायक रत्नत्रय प्रमान।।
यह जिनवर को उपदेश जान, यह जानों हितकर सेव्यमान।
धरमोपदेश दाता जिनेश, तुम चरणकमल ममउर हमेश।।
प्रभु वास करो दाता महान, कर कृपा देहु प्रभु ज्ञानदान।
हे करुणानिधि यह काज साज, जयवन्त जिनेश्वर देहु साज।।

दोहा

तुम दाता दातानि के, दायक सर्व समाज।
वहीं कृपा मो पर करो, दीनबन्धु महाराज।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरपूर्व दिशासप्तमरतिकरगिरि जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

सोरठा

सौख्यसंग सुख साज, दायक तुम त्रैलोक्य में।
करो क्षेम महाराज, निज पर हितकारक सही।।

।।इत्याशीर्वाद।।१२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाष्टम रतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

कुसुमलता छंद

नन्दीश्वर के पूर्वभाग में, अंजनगिरि के उत्तर भाग ।
वाबरि नीर भरी अति सुन्दर, देवी देव करें अनुराग ।।
ताके बाह्य कोन में सोहे, रतिकर गिरि शोभा बड़भाग ।
श्रीजिनमन्दिर ताके ऊपर, मैं पूजों नितहित में लाग ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाष्टमरतिकर गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बसमूह ! अत्रावतरावतर सम्वौषट् इत्याह्वानम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अथाष्टकम्

जगमांहि बहुत दुख पायो, तसु अन्त अजहुँ नहिं आयो ।
प्रभु चरणन नीर चढ़ायो, तब शान्तिसुधा सुख पायो ।।
नन्दीश्वर पूरब जानो, तहां अष्टम रतिकर मानो ।
तापर जिन मन्दिर सोहे, सुर असुर जजत मन मोहे ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशाष्टमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

भवदाह महान सतावे, कबहूँ साता नहिं पावे ।
तिहि दाह मिटावन काजे, चन्दन सों पूजत आजे ।। न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशाष्टमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम् ।

शुचि सरल शालि के लीजे, वा मुक्ता अक्षत कीजे ।
अक्षयपद पावन काजे, नित चरण जजूं जिनराजे ।। न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशाष्टमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अशरीर अरी दुखदाई, जीते हरि हर सुर राई ।
तिह मारण काज नवीना, कुसुमाञ्जलि जिनपद दीना ।।
नन्दीश्वर पूरब जानो, तहां अष्टम रतिकर मानो ।
तापर जिन मन्दिर सोहे, सुर असुर जजत मन मोहे ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशाष्टमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

चरु नव्य गव्य रस भीने, बहुमिष्ट तुरत के कीने ।
जिन पूजन कर अनुरागे, दुख दोष क्षुधा सब भाजे ।। न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशाष्टमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

शुभ दीप अनूपम लावे, बहु भांति पवित्र बनावे ।
श्रीजिनवर चरण चढ़ावे, सब मोह तिमिर नश जावे ।। न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशाष्टमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

दश गन्ध हुताशन मांहीं, खेबें बहु भक्ति बढ़ाई ।
विधिदहन उपाय बतायो, जिनवर की शरणें आयो ।। न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशाष्टमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

नानाविध उत्तम लावो, फल श्री जिन चरणं चढ़ावो ।
बहु भक्ति सहित गुण गावो, यातें भवि शिवफल पावो ।। न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशाष्टमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल फल वसु द्रव्य मिलाई, करि अर्घ हृदय हरषाई ।
जिनवर पद पूज रचाओ, नर जन्म तनो फल पाओ ।। न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशाष्टमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल

दोहा

तुम जिनेन्द्र जग में बड़े, परम रिद्धि दातार ।
यह अरजी सुन लीजिये, करो भवोदधि पार ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्धडि छन्द

जय जय जिनराज दयानिधान, भवकानन हानन दव प्रमान ।
जय मोहमितिर को रविस्वरुप, मिथ्यात्वदाह को चंद्ररुप ।।
जय दवकषाय को मेघधार, जय विषय जहर को सुधाधार ।
जय कुनयसर्प को मंत्ररुप, जै जै तुम वच अम्मृत स्वरुप ।।
संसार महावन बिकट रुप, तामें कुमार्ग बहु अन्धकूप ।
अज्ञान प्रबल तँह चहूँ ओर, बहु छायरहो नहिं चले जोर ।।
प्रभु तुमने प्रगट कियो अनूप, सन्मार्ग सुखाकर वृष सरुप ।
अजहूँ वह मारग विद्यमान, यह सुगुरु दिगम्बर कृपाजान ।।
इस पंचमकाल कराल बीच, कुलवान चले बहु चाल नीच ।
निर्मल जिनमत को दोष देय, ऐसे कुजीव शिर पाप लेय ।।
यह काल प्रभाव बड़ो कराल, मिथ्यात्व उदय विपरीत चाल ।
बहु चलै जीव निर्भय महान, नित होय तिन्होंके ज्ञान हान ।।
अक्षर अनन्त के भाग मात्र, रह जाय ज्ञान पर्यायमात्र ।
यह भाव निगोद मँझार जान, मिथ्यात्व तनो यह फल निदान ।।
हे कृपासिन्धु यह सर्व हाल, दरसायो तुमने हे कृपाल ।
यातें मिथ्यामत तजन जोग, सन्मारग श्रद्धा ग्रहण जोग ।।
सब ज्ञेय हेय अरु उपादेय, सतभेद प्रमाण तथा प्रमेय ।
नयभेद और अनुयोग द्वार, सतवस्तु प्रकाशन हार सार ।।
तुमने वर्णन कीने जिनेश, यह कृपा तुम्हारी अतुल वेश ।
उपकार भार कर सुर सुरेश, ऋषि मुनि ध्यावें सिरनाय शेश ।।
हे देव! कृपा हम पै करेव, निज ज्ञानशक्ति प्रभु हमें देव ।
तुम हो अनन्त गुणधार देव, तुम अक्षय निधि सरताज देव ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्यों जीव अनन्ते करे पार, गुण अवगुण नहिं कीने विचार।
त्यों मेरी वार दयानिधान, मत ढील करो जगपति महान ॥

दोहा

तारन तरन सुने तुम्हीं, इस संसार मँझार।
पार जिनेश्वर को करो, भव सागर अनिवार ॥

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाष्टमरतिकरगिरि जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

सोरठा

यह अरजी उर धार, मेरी सुध प्रभु लीजिये।
कीजे भवदधि पार, और कछू इच्छा नहीं ॥

॥इत्याशीर्वाद॥१३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुसुमलता छन्द

नन्दीश्वर पूरब दिश माहीं, श्यामवरन अंजनगिरि जान ।
ताके चहुँ दिश दधिमुखपर्वत, श्वेतवरन मनहरण महान ।।
रतिकर सुवरन वर्ण बताये, एक चार वसु संख्या जान ।
सब पर्वत तेरह तिन ऊपर, तेरह जिनगृह जजूं महान ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप पूर्व दिशासम्बन्धिभ्यः एकाञ्जनचतुर्दधिमुखाष्टरतिकरगिरि जिनमन्दिर विद्यमानेभ्यः एकसहस्त्र चतुः शतचतुर्जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

नन्दीश्वर पूरब जिन मन्दिर, समोसरण महिमा अनिवार ।
मानथम्भ प्रतिमा सुखदाई, चैत्यवृक्ष प्रतिमा हितकार ।।
अथवा व्यन्तरेन्द्र भवनादिक, जहाँ जहाँ जिन प्रतिमा सार ।
तिनसबको मन वचन काय कर, अर्घ चढ़ाय करुं नवकार ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशासम्बन्धिभ्यः सर्व जिनमन्दिर स्थित मानस्तंभ चैत्यवृक्षादिविद्यमानेभ्यः व्यन्तरभवनवासि देवभवन विद्यमानेभ्यश्च जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

।। इति पूर्व दिशापूजा सम्पूर्णा ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशांजन गिरि जिन मन्दिर पूजा

छन्द जोगीरासा

नन्दीश्वर है दीपतास के, दक्षिण भाग मँझारा।
सहस चुरासी योजन ऊँचा, अंजन सम अति कारा।।
ढोल सदृश अंजनगिरि तापर, जिनगृह है सुखकारा।
शीश नवाय जजूं जिन प्रतिमा, हर्ष हृदय अति धारा।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिणादिशांजनगिरिजिन बिम्बसमूह अत्रावतरावतर सम्बौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भवं वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम् (सुन्दरी छन्द)

सुरनदी जन निर्मल लीजिये, कनकभाजन में भर लीजिये।
जिन पदाम्बुज अग्र चढ़ाइये, स्वगुणरत्न महान बढ़ाइये।।
दीप नन्दीश्वर दक्षिण दिशा, गिरि सुअंजनपर जिनगृहलसा।
बिम्बशत अरु आठ महान हैं, जजतसुर सुरपति हितदान हैं।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर दक्षिणदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

मलय बावन चन्दन पावनो, घस कपूर सुगन्ध सुहावनो।
वृषपती पद पूजन कीजिये, विषयभोग तृषा तज दीजिये।। दी.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर दक्षिणदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्

शशिमरीच तुषार समान है, सरलशुचि शशिरुप महान है।
सरस अक्षत ले जिनराज के, चरणपूज करों हितसाज के।। दी.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर दक्षिणदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कलपवृक्षन की कुसुमावली, अतिसुगंध लिये सुर आवली।
हृदय भक्ति भरे शिर नायके, करतपूजिनालयजायके ।।
दीप नन्दीश्वर दक्षिण दिशा, गिरि सुअंजनपर जिनगृहलसा।
बिम्बशत अरु आठ महान् हैं, जजतसुर सुरपति हितदान हैं।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर दक्षिणदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम्

देवतरु के चरु बहु लेय के, धोय जिनवर पद में देय के।
सुरसमूह जजें तहँ जाय के, हम जजें जिनगृहहर्षाय के।। दी.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर दक्षिणदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम्

सुरमहीरुह से सुर ल्यावहीं, रत्नद्वीप जिनेन्द्र चढ़ावहीं।
हम स्वशक्ति समान बनायके, जजतदेव जिनालय जायके।। दी.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर दक्षिणदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः दीपम्।

अतिसुगन्ध दशों दिश में भरी, जिन सुअग्र सुराधिप ने धरी।
जगपती जिनचरण सरोज को, नमतसुरपतिधार प्रमोद को।। दी.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर दक्षिणदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः धूपम्।

विविध भूरुह के फल लायके, सुरसमूह जजें नित आयके।
करत नृत्य सुभक्ति बढ़ायके, फल जिनेश्वरचर्ण चढ़ायके।। दी.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर दक्षिणदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः फलम्।

जल फलादिक द्रव्य मिलायके, अर्घ कर जिनपूजन जायके।
अष्टकर्म विनाशन हेतु हैं, भव्यकोशिवसंपतिदेत हैं।। दी.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर दक्षिणदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

जयमाल

दोहा

वर्धमान महाराज तुम, जग में सुने महान।
बुद्धि विवर्धन काज मैं, धरुँ तुम्हारो ध्यान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तोटत छन्द

जयवन्त जगत्पति राजत है, समवस्सृति में छवि छाजत हैं।
प्रतिहार्य सु आठ विराजत है, जिनवाणि सुधाघम गाजत हैं॥
सब तत्व प्रकाश कियो प्रभुजी, सर्वज्ञ पदस्थ लियो प्रभुजी।
वृष को उपदेश दियो प्रभु जी, उपकार विशेष कियो प्रभुजी॥
इक धर्म दयामय सार कहो, तिहि भेद अनेक प्रकार कहो।
मुनि श्रावकरुप दुभेद गिनी, अथवा निश्चय व्यवहार भनो॥
रत्नत्रयरुप त्रिभेद कह्यो, पुनि चार अराधन भेद भयो।
पुनि पंच महाव्रत रुप भयो, छह काय दयानिधिभेद थयो॥
सतभेद सुतत्व प्रतीति कहा, व़सुकर्म विनाशक धर्म लहा।
त्रययोग कृतादिक से गुनिये, नवभेद यही वृष के सुनिये॥
दशलक्षण रुप अनेक कहो, इस भांति अनेक प्रभेद लहो।
सब में इक भाव विकासत है, यह सम्यग्ज्ञान प्रकाशत है॥
मिथ्वा अज्ञान कुचारित से, निज भूल सुदूर रहे हित से।
अरिहन्त सुपन्थ सुहावत ना, गुरुदेव दिगम्बर भावत ना॥
जिनशासन को नहिं मानत हे, मनकल्पित बात बनावत है।
सतबात हृदय नहिं भावत है, विपरीत कुरीति सुहावत है॥
सतधर्म कुधर्म विचार बिना, आचरण सभी दुखकार गिना।
बहुभोजन ज्यों इक घीउ बिना, अथवा गृहमंदिर नीव बिना॥
निजमूल बिना नहिं वृक्ष रहे, कबहूँ नहिं पुष्प फलादि लहे।
त्यों समकित के बिन धर्म नहीं, बिन धर्म कभी फल पर्म नहीं॥
यह जान जिनागम ज्ञान लखो, परमागम अम्मृतपान चखो।
सबमोहमिथ्यात्व कुबुद्धि नखो, निजभाव कुभाव सभी परखो॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह मारग श्रीजिनराज लियो, बहु ही जिनने उपदेश दियो।
भवि जीवन ने उर धार लियो, तिनने अपनो हितसार कियो ।।
तिनके पद को शिर नावत है, वह ही जगधन्य कहावत है।
हमहू उनको शिर नावत हैं, उरमांहि जिनेश्वर ध्यावत हैं ।।

दोहा

गणधर देव महान रिषि, चार ज्ञान बल धार।
सो भी नहिं कछु कह सके, प्रभु अनन्त गुण धार।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशाजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

सोरठा

विनती सुनिये देव, सरन तुम्हारी आइयो।
प्रभु इतनो यश लेव, जन्म मरण निरवारियो ।।

।। इत्याशीर्वादः ।। १४ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशांजन गिरिं पूर्वदधिमुख जिन मन्दिर पूजा

छन्द जोगीरासा

नन्दीश्वर की दक्षिण दिश में, अंजनगिरि सुखदाई ।
ताकी पूरबदिश में राजे, दधिमुख पर्वत भाई ।।
दश हजार योजन को ऊँचो, उज्वल वर्ण सुहाई ।
वापी बीच ढोल सम तापर, जिनगृह पूजो भाई ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपदक्षिणदिशांजनगिरिस्थपूर्वदधिमुख गिरि जिनमन्दिर जिनबिम्बसमूह! अत्रावतरावतर सम्बौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम्

भवि श्रीजिनवर के पाय, सुकारण पूजत हैं ।
सुरसरिता को उज्वल जल ले, कंचन भृंग भराय ।
जन्ममरण निरवारन कारण, जिनवर चरण चढ़ाय हैं ।।
सुरसरिता को उज्वल जल ले, कंचन भृंग भराय ।
भवि श्री जिनवर के पाय, सुकारण पूजत हैं ।।
नन्दीश्वर दक्षिण अंजनगिरि, ताको पूरब भाय ।
दधिमुख पर जिनमन्दिर सोहे, जजत सुरासुर आय ।।
सुरसरिता को उज्वल जल ले, कंचन भृंग भराय ।
भवि श्री जिनवर के पाय, सुकारण पूजत हैं ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

मलयागिर को बावन चन्दन, पावन गन्ध प्रचारी ।
श्रीजिनवर के चरण चढ़ावत, पावत सुख अविकारी ।।
सुकारण.। भवि श्री. । नन्दी. । दधि.। सुकारण. ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः चन्दनम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शशिसम उज्जवल श्वेत मनोहर, सरल सुगन्ध अपारा।
पुजं देत जिनचरणन आगे, जन्म जरा जिनवारा ।।
सुकारण.। भवि श्री. । नन्दी. । दधि.। सुकारण. ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

अतिनिर्दोष सुगन्ध सुरंगी, फूल मनोहर लाओ ।
श्रीजिनवर की पूजा करके, हरष हरष गुण गाओ ।।
सुकारण.। भवि श्री. । नन्दी. । दधि.। सुकारण. ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम्।

षटरस पूरित व्यंजन ताजे, खाजे आदि बनाओ ।
बलि बलि जाय जिनेश्वर पदको, पूजन कर गुण गावो ।।
सुकारण.। भवि श्री. । नन्दी. । दधि.। सुकारण. ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम्।

जगमग ज्योति होत दीपक की, अति पवित्र बनवायो ।
मोहाज्ञान विनाशन कारण, श्रीजिनचरण चढ़ायो ।।
सुकारण.। भवि श्री. । नन्दी. । दधि.। सुकारण. ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः दीपम्।

कृष्णागरु कर्पूर तगर अरु, चन्दन गन्ध लगावें ।
खेवत धूप जिनेश्वर आगे, मन वांछित सुख पावें ।।
सुकारण.। भवि श्री. । नन्दी. । दधि.। सुकारण. ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः धूपम्।

एला लोंग बदाम छुहारे, पिस्ता किसमिस लावें ।
श्रीफलदायक श्रीजिनवर के, चरणन मांहि चढ़ावें ।।
सुकारण.। भवि श्री. । नन्दी. । दधि.। सुकारण. ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः फलम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल फल द्रव्य मँगाय गाय गुण, जिन चरणन चित लावें।
भावभक्ति से श्री जिनवर की, पूजा कर सुख पावें ।।
नन्दीश्वर दक्षिण अंजनगिरि, ताकी पूरब भाय ।
दधिमुख पर जिनमंदिर सोहे, जजत सुरासुर आय ।। सु.
भवि श्री जिनवर के पाय, सुकारण पूजत हैं ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्य: अर्घ्यम् ।

जयमाल

घताछन्द

जय जय जिनचंदा, जोति अमंदा, आनंदकंदा, जगत्राता।
तुम शिवसुख दानी, त्रिभुवननामी, सबके स्वामी, हितदाता।।

तोटकछन्द

जय जय जिनराज कृपासदनं, सुखकंद अमंद चर्तुवदनं ।
प्रभु रत्नसिंहासन राजत हें, प्रतिहारज आठ विराजत है ।।
चहुँ ओर सभा दश होय कहीं, परदक्षिण रुप अनूप सहीं ।
मुनिराज सुरी दिवलोक तनी, अजया पुनि जोतिसनारि गिनी ।।
भवनाधिप व्यन्तर नारि वरा, भवनत्रिक देव सुकल्प सुरा ।
नर नारि सबै इक ठौर सही, फिर अंत विषें पशुराशि कही ।।
इमि जीव सभी उपदेश सुनें, मतिमाफिक धर्म स्वरुप गुनें ।
पशु जातिविरोध सभी तजके, समभाव रहें समता सज के ।।
सुरभीसुत सिंह खिलावत है, अरु सिंहनि बत्स पिलावत है ।
मृग केहरि बाल विहार करें, बहु आपस में उर प्रीति धरें ।।
अहिनोल किलोल करें मिलके, अरु मूष बिलाव रहें हिलके ।
जहां कीर कपोत रु काक सबै, सज बैठत एकहि ठौर सबै ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह अतिशय श्री जिनराज तनौ, गणराजहु पर नहिं जाय भनौ।
धनि है धनि है तुमरे तप को, धनि है जग में तुमरे जपको ॥
धनि है तुम चारित पावन को, धनि है तिनके मग धावन को।
तुम जो कछु धर्मप्रकाश कियो, अरु केवलज्ञान उजास कियो ॥
अजहूँ वह ही चलि आवत है, अति भाग उदय नर पावत है।
जय श्रीगुरुदेव दयाल थहे, सन्मारग के सब भेद कहे ॥
जिनशासन में सब पावत हैं, हितकारक जीव बतावत हैं।
वह श्रीगुरुदेव सदा जग में, जयवंत रहो शिव मारग में ॥
शिर नावत हूँ तुमरे पग में, निजसम्पति सिद्ध करो जग में।
प्रभु मो हिय वास करो तबलों, विधि को नहिं नाश करो जबलो ॥
जग में जिनने बहुपाप किये, उनको अपने सम आप किये।
यह अरज प्रभू चित में धरिये, भव पार जिनेश्वर को करिये ॥

दोहा

तुमही स्वामी जगपती, तुमही दीन दयाल।
कृपा जिनेश्वर पै करो, हरो चतुर्गति जाल ॥

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणांजनगिरि पूर्व दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

सोरठा

सांचे प्रभु शिर ताज, आज काज मेरो करो।
सुनो अर्ज जिनराज, भववाधा मेरी हरो ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥ १५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशांजन गिरिं दक्षिण दधिमुख जिन मन्दिर पूजा

जोगीरासा छन्द

नन्दीश्वर दक्षिण अंजनगिरि, ताके दक्षिण जानो ।
वापी बीच कहो दधिमुख गिरि, तापर जिनगृह मानो ।।
अकृत्रिम उत्कृष्ठ प्रमाणिक, रतन सुवर्ण समानो ।
तिहि मधि एक शतक वसु प्रतिमा, पूजत पुण्य महानो ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरिदक्षिणदधिमुख गिरि जिन बिम्बसमूह! अत्रवतरावतर सम्बौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अथाष्टकम् (कुसुमलता छन्द)

जिन पूजो हे भाई, यह उत्तम नरभव पायके ।। जिन.
द्रह तिगिच्छ निर्गत सरिता को, जल शीतल सुखदाई ।
जन्म मरण दुखदाह निवारन, पूजों जिन हितदाई ।। जि.
यह उत्तम नरभव पायके, जिन पूजों हो भाई ।
नन्दीश्वर दक्षिण अंजनगिरि, दक्षिण दिशा बताई ।।
दधिमुखगिरि पर श्रीजिनमंदिर, जजें सुरासुर आई ।। जि.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि दक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

वावन चन्दन दाहनिकन्दन, सुन्दर लेत घसाई ।
भवाताप निरवारण कारण, जजों जिनेश्वर पाई ।।
जिन. । यह. । नन्दी. । दधिमुख. । जिन. । यह. ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि दक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः चंदनम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुन्दर शालि प्रक्षाल मनोहर, कंचन थाल भराई ।
अक्षयपद पावन शुभभावन, जिनपद पूज कराई ।।
जिन. । यह. । नन्दी. । दधिमुख. । जिन. । यह. ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि दक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

वर्ण वर्ण के पुष्प मनोहर, शुचि सुगन्ध अधिकाई ।
कामदाह निरवारण कारण, पूजों जिन सुखदाई ।।
जिन. । यह. । नन्दी. । दधिमुख. । जिन. । यह. ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि दक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

पावन मन भावन बहु व्यंजन, मोदक आदि बनाई ।
क्षुधाहरणविधि अरिविजयी के, चरणन देत चढ़ाई ।।
जिन. । यह. । नन्दी. । दधिमुख. । जिन. । यह. ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि दक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

ज्योतिवन्त अनुपम रतनन के, दीप सुरासुर लावें ।
पूरण ज्ञानपती जिनवर के, चरणन मांहि चढ़ावे ।। जि.
नन्दीश्वर दक्षिण अंजनगिरि, दक्षिण दिशा बताई ।
दधिमुख गिरि पर श्री जिन मन्दिर, जजों सुरासुर आई ।।
जिन. । यह. । नन्दी. । दधिमुख. । जिन. । यह. ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि दक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

अगर तगर चंदन अरु केशर, धूप सुगन्ध बनावें ।
जगदीश्वरपद पावन कारण, जगपति चरण चढ़ावे ।।
जिन. । यह. । नन्दी. । दधिमुख. । जिन. । यह. ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि दक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरस सुगन्धसमूह भरे बहु, मिष्ट महाफल भाई ।
शिवफलपावन शिवरमणीपति, पद में देहुं चढ़ाई ।।
जिन. । यह. । नन्दी. । दधिमुख. । जिन. । यह. ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि दक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल फल द्रव्य मिलाय गाय गुण, उत्तम अर्घ बनाया ।
कर्मोदयदुख दूरकरण कों, जिनवर चरण चढ़ाया ।। जि.
यह उत्तम नरभव पायके, जिन पूजों हे भाई ।
जिंन. । यह. । नन्दी. । दधिमुख. । जिन. । यह. ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि दक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल

दोहा

शान्तिकरण भवभ्रान्ति हर, परम दिगम्बर देव ।
मन वच काय लगाय के, करुं सदा मैं सेव ।।
भवदुख दुखिया जानके, करो कृपा महाराज ।
तुमहीं या संसार में, तारणतरण जिहाज ।।

छन्द

सुखी तुमही जग में जिनराज, सुने परमागम में हित साज ।
कहूँ कछु भेद अनूप वयान, सुथानक पुण्य तनो वह जान ।।
सुगर्भहि से छह मास अगार, नृपांगण में वरषी मणिधार ।
सुरी बहु सेव करें जिन मात, अनेक प्रकार सँभारति गात ।।
सुगर्भ विषैं जब आवत देव, सुरासुर आय करें बहु सेव ।
सुरत्न सिंहासन पै पितु मात, सुराधिपन्न्हुन करें बहु भांत ।।
अमोल मणी जुत मोतिम दाम, करें बहु भेंट शची अभिराम ।
नवाय जिनेश्वर को निजभाल, करें संचय बहु पुण्य सुहाल ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
नवों महिना सब नगर मँझार, महामणि वर्षत हैं त्रय वार।
सुजन्म लियो त्रय ज्ञान समेत, भये तब चिह्न सभी सुख देत॥
करी सुरसाज ऐरावत वीर, सुराचल नहुन करो हरि धीर।
सुरासुर नृत्य करें बहु भांत, बढ़ो अतिहर्ष हिये न समात॥
नियोग सबैं कर जन्म कल्यान, गये निज थानक देव महान।
प्रभू तन ज्योति बढ़ै दिनरात, सुदेखत ही भ्रममोह बिलात॥
हजार द्दगांजलि सों सुरनाथ, सरुपसुधा सुर पीवत साथ।
निमेष न लागत है बहुभांत, निहारत पै नहि तृप्ति लहात॥
जयो जिनदेव अमोलक रुप, निहारत ही सुख होत अनूप।
कहा गिनती नरजीवन सार, पशूगण मोहित होत अपार॥
गृहाश्रम में बहु वस्तु अनूप, महामणिभूषण वस्त्र सरुप।
सबै सुरलोक तनों सुखकाज, खड़े रहते सुखसाज समाज॥
अहार तनी बहु वस्तु अनेक, गहें सुरलोकतनी यह टेक।
अनेक सुरासुर भृत्य रहाय, अनूपम गान सुनृत्य कराय॥
महासुख मांहि बितावत काल, कछू लखि योग विरागत हाल।
तभी सुरदेव रिषीश्वर आय, विराग बढ़ावन वयंन कहाय॥
धरें प्रभु जोग करें शुभ ध्यान, लहें तब पंचम ज्ञान महान।
समवसृति देव बनावत आय, सुभव्यन को शिवगैल गहाय।
प्रभू निर्वाण महासुखधाम, सुजाय विराजत हैं अभिराम।
तहां थिररुप अनन्तहिं काल, रहे अविछिन्न सुखी गुणमाल॥
प्रभू तुमरे पद को नय भाल, करें अरजी सुनिजे यतिपाल।
महा दुखदा भवसिंधु लखाय, जिनेश्वर कीजे आप सहाय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा

तुम स्वामी त्रैलोक के, बिन कारण प्रतिपाल।
मम सहाय कीजे प्रभू, यही विरद प्रतिपाल ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपदक्षिण दिशाषष्ठरतिकरगिरि जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

तुमही शरण सहाय, सुने मुख्य संसार में।
मेरी करो सहाय, बारबार अरजी यही ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। १६ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिण दिशांजन गिरि पश्चिमदधि मुख जिन मन्दिर पूजा

जोगीरासा छन्द

नन्दीश्वर दक्षिण अंजनगिरि, पश्चिम दिश बिख्याता।
ढोलसमान गोल गिरि दधिमुख, दधिसम श्वेत सुहाता।।
ताके शीश जिनेश्वर मन्दिर, अकृत्रिम सुखदाता।
शीश नवाय करुँ जिनपूजन, यातें शिवसुख पाता।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजन गिरि पश्चिम दधिमुखजिन मन्दिर जिन बिम्बसमूह। अत्रावतरावतर सम्वौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम् (शिखरिणी छन्द)

महा गंगा पानी, शुचि कनक भृंगार भरिके।
लहे सौख्यं भारी, विविध सुर वा मोक्षमग के।।
प्रभू अंध्री पूजें, हृदय सरधा तत्व करके।
सभी शल्यें भाजें, जनम मरणा-दी जगत के।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा पश्चिमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

असाता संसारे, वनदहन से दीर्घ दुखदा।
सुरेशों की हन्त्री, हृदय तदपी शांति न कदा।।
शुभा झारी लेके, प्रभुचरण धारा सुधर के।
महासाता भाजे, जगत तपनादी मनुज के।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा पश्चिमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः चन्दनम्।

भ्रमों भू में भारी, चतुरगति में ना सुख लहो।
महाधर्म- त्यागे, कुबुधिवश तो नर्कहि गहो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुभोदीर्णा पाई, सुजन जिनसेवी रुचि हुई ।
जजों शालीयों से, अखयपद की मैं निधि लई ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा पश्चिमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

सुरेशों को जीते, प्रबल अशरीरी मदन वा ।
रहे ना या आगे, सबल नर तिर्यंच हरि वा ।।
करों काबू याकों, कुसुम रख के चर्ण जिनके ।
जजों श्रेयः काजें, सुनिधि निज आवे जु तिनके ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा पश्चिमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

सुनों स्वामी मेरे, जगत दुखदा है अति क्षुधा ।
इसी से ही पावें, जगत जिय नाहीं सुख कदा ।।
चरु पूरी थारी, सुजिनवर आगे सुधारिये ।
क्षुधा पीड़ा भारी, चरु वर चढ़ा के सुहरिये ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा पश्चिमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

महा मूर्च्छा आई, कुबुधि कर मिथ्या उदय से ।
नहीं अध्वा सूझे, स्वपर-सुखदा-बुद्धिहति से ।।
सुदीपं लेके मैं, चरण जिन पूजों हृदय से ।
सदाचारी होके, सुर भविक होऊँ शिव बसे ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा पश्चिमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

सुगन्धी जो देवे, रुचिर दशधा धूप विधि की ।
हृदे भक्ती धारे, कर जिन सु पूजा सु अधिकी ।।
सदा सौख्यं पावे, जगतवन आवें न फिर वे ।
यही राखो श्रद्धा, सत सुखद जो आप गिनवे ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा पश्चिमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

लगें नेत्रों प्यारे, फल कनक थारी सुभरिये ।
प्रभू चर्णो क्षेपे, सुबुध वर मुक्ति सुवरिये ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यही पूजा अर्चा, सुजिनवर अष्टांग कहिये ।
कही है श्री जी ने, कर भविक मुक्ती सुलहिये ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा पश्चिमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

सभी द्रव्य लेके, दरब वसुधा थाल भरके ।
चढ़ाये चर्णों के, सुजिनवर कैवल्यवर के ।।
सही मुक्ती पावे, न फिर जग आवें बहुरि के ।
कही श्री जी ने है, जिनवचन माहीं जिय तके ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा पश्चिमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल

कल्याणक नायक नमूं, सर्वसिद्धि दातार ।
मम अरजी सुन लीजिये, देहु रिद्धि अनिवार ।।

पद्धड़ी छन्द

जय जय जिनराज दयानिधान, भवसागरनागर पोत जान ।
जय जय करुणानिधि देव ईश, त्रयवार नमूं मैं नाय शीश ।।
जय धन्य देव अवतार सार, भविजन भवि पार करे अपार ।
लय दियो धर्म उपदेश सोय, जिहि धारत भवि भवपारहोय ।।
वह धर्म सदा वरतो महान, जय दिवशिवसुखदायकप्रमान ।
जय सम्यग्दर्शन मूल सार, डाहली ज्ञान जानो अधार ।।
बहुविध चारित तरु पात फूल, दिवशिवसुख जिहि में रहे फूल ।
जो भविजन सेवे मन लगाय, निश्चय ताका सब दुख पलाय ।।
दो भेद धर्म के जग प्रसिद्ध, मुनिवृष अरु श्रावक स्वयंसिद्ध ।
श्रावक के ग्यारह भेद जान, दर्शन प्रतिमा पहली प्रमान ।।
जय दूजी व्रतप्रतिमा अनूप, बारह व्रतधारण तिहि स्वरुप ।
जय सामायिक तीजी प्रमान, प्रोषध चौथी गुणखान जान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय सचितत्यागपंचम सुजान, दिव ब्रह्मचर्य षष्ठी महान ।
सप्तम है पूरण ब्रह्मचर्य, आरम्भत्याग अष्टम सुवर्य ।।
जय परिग्रहत्यागी नवमजान, अनुमतित्यागी दशमी महान ।
उद्दिष्टत्याग ग्यारह पवित्र, यह उत्तमश्रावक जान मित्र ।।
जब पहली प्रतिमा पूर्ण होय, दूजी को तब आरम्भ होय ।
जब दूजी पूरण सधे सोय, तब तीजी को आरम्भ होय ।।
इस विधि सब प्रतिमाभेद जान, पूरब साधे उत्तर प्रमान ।
पहली प्रतिमा बिन नहीं कोय, चाहे तपसी मुनि क्यों न होय ।।
यह जान शुद्ध चित में विचार, पहले समकित को चित्त धार ।
समकित बिन कोई धर्म नांहि, समकित बिनशुभगतिपर्मनांहि।
जय जिनवर आज्ञा जान वीर, मन में विचार वृष धार धीर ।
लौकिक विधिका भी कर विचार, जिनवर अज्ञासम चित्त धार ।।
जग धन्य देव अरिहन्त देव, जिससे भवि पावे सब सुभेव ।
मम उर में तिष्ठो देव सार, द्यो स्वबल बुद्धि अहमेव सार ।।
हे देव अरज मम वार वार, करुणा करि भवदधि तार तार ।
अरि विघ्न भयंकर जार जार, नित स्वहित रिद्धिकर लार लार ।।

दोहा

तीर्थंकर त्रिभुवन धनी, तुम गुण आगम अपा ।
कृपा करो मुझ दीन पै, करो भवोदधि पार ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा पश्चिमरतिकर गिरि जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

सिद्ध शरोमणि सार, सिद्धि करो पुरुषार्थ की ।
मेरी मति विस्तार, सिद्धि करो सतस्वार्थ की ।।

।। इत्याशीर्वाद: ।।१७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणांजन गिरि उत्तर दधिमुख गिरि जिन मन्दिर पूजा

जोगीरासा छन्द

नन्दीश्वर दक्षिण दिश मांही, अंजन पर्वत सोहे।
ताकी वीतशोक वापी में, दधिमुख गिरि मन मोहे॥
तापर श्रीजिनभवन अकृत्रिम, सुरपति पूजन जावें।
शक्तिहीन हम जिनगृह मांही, जिनपद को शिर नावें॥

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर द्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि स्थोत्तर दधिमुखगिरि जिन मन्दिर जिनबिम्बसूह! अत्रावतरावतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम् (सोरठा)

पद्मद्रह जल सार, कंचन भाजन में भरुँ।
जिनपद तर त्रय वार, धार देय भवदुख हरुँ॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणांजनगिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

केशर चन्दन सार, कर्पूरादि मिलाइये।
जिनवर पद सुखकार, पूजत भवि साता लहे॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणांजनगिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

देवजीर सुखदास, अक्षत खास सुहावने।
पूजत शिवपद वास, मुक्तिवास निश्चय लहे॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणांजनगिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

पारिजात मन्दार, सुन्दर कुसुम अनूप ले।
भक्तिभाव उर धार, जिनपद पूजत शिव लहे॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणांजनगिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नानाविध पकवान, ताजे शुद्ध सुहावने ।
जो पूजत भगवान, क्षुधादोष सो सब हने ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणांजनगिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

दीपक ज्योति प्रकाश, शुद्ध वस्तु संयोग से ।
पूजे जिन सुखरास, ज्ञान ज्योति प्रगटै सही ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणांजनगिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

कृष्णागरु कर्पूर, चन्दन धूप बनाइये ।
भक्ति भाव भरपूर, जिनवर चरण चढ़ाइये ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणांजनगिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

एला बेला आदि, फल उत्तम बहु रस भरे ।
करके मन अहलाद, जिनवर की पूजा करों ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणांजनगिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल फल वस्तु मिलाय, अर्घ बनावे भव्य जन ।
पूजों श्रीजिन पाय, मुक्ति महल निहचै मिले ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणांजनगिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल

दोहा

तुम स्वामी त्रैलोक के, अशरण शरण अधार।
इस असार संसार में, मेरी सुनो पुकार ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्धड़ी छन्द

जय जय जिनराज दयानिधान, भवदुख मेटन समरथ महान।
जय जय मैं या संसार मांहि, दुख सहे बहुत सो छिपे नांहि ।।
बहुकाल निगोद कुवास कीन, दशआठ जनमइकस्वास लीन।
बहुजीव आहार उच्छावाससार, अरु जन्ममरणइकसाथधार ।।
क्रम क्रम सों तँह से निकस देव, थावरगति पाई पंच भेव।
तहां काल असंख्य बिना सहाय, बहुवार जन्म मरि मर लहाय ।।
दो इन्द्रिय आदिक विकल देह, धर सह्यो दुःख ताको न छेह।
इनमें सम्मूर्छन लही देह, मन बिना तदपि तासों सनेह ।।
पंचेन्द्रिय तन को भेद सार, मनरहित जीव नहिं गर्भ धार।
मनसहित गर्भ में बसे आय, बाहर निकसे बहु दुःख पाय ।।
ज्यो जंत्री तार करे सुनार, त्यों जीव गर्भ से होय पार।
जो जन्म समय अतिदुःख होय, जिनवर जाने कै सहै सोय ।।
पशुयोनि महादुख खानिजान, हिमउष्णक्षुधा अरु तृषावान।
अतिभार धार फिर पड़े मार, पशुगतिकेदुखकी क्या सम्हार ।।
संक्लेशभाव से नर्क जाय, तहां तीक्षण दुख पावे अधाय।
फिर निकसि तहांसे बहु भ्रमंत, ताकौ नहिं पावे कहीं अंत ।।
जब पुण्य उदय सुर देह पाय, तहां विषयलोलुपीभयो जाय।
बिन धर्मध्यानं आयुष गमाय, फिर थावर तनमें परो जाय ।।
यह चिंतामणि सम मनुषदेह, सतबुद्धि ऊँचकुल धर्मनेह।
अतिदुर्लभ पाये जगत बीच, क्षण क्षण शिर ऊपर रहे मीच ।।
हे देव! जोग यो मिलो सार, यातें प्रभु सुनिये मम पुकार।
प्रभु देहु हमें निजरुचि प्रधान, अरु प्रगट करो उर सत्यज्ञान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन द्रव्य क्षेत्र अरु कालभाव, ता सम दीजे चारित्र भाव ।
यह रत्नत्रय शिवमग उपाय, ताको साधक गुरुदेव भाय ।।
भव भव में मिलियो जोग एव, भव भव मिलियो तुमचरण सेव।
भव भव गुरुमिलियो अनागार, भव भव सत धर्म रहे प्रचार ।।
यह अरज हमारी सुना देव, इतनो वर दे प्रभु सुजस लेव ।
प्रभु तुम सब लायक कहे देव, करजोड़ जिनेश्वर करत सेव ।।

दोहा

जब तक रवि शशि जगत में, जब तक थिर गिरिराज।
तब तक या संसार में, धर्म रहे जिनराज ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणांजनगिरिस्थोत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

दोहा

शिववासी प्रभु शिवसुखी, सुखदायक भरपूर ।
मेरे चित में बसो तुम, नित जयवन्त हजूर ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। १८ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणांजन गिरि प्रथम रतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

कुसुमलता छन्द

नन्दीश्वर दक्षिण अंजनगिरि, अरजा पूरब वापी ।
ताके बाहिर कोण प्रथम में, रतिकर गिरि आलापी ।।
एक सहस योजन को ऊँचो, गोल ढोल सम सोहे ।
तापर श्रीजिनगेह अकृत्रिम, सुर नर के मन मोहे ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरिपूर्व दिशाप्रथम रतिकर गिरि जिन बिम्बसमूह । अत्रावतरावतर सम्बौषट् इत्याह्वानम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अथाष्टकम (चौपाई)

देव दीर्घिका को जल लीजे, वीतराग की पूजन कीजे ।
यातें जन्म जरा दुख जावे, क्रमक्रमसों शिवसंपति पावे ।।
नन्दीश्वर दक्षिणदिश जानो, अरजा वापी कोण प्रमानो ।
रतिकरगिरि जिनगृहसुखदाई, सर्व सुरासुर पूजन आई ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

शशिसम श्वेत सुगन्ध अपारा, बावन चंदन अरु घनसारा ।
जिनवरचरण जजत हितकारी, शान्तिसुधा प्रगटै अनिवारी ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

अक्षतस्वच्छ सरल शुचि सारा, भरि करके सुवरण का थारा ।
पूजत जिनवर भक्ति सुधारा, सो पावत अक्षयपद सारा ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पावन फूल सुगन्ध अनूपा, अथवा सुवरण के सुचिरुपा।
तिनसों जिनवरपद भवि पूजे, कामदाह दह शीतल हूजे ।।
नन्दीश्वर दक्षिण दिश जानो, अरजा वापी कोन प्रमानो।
रतिकरगिरि जिनगृह सुखदाई, सर्व सुरासुर पूजन आई ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम्।

षट्रस मम चरु सद्य बनाई, घ्राणनयन मन को सुखदाई।
लेकर श्रीजिनमन्दिर जावे, जिनवर चरणन भेंट चढ़ावे।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम्।

कनक रतनमयज्योति सुहाती, शुचि कर्पूर सुरभि घृतवाती।
दीपक करि जिनवर पद पूजे, केवल पाय अमर अज हूजे।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम्।

कर्पूरादि सुगन्ध अपारा, द्रव्य मिलाय धूप शुचि सारा।
जिनवर चरण जजैं मन लाई, तिनने निज शिवसंपति पाई।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम्।

फल उत्कृष्ट अनेक प्रकारा, लावत भविजन हर्ष अपारा।
जिनवरचरणजजत भविप्रानी, ते पावें दिवशिवसुखदानी।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम्।

जलफल द्रव्य मिलाय बनावे, अर्घ कनकमय थार भरावे।
जो भवि श्री जिनचरण चढ़ावें, सो निश्चय उत्तमगति जावे।।
नन्दीश्वर दक्षिण दिश जानो, अरजा वापी कोन प्रमानो।
रतिकरगिरि जिनगृह सुखदाई, सर्व सुरासुर पूजन आई ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

दोहा

देव ऋषी सुरपति सबै, जिन्हें नवावें शीश।
तिनकी चरण सरोज रज, रहे सदा मम शीश॥

पद्धड़ी छन्द

जय श्रीधर श्रीकर श्रीजिनेश, जय ब्रह्मा शिव शंकर महेश।
जय चतुरानन सर्वज्ञ देव, तुम चरण सुरासुर करत सेव॥
जय मुनिमहंत तुम ध्यानधार, ते होंय अगम भवसिंधु पार।
प्रभुतुमगुणमहिमा अतिअपार, गणधरसुरेश नहिं लहें पार॥
तो अल्पपती नर और कौन, प्रभु वण सके गुणरत्नभौन।
प्रभु तुमगुण निर्मलगान मांहि, सुनविद्यानिधिनहिं पारजांहि॥
तो हम समान नर कीट सोय, किहि भांति गुणांबर पार होय।
पै भक्तिभाव हम शक्तिहीन, तुम गुण वर्णन आरंभ कीन॥
ज्यों निजसुतपालन हिरण आप, हरिसन्मुख जाय करे कलाप।
ज्यों बालक शशिप्रति बिंब देख, तिहि ग्रहण करे पौरुष विशेख॥
त्यों तुम गुणकथनमँझार सार, मुनि ईश कहत याही प्रकार।
प्रभु हम कुछ जानत नांहि देव, क्या कहिके प्रभुपद करें सेव॥
प्रभु तुम सबके प्रतिपाल सोय, जगमांहि सुने बहुबार सोय।
तातें यह निश्चय उर मँझार, हमरो भी बेड़ा करो पार॥
ज्यों न्यायवन्त भूपति महान, इक ग्राम तनों सरदार जान।
वह भी निर्बल की दया जान, प्रतिपाल करे सुनिये सुजान॥
तो आप देव त्रैलोक्यनाथ, सुर ईश नवावें तुम्हें माथ।
ऋषिमुनिमहंत सब करें आस, प्रभुदेहु तिन्हें निजरिद्धिखास॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्यों मेरी बार अबार कीन, मोकूं जानो अत्यन्त दीन।
तुम पदतर मेरो सदा वास, यह मेरी पूरण करो आस ॥
बहु कूट करुर पशू अनेक, तिनकी राखी प्रभु तुमहिं टेक।
नर अधम बहुत निस्तार दीन, शठहृदय सुबुधि विस्तार कीन ॥
ज्यों खड्ग कुसुमकीकरी माल, ज्यों व्याल भुजंगनि फूलमाल।
ज्यों सेठ विपति सब करी चूर, त्यों मेरा संकट करो दूर ॥
ज्यों विकटदवानल भयोनीर, नभमान बढ़ो ज्यों सतीचीर।
ज्यों जहर सुधासम कियो देव, त्यों मेरो संकट हरोदेव ॥
काहू कों स्वर्ग विमान देहु, काहू को रिद्धि निधान देहु।
काहू कों छत्रपती करेहु, निजपासवास दे सुजस लेहु ॥
निजसुत के तुतले वचन पेख, उर हर्ष करे माता विशेख।
तुम तात मात से अधिक देव, मेरे सुन वचन कृपा करेव ॥
जयवंतो जग में तुम दयाल, जयवंतो तुम वाणी विशाल।
जयवंतो तुम मग चलनहार, प्रभु मोहि करो संसार पार ॥

दोहा

तुम स्वामी शिवमहल के, वासी सुखी अनूप।
करो जिनेश्वर को प्रभु, सुखी आपने रुप ॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

सोरठा

दुस्तर पारावार, खार नीर संसार है।
हे प्रभु अधम उधार, मोकूं पार उतारिये ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥ १९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशांजनगिरि द्वितीय रतिकरगिरि जिन मन्दिर पूजा

जोगीरासा छन्द

नन्दीश्वर की दक्षिण दिश में, अंजनगिरि है भाई ।
ताके पूरब अरजा वापी, ताके कोझ सुहाई ।।
दूजो रतिकर पर्वत सोहै, कंचन वर्ण विशाला ।
तापर जिनगृह को नित पूजों, मन वच काय त्रिकाला ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशांजनगिरि पूर्व दिशाद्वितीय रतिकर गिरि जिन बिम्बसमूह! अत्रावतरावतर संवौषट् इतयाह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम् (चौपाई छन्द)

निर्मल गुणधारक जगनामी, परम पूज्य तीर्थंकर स्वामी ।
तिहि गुण प्रापति कारण सोय, जिनपदजलसों जजिभविलोय ।।
अष्टम द्वीप दिशा दक्षिणाई, अंजनगिरि के पूरब भाई ।
रतिकर दुतिय जिनालय सोहै, सकल सुरासुर के मन मोहे ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशाद्वितीयरतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः जलम्।

दुष्टकषाय ताप दुखहारी, तातें रहित सरब हितकारी ।
श्री अरिहन्त परमपद काजें, चंदन सों पूजों जिनराजे ।। अ.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशाद्वितीयरतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः चन्दनम्।

अक्षयपद में आप विराजे, सिद्ध स्वरुप अनूपम छाजे ।
तिहि पद प्रापति काज सुरेशा, अक्षतसों जिनजजत खगेशा ।। अ.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशाद्वितीयरतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः अक्षतम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कामदाह जग में दुखकारी, जिनजीती तिनकी बलिहारी।
वृहत् स्वरुप ज्ञान बलधारी, पुष्प चढ़ाय करुं नवकारी ।।
अष्टम द्वीप दिशा दक्षिणाई, अंजनगिरि के पूरब भाई।
रतिकर दुतिय जिनालय सोहै, सकल सुरासुर के मन मोहे ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशाद्वितीयरतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः पुष्पम्।

भूख तृषा आदिक दुखकारी, दोष अठारह जिन परिहारी।
तिन पद मैं नैवेद्य चढ़ाऊँ, भक्तिभावसों जिनगुण गाऊँ।। अ.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशाद्वितीयरतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः नैवेद्यम्।

प्रभु अनंत गुणधाम विकासी, ज्ञान ज्योति अनुपम परकाशी।
तिनके चरणकमल चितध्याऊँ, भक्तिसहित नित दीप चढ़ाऊँ।। अ.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशाद्वितीयरतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः दीपम्।

कर्म रहित भगवन्त कृपाला, अनुपमज्ञान दरश गुणमाला।
अक्षयज्ञान दरश बल काजे, जजत धूपसों श्रीजिनराजें।। अ.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशाद्वितीयरतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः धूपम्।

परमसगुणफल सम्पति भारी, जो भविजन ताके अधिकारी।
सो जिनवरपद को चितलाई, उत्तम फल लें पूजत भाई।। अ.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशाद्वितीयरतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः फलम्।

जलफल आठों द्रव्य मिलावे, भक्तिसहित जिनमंदिर जावे।
श्रीजिनवर की पूज रचावे, सो दिवलोक सम्पदा पावे।। अ.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशाद्वितीयरतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

जयमाल

दोहा

दूजो रतिकर जिनभवन, पूजा सुख दातार।
भक्तिसहित जे नर करें, ते पावें भव पार।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्धड़ी छन्द

जय द्वीप अष्टमों है प्रधान, नन्दीश्वर ताको नाम जान।
सप्तम समुद्र के ओर पास, गोलाकृति सोहे अति उजास ।।
इक शतक तिरेसठ कोड़ि जान, अरु लाख चौरासी अधिकमान।
इतने योजन शाश्वते जान, प्रतिदिश में चौड़ाई प्रमान।।
ताकी दक्षिणदिश कहो सार, अंजनगिर अंजनवर्ण धार।
अरजा वापी तिहि पूर्व जान, तसु कोणबीच रतिकरमहान ।।
तापर जिनमन्दिर शोभमान, शतआठ अधिक प्रतिमामहान।
सब धनुष पांच सौ तुङ्ग जान, पद्मासन छवि वरणी पुरान ।।
जिनदंत बज्र मणिमय स्वरुप, अरु अधर पद्ममणि लालरुप।
दृगकंज अरुण सितश्यामसार, सुरसुरी कथित जिनछवि निहार।
भ्रूलता और शिरकेस श्याम, परिणये रत्न पुद्गल सुधाम।
नख लाल मनो उत्तम प्रबाल, मनु पद्मकमलकी कली बाल ।।
बाकी शरीर की द्युति अपार, तायें सुवर्णमय छबि निहार।
हुलसायमान अति तेजवन्त, लख सुरसुरेश अति हर्षवन्त ।।
वैराग्यभाव झलकै अपार, निरखत विभाव सब नशैसार।
सुर सम्यग्दर्शन लहै सोय, धनजन्म जिन्हें तुम दरशहोय ।।
हम पुण्यहीन पहुँचो न जाय, वशभक्ति यहां बहुमोद लाय।
तुम चरण कमलको शीशनाय, उर ध्यान धरें शिवसुख उपाय ।।
सुरलोक तनी बहु द्रव्य लाय, सुरपूजत हैं तुम चरण जाय।
हम शक्तिहीन उर भक्तिलाय, तुम चरण जजें जिनभवन जाय ।।
यह भक्ति हमें भव भव सहाय; हूजों यह अरज सुनों जिनाय।
संसार खार दुखरुप सोय, यामें नहिं दूजा शरण कोय ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यातें यह अरजी वार वार, हम करत सुनों जगपति उदार।
तुम दरश आज पायो अनूप, सब श्रेय आज आयो अनूप ॥
मम विघ्नमूल निरवार देव, निधि देहु हमें हितकार देव।
यह अरज हमारी सुनो देव, कर जोड़ जिनेश्वर करत सेव ॥

दोहा

रतिकर श्रीजिनभवन की, पूरण यह जयमाल।
जो बांचै सतभाव सों, ताको भाग्य विशाल ॥

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पूर्व दिशाद्वितीयरतिकरगिरि जिन बिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

सोरठा

दीन-बन्धु महाराज, दीन जान करुणा करो।
बड़े गरीब निवाज, तुम्हीं सुने संसार में ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥ २० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशांजनगिरि तृतीय रतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

जोगीरासा छन्द

अष्टम दीप दिशा दक्षिण में, विरजा वापी सोहे ।
ताके कोन बीच रतिकर गिरि, कनक वरण मन मोहे ।।
तापर श्रीजिनभवन अकृत्रिम, सुरपति पूजन आवें ।
हम तिनका आह्वानन करके, अपने घर गुण गावें ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशांजनगिरि तृतीयरतिकर गिरि जिनबिम्बसमूह ! अत्रावतरावतर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अथाष्टकम् (दोहा)

जन्म मरण के दुख सहे, जे जिनेश जग मांहि ।
हिमकर सम जल लाय कर, रचूं पूज जिन मांहि ।।
नन्दीश्वर दक्षिण दिशा, रतकर तृतिय महान ।
जिनगृह सुर सुरपति जजें, नमों तिन्हें धर ध्यान ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशातृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

कर्मताप तापत फिरो, चारों गति के मांय ।
शीतल जिनपद पूजिये, शीतल चन्दन लाय ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशातृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम् ।

जग की नश्वर सम्पदा, मिली अनन्ती वार ।
अक्षयनिधि दातार पद, पूजों अक्षत थार ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशातृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मीनकेतू दुख देत है, ताके नाशन हेत ।
प्रभु मनोजविजयी जजों, ले प्रसून कर सेत ।।
नन्दीश्वर दक्षिण दिशा, रतकर तृतिय महान ।
जिनगृह सुर सुरपति जजें, नमों तिन्हें धर ध्यान ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशातृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

क्षुधाहरण निज बलकरण, चरु बनाय बहु भेव ।
भक्तिभाव उर लायके, जजों क्षुधाहर देव ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशातृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

कनक रतनमय दीप वर, जिनवर पद सुखदाय ।
पूजों भविजन भावसों, ज्यों निजनिधि दरसाय ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशातृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

कर्मदहन के कारणें, कर्मदहन पतिदेव ।
धूप अनूप बनाय के, पूजों जिन अहमेव ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशातृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

फल अनेक परकार के, पक्व सुरस शुचिरूप ।
दिव शिव फल के कारणे, जजों जिनेश्वर भूप ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशातृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल फल आठों द्रव्य ले, अर्घ बनाओ सार ।
मुक्तिरमा के कारणें, पूजों जिन अविकार ।।
नन्दीश्वर दक्षिण दिशा, रतकर तृतिय महान ।
जिनगृह सुर सुरपति जजें, नमों तिन्हें धर ध्यान ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशातृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

जय जय हितकारी, संपतिसारी, लोकोत्तर तुम पाई है।
सबको सुखकारी गिरातुम्हारी, ऋषिमुनिजन इमि पाई है।।

पद्धडी छन्द

जय जय असहाय महान वीर, पुरुषारथपूरण गुणगहीर।
जय मोहबली जगमें विख्यात, ताको तुम कीनों प्रथम घात।।
दर्शनत्रयप्रकृति चतुर्थथान, मिथ्यात्वमिश्रसम्यक सुजान।
इनको तुम कीनो मूलनाश, क्षायिकसम्यक कीनों प्रकाश।।
चारित्रमोह द्वादशम थान, प्रभु नाश कियो पहले महान।
फिर ज्ञान दर्शनावरण दोय, अरु अंतराय त्रयघात होय।।
इमि चार घातिया कर्महान, प्रगटो तब केवलज्ञान भान।
जय जय नवक्षायिकलब्धिपाय, बहु सुखी भये त्रैलौक्य राय।।
क्षायिकसम्यकगुण प्रथम जान, क्षायिकचारित दजो महान।
जय तीजो क्षायिकदर्श होय, अरु चौथो क्षायिकज्ञान होय।।
भोगोपभोग क्षायिक जु दोय, अयदान लाभ क्षायिक जुहोय।
बलनंत क्षायिकी नवम लब्धि, ऐसे नवलब्धि अनंतअब्धि।।
निजआत्मरमण यहभोगजान, अविछिन्नवृत्ति उपभोगमान।
परवस्तु त्याग यह दान धीर, वा वृष उपदेशी वचन वीर।।
जिनगुणप्रापतियह लाभ जान, बलनन्त प्रगट वीरज महान।
सब वस्तु त्रिकालिकलखनहार, सो केवलदर्शन है उदार।।
त्रैकाल्य द्रव्य पर्याय सर्व, तिनको युगपत जानों सुसर्व।
सो केवलज्ञान कहो जिनेश, अक्षय अनन्त उद्योत वेश।।
इत्यादि अतुल सम्पति महान, स्वाधीन अन्तरंगी सुजान।
अरु समोसरण रचना अपार, बाहिज लक्ष्मी को नहीं पारा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिहि देखत हरि अचरज करंत, शिरनाय ध्यान चितमें धरंत।
हे कृपासिन्धु प्रभु वीतराग, तुम दास भयो मम जगो भाग ।।
अब जन्मसफल मम भयो सार, जब देखे प्रभु तुम नयन द्वार।
करि कृपा देव मम वास पास, उर यहीं जिनेश्वर धरत आस ।।

घत्ता छन्द

जय जय जगतारी, शिवमगचारी, अरज हमारी सुन लीजे।
निजनिधि हितकारी, सम्पति लारी, धर्मप्रचारी, प्रभु दीजे ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशातृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

सोरठा

नन्दीश्वर महाराज, ज्ञानदान मम दीजिये ।
निज परहित वृष साज, शिवमग दे यश लीजिये ।।

।। इत्याशीर्वादः ।। २१ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशांजनगिरि चतुर्थरतिकर गिरि जिनमन्दिर पूजा

जोगीरासा छन्द

नन्दीश्वर की दक्षिण दिश में, अंजन पर्वत सोहै।
ताके दक्षिण विरजा वापी, सुरपति के मंन मोहै।।
ताके कोण विषें शुभ राजें, चौथो रतिकर भाई।
तापर श्रीजिनमन्दिर जानों, सुरपति पूज रचाई।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिणदिशा चतुर्थ रतिकरगिरि जिनबिम्बसमूह। अत्रावतरावतर सम्वौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम् (सोरठा)

हिम सम शीतल सार, हेमाचल को नीर ले।
जन्म रोग निरवार, जिनपद की अर्चा करों।।
दक्षिण दिश सुखकार, नन्दीश्वर की जानिये।
रतिकर जिनगृह सार, सुरपति नित पूजा करें।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा चतुर्थरतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

चन्दन गन्ध मिलाय, होत सुवास दशों दिशा।
पूजों जिनवर पांय, भवाताप यासों मिटे।। दक्षिण.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा चतुर्थरतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

निर्मल सरल अनूप, शशिकर असम अक्षत महा।
पूजों तिहुँ जग भूप, अक्षय पद यासे मिले।। दक्षिण.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा चतुर्थरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुसुम सुगन्धित सार, सुवरण थाल विषें धरो ।
पूजों भवदधि तार, भवबाधा यातें हरो ।।
दक्षिण दिश सुखकार, नन्दीश्वर की जानिये ।
रतिकर जिनगृह सार, सुरपति नित पूजा करें ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा चतुर्थरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

नेवज जाति अनूप, शुचि सुगंध षट्‌रस लिये ।
पूजों वृषपति भूप, यातें शिवसुख पाइये ।। दक्षिण.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा चतुर्थरतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

दीपक विविध प्रकार, यथायोग्य शुचि कीजिये ।
भक्तिभाव उर धार, जिनवर की पूजा करों ।। दक्षिण.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा चतुर्थरतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

कृष्ण अगुरु कर्पूर, और सुगन्धित द्रव्य ले ।
शुचि चन्दन को चूर, धूप खेय जिनपद जजों ।। दक्षिण.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा चतुर्थरतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

पिस्ता और बदाम, लोंग छुहारे आदि ले ।
सहित जिनेश्वर धाम, जिनवर की पूजा करों ।। दक्षिण.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा चतुर्थरतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल फल द्रव्य मिलाय, अर्घ करों अतिचाव सों ।
पूजों श्री जिनराज, विनयसहित भविभाव सों ।। दक्षिण.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा चतुर्थरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल

तीन लोक पति तुम धनी, पूरण ब्रह्म पुमान ।
परमब्रह्म पद कारणें, धरें महामुनि ध्यान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरपति नित नुति थुति करें, धरें हृदय में ध्यान।
ऐसे श्रीअरिहन्त पद, जजूं सदा गुणखान ।।

पद्धड़ी छन्द

जय दीप आठमों मध्य जान, दक्षिण दिश अंजनगिरि महान।
तिहिगिरि की दक्षिण दिश विचार, विरजा वापी गम्भीर सार।।
योजन इक लाख तनो प्रमान, चौड़ी लम्बी इकसार जान।
मणिरत्न जड़ित मानो सिवान,जलसहसएकयोजन प्रमान ।।
चहुँ ओर वेदिका द्वार सोय, आगे वन चारों दिशा जोय।
योजन पचास हज्जार सार, चउ वन की चौड़ाई निहार ।।
लम्बे वापी सम जान वीर, मणिमई कोट गोपुर गहीर।
तिनमांहिमहल बहु शोभमान, सुर व्यन्तर भवन रहें सुजान ।।
तिहि वापी बीच कह्यो जिनेश, दधिमुखगिरिजानो श्वेतवेश।
ऊंचो है योजन दश हजार, चउफेर ढोलसम गोल सार ।।
ता वापी के बाहरी कोन, रतिकरगिरि तापर जैन भोन।
सब समवसरण रचना महान, जाके देखत सब पाप हान ।।
जहां शक्रशचीमिलि भक्तिभाव, बहु नृत्य करें आनंद उपाव।
सब साजबाज अद्भुत अपार, कवि कौन लहे ताको जुपार।।
अरिहन्तबिम्ब जहां सभा ईश, अरु नृत्य करे मधवा दिवीश।
जहां देवनकृत शुभगान होय, अरु देव दुन्दुभी बजें सोय ।।
सब नृत्य भेद नवरस प्रकार, सुरसुरी दिखावें भक्ति धार।
वह वर्णन किहिमुख कहे सोय, जे लखें धन्य तिनजन्मसोय।।
जय जय जिनराज दयानिधान, प्रभु पुण्यरुप जग में प्रधान।
जो तीर्थंकर पद पाय देव, तप धरो स्वपर सुखदाय देव ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लहि केवल वृष उपदेश सार, दीनों भवसागर करन पार ।
जय अतुलकीर्ति जग रही छाय, नहिं गणधर पैबहु कही जाय ।।
तुम अशरण शरण सहाय देव, तुम सब जगको सुखदाय देव ।
निज रिद्धि देव वरदाय देव, करजोर जिनेश्वर करत सेव ।।

दोहा

तारण तरण जहाज सम, या भव सागर मांहि ।
मोकूं पार करो सही, यामें संशय नांहि ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा चतुर्थरतिकर जिनबिम्बेभ्य अर्घ्यम् ।

सोरठा

कर्म कलंक निवार, भये शुद्ध परमात्मा ।
सो प्रभु हमको तार, इस असार संसार में ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। २२ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशांजनगिरि पंचम रतिकर गिरि जिनमन्दिर पूजा

जोगीरासा छन्द

नन्दीश्वर की दक्षिण दिश में, अंजनगिरि है भाई।
ताके पश्चिम नाम अशोका, वापी नीर सुहाई।।
ताके प्रथम कोण में सोहे, पंचम रतिकर जानो।
ताके ऊपर श्रीजिन मन्दिर, रत्न मई सुखदानो।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिणदिशा पंचम रतिकरगिरि जिनबिम्बसमूह। अत्रावतरावतर सम्वौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम् (गीता छन्द)

पंचम पयोनिधि नीर ता सम, रतन भाजन में भरों।
जलसों जिनेश्वर पद कमल की, भक्तियुत पूजा करों।।
वर दीप अष्टम दिशा दक्षिण, पांचमों रतिकर जहां।
जिनराज गृह सुर असुर मिलके, जिनचरण पूजें तहां।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशास्थपंचम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

शुचि गन्ध कदलि कपूर मलया गिर सुचन्दन लाइये।
भवदाहदहन काज श्रीजिन, चरण अग्र चढ़ाइये।। वर.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशास्थपंचम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः चंदनं।

चोखे अदोषे सरल धोके, स्वच्छ अक्षत लीजिये।
अक्षय महानिधिपतिजिनेश्वर, अग्र पुंज सुदीजिये।। वर.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशास्थपंचम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

वर कुसुम शुद्ध सुगंध रंगित, अतनुवेदन हरण कों।
मनलाय भक्तिबढ़ाय भविजन, जजें जिनवर चरण कों।। वर.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशास्थपंचम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुचि खाद्य स्वाद्य सुगंध ताजे, सुरभि घृत के सोहने ।
अतिमिष्ट रस नैवेद्य लेकर, पद जजों जिनवर तने ।।
वर दीप अष्टम दिशा दक्षिण, पांचमों रतिकर जहां ।
जिनराज गृह सुर असुर मिलके, जिनचरण पूजें तहां ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशास्थपंचम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

बाती कपूर सुधार उज्वल, ज्योति जगमग होत है ।
तसु द्वीप सो जिनचरण पूजत, ज्ञान ज्योति उद्योत है ।। वर.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशास्थपंचम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

धनसार कृष्णागुरु तगर, चन्दन सुगन्ध अपार है ।
तिहि धूपसों जिनचरण पूजों, होत पुण्य प्रचार है ।। वर.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशास्थपंचम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

फलसार बहुविध थार भरिके, भक्तिभाव बढ़ाय के ।
पूजा करों जिनराज पदकी, भवि जिनालय जायके ।। वर.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशास्थपंचम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप फलावली ।
करि अर्घ जिनवर चरण पूजों, पार होय भवावली ।।
वर दीप अष्टम दिशा दक्षिण, पांचमों रतिकर जहां ।
जिनराज गृह सुर असुर मिलके, जिनचरण पूजें तहां ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशास्थपंचम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल

हिमकर मुक्ताहार अरु, चन्द्रकान्ति जलधार ।
इन सब तें शीतल प्रभू, तुम वचनामृत सार ।।
जन्मदाह दुख हरण कों, और न कोई उपाय ।
सुधाधार तुम वचहि से, तृष्णा तृषा नशाय ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भुजंगप्रयात छन्द

जयो देव जग में तुम्हीं हो विख्याता,
जयो देव जग में तुम्हीं हो विधाता ।
बताई तुम्हीं ने सभी धर्म नीती,
जताई तुम्हीं ने शुभाशुभ प्रतीती ।।
महापाप के भेद जे त्यागरुपा,
तुम्हीं ने बताया तिन्हों का स्वरुपा ।
प्रथम पाप हिंसा महा जीवघाती,
इसे जो गिनै पुण्य सो पक्षपाती ।।
वचन झूठ कहनायही पाप दूजो,
न झूठे मनुज को कभी आप सूझे ।
महापाप चोरी गिनो तीसरो है,
प्राणी नरक में इसी से परो है ।।
महापाप चौथो जु परनार सेवी,
लखे दुःख भारी करे जो फरेबी ।।
इसी जन्म में राज को दण्ड पावे,
कुधी आप अरु वाप कुल को लजावे ।।
महाव्याधि तृष्णा परिग्रह बधावे,
यही पंचमों पाप श्रीगुरु बतावे ।
महालोभ के जोर में घोर घूमे,
महा होय गाफिल दिनों रात झूमे ।।
महादुष्ट इन्द्रिय विषयभोग भारे,
बड़े दुःखदाता मनो नाग कारे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्हीं की वजह से किये पाप सारे,
बड़े मर्त्य नामी सुनकें सिधारे ॥
इन्हीं पाप को जो तजे सत्य ज्ञानी,
व्रती वो कहावे कही जैन वानी ।
तजें पाप किञ्चित अणुव्रत कहावे,
सभी पाप त्यागी महाव्रत लहावे ॥
अहिंसा विषें एक मातंग नामी,
व्रती सत्य धनदेव नामी अकामी ।
अचौर्यव्रती में कुँवर वारिषेणा,
महाशील में नारि नीली प्रवीना ॥
परिग्रह प्रमाणी बड़ो नाम धारी,
भयो है मही माहिं जयभूप भारी ।
इन्हीं की प्रशंसा सुगुरु आप कीनी,
सही श्रावकाचार में देख लीनी ॥
व्रतों की वजह से गृही के आगारी,
नमें देव आके करें भेंट भारी ।
महाघोर उपसर्ग से वो वचावे,
व्रती जीव के चर्ण को शीश नावे ॥
महास्वर्ग अपवर्ग के सौख्यसारे,
सभी जीव पावें व्रतों के सहारे ।
अहो वीर स्वामी तुम्ही सौख्य दाता,
सुधर्मोपदेशी तुम्हीं हो विख्याता ॥
प्रभू जी तुम्हारेचरण चन्द्र रेखा,
वसे उर उसी ने स्वपर भेद देखा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभू जी एक मेरी यही अर्ज मानो,
स्वपर भेद विज्ञानदीजे प्रमानो ।।
निजपद ज्ञायक भाव जग, जयवन्तो त्रयकाल ।।
या प्रसाद संसार में, भवि पावे शिव चाल ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा पंचमरतिकर जनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

सत्प्रतीति उर ज्ञान, सत्प्रवृति ये रत्न त्रय ।
दीजे श्री भगवान, तुम दानी जग में बड़े ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। २३ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशांजनगिरि षष्ठरतिकर गिरि जिनमन्दिर पूजा

जोगीरासा छन्द

नन्दीश्वर वर द्वीप आठमों, ताके दक्षिण भागे ।
षष्ठम रतिकर पर्वत सोहे, जिनमंदिर तिहि जागे ।।
शक्र शची मिल पूज रचावे, धर चित हर्ष अपारा ।
अकृत्रिम जिनबिम्ब तिन्हों को, वार वार नवकारा ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिणदिशा षष्ठ रतिकरगिरि जिनबिम्बसमूह । अत्रावतरावतर सम्वौषट । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अथाष्टकम (सुन्दरी छन्द)

सुरनदी जल उज्वल लाइये, जिनपदाम्बुज मांहि चढ़ाइये ।
असतकर्म उदय दुख नाशिये, सहज शांति स्वरुप प्रकाशिये ।।
दीप नन्दीश्वर दक्षिण दिशा, गिरि सुरतिकर षष्ठ तहां लसा ।
तास पर जिनभवन सुहावनो, करत पूज सुरासुर पावनो ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

मलय चन्दन कुंकुम मिश्रितं, घसि कपूरकदलितरुआश्रितं ।
जिन पदाम्बुज पूजन कीजिये, मनुज जन्मतनोफललीजिये ।। दी.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः चन्दनम् ।

क्षीर हीर रजत सम जानिये, सितसरलअक्षत शुचि आनिये ।
चरण नीरज चन्द्रजिनेश के, जजत भविसुखलहत सुरेश के ।। दी.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

कमल आदि अनूपम लीजिये, कुसुम चारुचरण चितदीजिये ।
जिन पदाम्बुज पूज रचाईये, अतनु मारि अभय पद पाइये ।। दी.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सरस षट्रस मिश्रित व्यंजनं, चरु बनाय सुधी मनरंजनं।
चरण श्रीजिनराज तने जजों, मुकतिमारग संबलकों सजों।।
दीप नन्दीश्वर दक्षिण दिशा, गिरि सुरतिकर षष्ठ तहां लसा।
तास पार जिनभवन सुहावनो, करत पूज सुरासुर पावनो।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम्।

तमनिवारक दीप महान है, जगमगात मनो द्युतिभान है।
जिन पदाम्बुज अग्र चढ़ाइये, परमज्ञान महानिधि पाइये।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम्।

दस प्रकार सुगन्ध अनूप है, मलय चन्दन की बहुधूप है।
करत पूजन श्रीजिनराज की, हरत मूल भवार्णव साजकी।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम्।

बहु फलावलि पावन लाइये, चरण श्रीजिनराज चढ़ाइये।
शिवरमापतिसम्पति लहनको, यह उपाव सुधीभविगहन को।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम्।

जलफलादिक द्रव्य मिलाइये, अरघ ले जिनमंदिर जाइये।
करत पूजन भक्ति बढ़ाइके, लहतसौख्य शिवालय जायके।। दी.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

जयमाल

करुणानिधि त्रिभुवन धनी, अशरण शरण अधार।
करुणाकर मुझ दीन पै, दीनबन्धु गुण धार।।

तोटकछन्द

जय श्रीधर श्रीकर श्रीपति जी, अघ लायक दायक सन्मतिजी।
वर केवलज्ञान प्रकाश कियो, भविजीवनको भ्रममेटिदियो।।
सब जीव अजीव सुभावतनो, गुणपर्ययरुप प्रभेद भनो।
तहां जीव सुतत्त्व सुभाव महा, पण भेद सुजीव प्रभाव कहा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पहलो उपशामिक भाव कह्यो, दृगचारित रुप दुभेद भयो ।
पुनि क्षायिकभाव द्वितीय गनो, तिहि के नवभेद सुएम भयो ।।
शुचि सम्यकचारितज्ञान महा, अरु केवलदर्शन दान कहा ।
उपभोग सुभोग अनन्त बलीं, अरुलाभनवोंइ मिलब्धिभली ।।
तीजो गिन भाव क्षयोपशमं, तिहि भेद अठारह जानगमं ।
चउ ज्ञान कुज्ञान त्रिदर्श त्रयं,पणलब्धि सुपन्द्रह भावअयं ।।
अरु सम्यकचारितभाव युगं, इक संयमासंयमभाव महं ।
इमि भेद अठारह जान सबै, औदायिक सुन इक्कीस अबै ।।
गति चार कषाय जुचार सही, त्रिलिंग छलेश्याविभाव यही ।।
कुदृष्टि अज्ञान असंयम हे, असिघत्व मिले इकईस यहै ।
परिणामिक पंचम भाव कहो, भविजीवअभव्य त्रिभेदलहो ।।
पणभाव तिरेपन भेद भये, सब श्रीजिनआगम मांहि कहे ।।
इनमें कोई त्यागनयोग्य गिनो, कोई आरदणीय जिनेश भनो ।
कइ श्री अरिहन्त भये प्रगटें, जिहिप्रापति को गणराज रटें ।।
वह श्री गुरु मों उर वास करो, हित काज सबै उर आस भरो ।
सत संयम सम्पति सिद्ध करो, निजस्वाश्रित श्रीपति रिद्धिभरो ।।
जबलों जगमें मम वास रहे, जबलों उरमें अरित्रास रहे ।
तबलों तुम देव सहाय करो, विधि चंड अरी दुखदाय हरो ।।
जगमांही गरीबनिबाज तुम्हीं, शिवदायकहो सुखसाज तुम्हीं ।
यह अरज सुनोजिनराज तुम्हीं, मतिवृद्धि करो प्रभु आज तुम्हीं ।।

दोहा

जगतारण कारण प्रबल, एक जिनेश्वर देव ।
यातें मन वच काय तें, करुं सदा मैं सेव ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णाअर्घ्यम् ।

सोरठा

उर में धीरज धार, श्रीजिनवर पद जो जजै ।
सो होवे भवपार, यह जिनवचन प्रमाण है ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। २४ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशांजनगिरि सप्तम रतिकर गिरि जिनमन्दिर पूजा

जोगीरासा छन्द

अष्टम दीष तनी दक्षिण दिश, सप्तम रतिकर सोहे।
वापि वीतशोका के पहिले, कोण विषें मन मोहे।।
तापर श्रीजिनमन्दिर सोहे, अकृत्रिम सुखकारी।
तामें श्रीजिनबिम्ब विराजे, तिन पद धोक हमारी।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीप दक्षिणदिशा सप्तम रतिकरगिरि जिनबिम्बसमूह। अत्रावतरावतर सम्वौषट। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठःस्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम्

दयानिधि हो, जय जगबन्धु दयानिधि हो।
चन्द्रकिरण सम शीतल सार, उज्वल नीर भरो भृंगार। द.
भक्तिसहित जिनचरण चढ़ाय, जन्मजरा मरणों दुख जाय।। द.
नन्दीश्वर दक्षिण दिश जान, सप्तमरतिकर गिरि सुखदान।। द.
तापर श्रीजिनमन्दिर सार, शक्र शची पूजें हितकार।। द.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिश सप्तम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

चन्दन केशर गन्ध अनूप, शीतल शुचिकारक सुखरुप।
पूजों जिनवर चरण विशाल, भवाताप मिटे तत्काल।। द.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिश सप्तम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

अमल अखण्डित तन्दुलसार, देवजीर आदिक हितकार।
शुचि अक्षत ले जिनगृह जाय, पूजों जिनवर पद हर्षाय।। द.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिश सप्तम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

5134

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पावन पुण्य सुगन्धित सार, कंचनथाल भरों हितकार।
कुसुमायुध अरि जीतन काज, पूजों चरणकमल जिनराज।।द.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिश सप्तम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम्।

नेवज सद्य पवित्र अनूप, घ्राण नयन मन मोहनरुप।
पूजों श्रीजिनचरण महान, परमशांतिदायक सुखखान।।द.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिश सप्तम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम्।

उज्वल दीपक स्वच्छ बनाय, मोह महातम हरण उपाय।
ज्ञान ज्योति परकाशन काज, पूजों चरण जगत सिरताज।।द.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिश सप्तम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम्।

कृष्णागरु चन्दन कर्पूर, धूप सुगन्धी कर कर चूर।
आठों कर्म जलावन काज, पूजों हितकर श्री जिनराज।।द.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिश सप्तम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम्।

लोंग लायची और बदाम, पिस्ता आदि सुफल अभिराम।
मुक्ति महाफलदायक देव, पूजों श्रीजिनवर करिसेव।।द.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिश सप्तम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम्।

जलफल आठों द्रव्य मिलाय, उत्तम अर्घ करों मन लाय।
श्रीजिनराजचरण सुखदाय, पूजत जन्मजरा जरजाय।।द.
नन्दीश्वर दक्षिण दिश जान, सप्तमरतिकरगिरिसुखदान। द.
तापर श्रीजिन मन्दिर सार, शक्रशची पूजें हित धार।।द.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिश सप्तम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

जयमाल

भव भंजन भगवान भज, सजि साहस शिवरुप।
कर कृपाण गहि ध्यान को, मारि मोह दुखरुप।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भुजंगप्रयात

जयो देव देवेन्द्र श्रीवीर स्वामी,
महामोह जीतो बड़े वीर नामी ।
बनायो जबै वीर बानों अकम्पा,
तिसे देखिकें मोह बहु ओर कम्पा ।।
बली वीर गजराज तप की सवारी,
धरो शीश पै संयमी टोप भारी ।
महा वीतरागी कवच देह धारो,
प्रभू आपनो आप पौरुष सम्हारो ।।
सुचारित्र नामी धरा मुक्तिपुर की,
वही भूमि जानों प्रभू के समर की ।
लही ध्यान तलवार तीक्ष्ण प्रहारी,
दई मोह के शीश में चोट भारी ।।
गिरो मोह बैरी तबै कर्म घाती,
हने शेष तीनों महा पक्षपाती ।
बजे गीत के देव बाजे अनूपा,
भयोशोर त्रैलोक्य में घोर रुपा ।।
सभी देव आये महाभक्ति धारे,
चहूं ओर नम मांहि जै जै उचारे ।
धरे हाथ माथैं भये नम्र रुपा,
करें देव की वंदना विश्व भूपा ।।
महाभक्ति से मिष्ट वाणी उचारें,
जयो देव तुमही सहायक हमारे ।
जयो देव तुम एक त्रैलोक्य स्वामी,
निशानी महा शीश त्रय छत्र नामी ।।
सुलक्ष्मीपती हो तुम्हीं एक देवा,
अलौकीक लक्ष्मी करे एक सेवा ।
बली वीर तुमही जगत में प्रधानी,
बिना शस्त्र धारे हत्यो मोह मानी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम्हीं हो सुखी एक स्वाधीन स्वामी,
हत्यो दुःख को मूल होके अकामी ।।
तुम्हीं श्रेष्ठ स्वामी जगत में बताये,
सुध्याये तुम्हें श्रेष्ठ वह भी कहाये ।।
तुम्हीं इष्टदायक प्रभू इष्ट रुपा,
महाइष्ट कल्याण के आप भूपा ।
तुम्हें जो सदा ही निजी चित्त ध्यावे,
वहीं स्वर्ग अपवर्ग के सौख्य पावे ।।
सबै देव इन्द्रा खगेन्द्रा मुनीशा,
तुम्हारे चरण को जजैं नाय शीसा।
करें आश प्रभु की महा ऋद्धि धारी,
इसी से प्रभू एक अरजी हमारी ।।
महात्रास संसार के वास मांही,
यहाँ तो किसी को कहीं सौख्य नाहीं ।
मुझे आपने पास को वासदीजे,
प्रभू जी सुयश एक यही आप लीजे ।।
नहीं और चिन्ता हृदय मांहि मेरे,
नहीं और इच्छा सुनों देव मेरे ।
यहीं एक चिन्ता सुइच्छा यही है,
जिनेश्वर कृपा आप कीजे सही है ।।

दोहा

जिनवर दीन दयाल तुम, शरणागत प्रतिपाल।
दीनबन्धु मोकूं प्रभू, कीजे कृपा कृपाल ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिश सप्तम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

या भव कानन मांहि, इकलौ जिय भरमत फिरे।
यह निश्चय मन मांहि, अन्य शरण कोई नहीं ।।

।।इत्याशीर्वाद।। २५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिण दिशांजनगिरि अष्ठमरतिकर गिरि जिनमन्दिर पूजा

जोगीरासा छन्द

नन्दीश्वर की दक्षिण दिशमें, अंजनगिरि वर नीको ।
ताकी उत्तर दिश में राजे, रतिकर यह जिनजी को ।।
देव दनुज नित पूज रचावें, गावें जिन गुण भारी ।
ऐसे श्रीजिन के चरणन को, नित प्रति धोक हमारी ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशाष्टमरतिकर गिरि जिन बिम्बसमूह ! अत्रावरावतर सम्वौषट् इत्याह्वानम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधापनम् ।

अथाष्टकम् (चाल छन्द)

द्रह पद्मासमान सुजानो, अतिनिर्मल नीर प्रमानो ।
जिनवर पद पूजा कीजे, निजजन्म सफल कर लीजे ।।
नन्दीश्वर दीप सु जानो, दक्षिण दिश में पहिचानो ।
अष्टम रतिकर गिरि सोहे, जिनमन्दिर तँह मन मोहे ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

चन्दन कर्पूर मिलावे, तामें केशर घस लावे ।
भवताप विनाशन काजे, पद पूजें श्री महारजे ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

सुखदास कमोद अनूपा, शशिकरसम स्वच्छ स्वरुपा ।
पावन अक्षत भरि थारी, जिनचरण जजों सुखकारी ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नानाविध वर्ण स्वरुपा, अरु सार सुगन्ध अनूपा।
ऐसे वर कुसुम मँगावे, जिनवर की पूज रचावे ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम्।

नेवज मनमोहन हारा, शुचि भर के कञ्चन थारा।
जिनवर के चरण चढ़ावे, सबदोष क्षुधा नशिजावे ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम्।

तमहर द्युति उज्वल सोहे, ऐसे दीपक मन मोहे।
जिनवरपद आगे जोवे, जिन ज्ञानपती भवि होवे ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम्।

दशगन्ध अनूप मिलावे, अतिपावन धूप वनावे।
वसुकर्म जलावन काजे, पदपूजों श्रीजिनराजे ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम्।

सब रितु के फल शुचि सारा, पिस्ता बादाम अपारा।
निजलक्ष्मी प्रापति काजें, पूजों पद श्रीजिनराजे ।।न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम्।

जल फल वसु द्रव्य मिलावे, सुवरण के थाल भरावे।
श्रीजिनवर चरण चढ़ावे, सो भवि शिवलक्ष्मीपावे ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

जयमाल

दोहा

हे जिनेन्द्र जयवन्त जग, जाहिर ज्योति अपार।
श्रुतपारग ऋषि सुरपती, लहत न तुम गुण पार ।।

छन्द मोतीदास

जय जिनदेव दयागुण खान,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयो तुम सेव करें सुर आन ।
जयो तुम ध्यान धरें ऋषिराज,
जयो भवसागर मांहि जहाज ।।
बली श्रुतपारग इन्द्र महान,
भली बुधि धार मुनीश्वर जान ।
प्रभू तुमरे गुण को नहिं पार,
लहे कबहूँ बहु काल मँझार ।।
अनूपम रिद्धिपती महाराज,
सदा सबको सुखदायक साज ।
प्रभू हरि आसन पै अनिवार,
विराजत हैं पद्मासन सार ।।
फिरें शिर छत्र सु तीन अनूप,
मनों शशि आप भयो त्रयरुप ।
महा मुक्ताफल झालर सार,
मनों शशि सूरज ज्योति अपार ।।
मनोहर चामर चौंसठ देव,
सुढारत नृत्य करें सुर सेव ।
दशों दिश दुन्दुभि को बहु शोर,
करें उरभक्ति भरे सुर जोर ।।
सदा बरसावत हे सुर सार,
सुकल्प तरु वर फूल अपार ।
करे चहुँ ओरहि से जयकार,
धरें बहुभक्ति हृदय अनिवार ।।
करें बहुवृष्टि सुगन्धित नीर,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महासुर मेघकुमार गहीर ।
चलावत गन्ध समीर प्रचार,
धरें उरभक्ति सुवातकुमार ।।
खड़े दिव इन्द्र जहां दरवान,
बड़े बल रिद्धिपती गुणखान ।
तहां भवनत्रिक को नहिं मान,
रहें पशु मानुष जो तिहि थान ।।
प्रभू तन दिव्य प्रभा अनिवार,
अनूपम चक्र समान निहार ।
लखें भवि जीव भवान्तर सात,
प्रभू अतिशय यह जान बिख्यात ।।
तहां वर वृक्ष अशोक दिपन्त,
प्रभा जिहि को शशि सूर छिपन्त ।
हरे भवि जीवन के सब शोक,
धरे यह गुण विख्यात अशोक ।।
अनन्त चतुष्टय मण्डित देव,
प्रभू त्रय लोकपती स्वयमेव ।
करो सबको उपदेश अनूप,
करो भवि को सुख श्रेयस्वरुप ।।
प्रसिद्धि यही सुनके तुम नाम,
लियो शरणों सुनिये गुणधाम ।
करो हमरो मनवांछित काज,
हरो हमरो दुखसाज समाज ।।
भरो प्रभुजी यह आश अनूप,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धरो यह अरज हृदय जगभूप ।
निधी मम रत्नत्रयी वर रुप,
करो अपने तुम आप सरुप ।।

दोहा

प्रभू पतित पावन तुम्हीं, मैं हूं पतित अमान ।
मोकूं निजबल दीजिये, सम्यकज्ञान महान ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दिशाष्टमरतिकर जिनबिम्वेभ्य: पूर्णार्घ्यम्।

सोरठा

करुणानिधि महाराज, शरण सहायक हो सही ।
भवजल मांहि जहाज, मोंकू पार करो सही ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। २६ ।।

दोहा

दक्षिण नन्दीश्वर विषें, जो प्रतिमा जिहि थान ।
तिन सबको त्रय योग कर, पूजों निजहित दान।।
श्री जिनके पदकमल कों, नमों सदा मन लाय ।
बुधि वारिधि वर्धित करो, चन्द्रनाथ जिनराय ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप दक्षिणदिशास्थसर्वरतिकर जिनबिम्वेभ्य:महार्घ्यम्।

।। इति दक्षिणदिशापूजा सम्पूर्णा ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नन्दीश्वर द्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि जिन मंदिरपूजा

गीताछन्द

वर द्वीप अष्टम दिशा पश्चिम, श्यामछवि गिरि गोल है ।
तसु नाम अंजन तास ऊपर, जिनागार अमोल है ।।
तँह एकशतवसु अधिक राजैं, जैन बिम्ब महान है ।
तिनके चरण मन लाय पूजों, देत शिव कल्यान हैं ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि जिन बिम्बसमूह ! अत्रावरावतर सम्वौषट् इत्याह्वानम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधापनम् ।

अथाष्टकम् (चाल अठाई पूजा)

समभाव महाशुचि नीर, मानसभृंग भरो ।
अरिहन्त चरण धर धीर, पूजन ध्यान धरो ।।
नन्दीश्वर द्वीप महान, पश्चिम दिश सोहे ।
तापर जिन मन्दिर जान, सुरपति मन मोहे ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

वसु कर्म विनाशन हार, परिणति आतम की ।
यह चन्दन गन्ध अपार, शिवपद पावन की ।। न.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

अतिनिर्मल शुद्ध स्वभाव, अक्षत स्वच्छ कहा ।
श्री सिद्धचरण चित लाय, पूजत सौख्य महा ।।न.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

शुचि ब्रह्म स्वभाव सुगन्ध, कुसुमावलि जानो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूजत जिनचरण अमन्द, निर्भय पद मानो ।।न.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम्।

निजज्ञान देह बलकार, परिणति चरु सोहे ।
शत इन्द्र पूज पद सार, पूजत शिव मोहे ।। न.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

सत ज्ञान ज्योति अधिकार, दीपक तेज करो ।
धरि ध्यान स्वरुप विचार, प्रभु पद पूज करो ।।न.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

सित ध्यान दहन सहचार, आतम भाव महा ।
यह धूप गन्ध अनिवार, पूजत सौख्य लहा ।। न.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

विधिभंजन भाव अनूप, उत्तम फल सोहे ।
पूजत भवि सत चिद्रूप, सो शिवपति होहे ।।न.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

वसु कर्म विनाशन वीर, गुण धारक हैं ।
वसु द्रव्य लाय भवि धीर, पूजत सौख्य लहैं ।।न.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल

दोहा

नन्दीश्वर पश्चिम दिशा, अञ्जन गिरि सुविशाल।
तापर जिनगृह पूजि के, अब वरणों जयमाल ।।

पद्धड़ी छन्द

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय नंदीश्वर वर दीप जान, ताकी पश्चिम दिश है महान ।
जहां अंजनगिरि वर श्यामरंग, चौफेर ढोलसम गोल रंग ।।
जोजन चौरासी सहस जान, उन्नत चौणिरदा शोभमान ।
चारों दिश वापी चार जान, वर्गाकृति लख योजन प्रमान ।।
जल जोजन गहरो इक हजार, अति निर्मल टंकोत्कीर्ण सार ।
तिहि बीच परे दधिमुख पहार, अतिश्वेतवर्ण महिमा अपार ।।
युगकोण मांहि रतिकर लसंत, तिन सब पर जिनगृह दीप्तिमंत ।
अब अंजनगिरि को सुन बयान, ऊपर जिनमंदिर शोभमान ।।
सब समवरशरण रचना अनूप, तिहिमध्य विराजे जिनस्वरुप ।
पद्मासन छवि वरणी न जाय, सुर सुराधीश नित नमें आय ।।
अतिभक्ति भरे पूजन रचाय, बहु नृत्य करें बाजे बजाय ।
तहँ देवी देव नचें जु संग, नवरस परकाश करें अभंग ।।
बहु बजे दुन्दुभी गगन जोर, दिश छाय रहो जयशब्द शोर ।
जय जय जिनजगसागर जहाज, जै जै जै शिवदायक समाज ।।
आनन्दजलधिको शशिअनूप, भविमनकमलनकोर विसरुप ।
जय जन्मरोग को सुधासार, जय क्लेशदहन को मेघवार ।।
कन्दर्प सर्प को वैनतेय, जय लोभजहर को अमीपेय ।
जय अतंक को अंतकसमान, जय विषयवनी को दवमहान ।।
जय ज्ञान सम्पदा के अधीश, शतइन्द्र नमें नित नाय शीश ।
प्रभुध्यानद्वार मम हृदय मांहि, करवास और कछु चाह नांहि ।।
यह करो कृपा सर्वत्र देव, जगतार आप यह विरद लेव ।
निजनिधि रत्नत्रय परम देव, कजरोड़ जिनेश्वर करत सेव ।।

दोहा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुभमति दाता जगत में, सुखसाता करतार।
त्राता मम ऊपर करो, कृपा स्वपर हितकार ॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

सोरठा

केवलज्ञान प्रकाश, स्वपर सर्वज्ञायक सदा।
कहत जिनेश्वर दास, आश भरो सेवक तनी ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥ २७ ॥

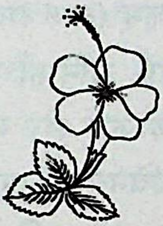

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमांजनगिरि पूर्वदधिमुख पूजा

कुसुमलता छन्द

नन्दीश्वर की पश्चिम दिश में, श्याम वरण अंजनगिरि जान।
ताके पूरब बीच वापिका, श्वेतवरणदधिमुख गिरि जान ।।
दश हजार जोजन उन्नत अरु, ढोल समान गोल अभिराम।
ताके ऊपर जिनगृह प्रतिमा, अकृत्रिमा सोहैं सुखधाम ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि पर्वूदधिमुख गिरि जिनबिम्बसमूह ! अत्रावरावतर सम्वौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम् (चाल होली की)

जजों जिनपद सुखदाई, सुनि हो भवि भाई ।। टेक ।।
पद्मद्रह को उज्जवल जल ले, कंचन भृङ्ग भराई ।
मनवचकाय लगाय विनयसों, पूजों श्री जिनराई ।।
जन्मत्रिक के दोष नसाई, सुनि.। जजों. । सुनि. ।
नन्दीश्वर पश्चिम अंजनगिरि, ताके पूरब भाई ।।
दधिमुखगिरिपरजिनगृह सोहे, पूजत सुरपति जाई।।सुनि.।।
हृदय बहु भगति बढ़ाई, सुनि.। जजों.। सुनि.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः जलम् ।।

केशर अरु कर्पूर संग ले, चन्दन गन्ध मिलाई ।
त्रिभुवनपति की पूज रचावो, भव आताप नशाई ।।
लहे निज शीतलपाई, सुन. जजो. नन्दी. दधि. हृदय.सु. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुक्ताफल के पुञ्ज मनोहर, सुरपति चरण चढ़ावे ।
हम निज शक्ति समान शालि ले, जिन जजि पुण्य बढ़ावे ।।
सही मनवांछितदाई, सुन. जजो. नन्दी. दधि. हृदय.सु. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

वरन वरन के कुसुम सुगन्धी, कंचन थाल भराई ।
काम करुर गरुर हरन को, चरण जजों जिनराई ।।
सही जयसम्पति पाई, सुन. जजो. नन्दी. दधि. हृदय.सु. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

फैनी गोझा मोदक खाजे, ताजे तुरत बनाई ।
दोष क्षुधा दुख दूर करन को, चरणन देत चढ़ाई ।।
जिनेश्वर भक्ति बढ़ाई, सुन. जजो. नन्दी. दधि. हृदय.सु. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

परमागम अनुकूल दीप ले, श्रीजिन मन्दिर जाई ।
चरण जजत अरिहन्त प्रभू के, मोह तिमिर विनसाई ।।
लहे त्रिभुवन प्रभुताई, सुन. जजो. नन्दी. दधि. हृदय.सु. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

दशविध गन्धद्रव्य शुचि लेकर, उत्तम धूप बनाई ।
पूजत श्री अरिहन्त चरण को, वसुविध कर्म नशाई ।।
वरे शिवनारि सुहाई, सुन. जजो. नन्दी. दधि. हृदय.सु. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

एला लोंग बदाम छुहारे, पिस्ता आदि मिलाई।
शिवफलदायक देव जिनेश्वर, पूजत सौख्य लहाई ।।
यह निश्चय उर आई, सुन. जजो. नन्दी. दधि. हृदय.सु. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल चन्दन अक्षत प्रसून ले, नेवज सद्य बनाई ।
दीपधूप फल द्रव्य मिलाकर, अर्घ बनाओ भाई ।।
जिनेश्वर चरण चढ़ाई, सुन. जजो. नन्दी. दधि. हृदय.सु. ।।
नन्दीश्वर पश्चिम अंजनगिरि, ताके पूरब भाई ।
दधिमुखगिरिपरजिनगृह सोहे, पूजत सुरपति भाई ।।
हृदय बहु भगति बढ़ाई, सुन. जजो. नन्दी. दधि. हृदय.सु. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

जयमाल

शतमुख शत सेवें सदा, सादर शीश नवाय ।
शारदजनक जिनेश पद, बन्दों मन वच काय ।।

पद्धड़ी छन्द

जय द्वीप अष्टमों है महान,
ताकी पश्चिम दिश शोभमान ।
जहां अंजनगिरि पर्वत उतुंग,
अतिगोल ढोल सम स्याम रंग ।।
ताकी पूरब दिश में सुजान,
दधिमुख गिरि वापी बीच जान ।
जोजन हजार दश है उतुंग,
अतिधवल गोल दधिवर्ण रंग ।।
ता ऊपर जिनवर गेह मान,
सो योजन जानो लम्बमान ।
चौड़ो योजन पंचास सार,
ऊँचो पचहत्तर उर विचार ।।
तिहि बीच बनी रचना अनूप,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सब समवरण शोभास्वरुप ।
शत आठ बिम्ब अति शोभमान,
वसु प्रातिहार्य सों भासमान ।।
पद्मासन छबि वरनी न जाय,
पदसेव करे सुर शीश नाय ।
हरि शचीसहित पूजा रचाय,
बहुभक्ति सहित जिनगुण सुगाय ।।
निजजन्म सफल सुर करें सोय,
तुम चरण जजत अतिमुदित होय ।
धनि जीवन जिनको जग मँझार,
जो प्रभु को देखत नयन द्वार ।।
तुम धन्ध देव अद्‌भुत स्वरुप,
छबि निरख तृप्त नहिं त्रिदशभूप ।
तब हरि ने कीनी सहस आँख,
करि जीभ सहस वच विनय भास ।।
बहु इस्तुति कर निजशीश नाय,
माने निजकूं धनि देवराय ।
जो भक्तिसहित जिन जपे नाम,
सो निश्चय पावे सुख ललाम ।।
प्रभु वीतराग छबि निर्विकार,
अरु प्रगट अचेतन अंग सार ।
तो भी भविजन को सहज रुप,
दायक दिव शिव सम्पति अनूप ।।
जिमि चिन्तामणि रत्नादि सार,
निर्जीव वस्तु जग के मँझार ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन कल्पित सुख दातार सोय,
तिहि सुखदायक जिनबिम्ब होय ।।
वह आगम वचन प्रमाण जान,
भवि जीव लखो पारसपुरान ।
यह निर्णय तँह कीनों मुनीश,
हम तिनको नमत नवाय शीश ।।
वह सुगुरु वचन जिन छबि अनूप,
वरदाता सम्यग्ज्ञान रुप ।
भव भव मेरी कीजे सहाय,
ज्यों सुखी जिनेश्वर नित सहाय ।।

दोहा

दधिमुख जिनमन्दिर तनी, पूरण यह जयमाल
जों बांचे मन लाय के, ताके भाग्य विशाल ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

जन्म रोग अनिवार, ताको दूर करो प्रभू ।
आयो तुम दरबार, तुम सहाय सब जग विषें ।।

।। इत्याशीर्वादः ।। २८।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीनन्दीश्वरद्वीप पश्चिमांजनगिरि दक्षिणदधिमुखगिरि जिनमन्दिर पूजा

कुसुमलता छन्द

नन्दीश्वर पश्चिम अंजनगिरि, ताकी दक्षिण दिश में जान।
वापी बीच विराजै दधिसम, दधिमुख गिरिशुभगोलमहान।।
ताके ऊपर श्रीजिन मन्दिर, रत्नमयी सु अकृत्रिम जान।
श्रीजिनबिम्ब अठोत्तर इकसौ, मन वच क्रम वन्दों सुखदान।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपपश्चिमदिशांजनगिरिदक्षिण दधिमुख गिरि जिनबिम्बसमूह! अत्रावतरावतर सम्वौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम् (त्रिभांगी छन्द)

शुचि सागरक्षीरं, शीतगहीरं,
निर्मल नीरं, सुर ल्यावे।
भरि कंचनझारी, तृषा निवारी,
जिनवर पद तर शिर नावे।।
नन्दीश्वर पश्चिम, अंजनगिरि की,
दक्षिण दधिमुखगिरि सोहे।
तापर जिनमन्दिर, नमत पुरन्दर,
जिनप्रतिमा अति मन मोहे।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरिदक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

मलयागिरि चन्दन, दाहनिकंदन,
कदलीनन्दन सहित घसों।
भवताप निवारण, शिवमुख कारण,
जिनपद जज प्रभु पास वसों।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नन्दीश्वर पश्चिम, अंजनगिरि की,
दक्षिण दधिमुखगिरि सोहे ।
तापर जिनमन्दिर, नमत पुरन्दर,
जिनप्रतिमा अति मन मोहे ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरिदक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम् ।

शशिकिरण समाना, सेत महाना,
मुक्ताफल सुर ल्यावत हैं ।
हम शक्तिसमाना, शालिप्रधाना,
अक्षत पुंज चढ़ावत है ।।नन्दी.।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरिदक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

दृग मन के प्यारे, गन्ध प्रचारे,
सुवरण वारे, पुष्प महा ।
जिनचरण चढ़ावे, भक्ति बढ़ावे,
पूज रचावे, सौख्य लहा ।।नन्दी.।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरिदक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

कंचन की थारी, भरी सुखकारी,
विविध प्रकारी चरु ल्यावे ।
जिनचरण चढ़ावे, हर्ष बढ़ावे ,
प्रभुगुण गावे शिव पावे ।।नन्दी.।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरिदक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

बहु उज्जवल जोतं, तमक्षय होतं,
दीपक सों, जिनपद पूजे ।
अरि मोह नशावे, निज दरसावे,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केवलज्ञान पती हूजे ।।नन्दी.।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरिदक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः दीपम्।

कृष्णागरु धूपं, गन्ध अनूपं,
तिहूँ जग भूपं, पूज करे ।
वसु कर्म जलावे, जिनपद पावे,
ज्ञानज्योति शिवनारि वरे ।।नन्दी.।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरिदक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः धूपम्।

फल सरस नवीने, पावन लीने,
त्रिभुवनपति पद भेंट धरो ।
दुष्कृत नश जावे, पुण्य बढ़ावे,
क्रम क्रम सों शिवनारि वरो।। नन्दी.।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरिदक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः फलम्।

वसु द्रव्य मिलावे, जिनगुण गावे,
अर्घ बनावे, भरि थारी ।
जिन चरण चढ़ावे, भक्ति बढ़ावे,
शिवसुख पावे, भवि भारी।।नन्दी.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिममांजनगिरि दक्षिणदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

जयमाल

मुनि महन्त ऋषिराज सब, ध्यान धरें मन लाय।
सुरपति नरपति नागपति, चरण जजें शिर नाय।।
सर्व आश पूरण करो, भरो सर्व हित साज।
हरो हमारी वेदना, वीतराग महराज ।।

तोटक छन्द

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयवंत तुम्हीं सब लायक हो, सत संतन के प्रभु नायक हो ।
अघकर्म अरीगण धायक हो, निजसम्पतिक्षायकदायक हो ।।
विषयादिक में नहिं राग भयो, भर जोवन मांहि विराग लयो ।
प्रभु अंतर ज्योति प्रकाश रही, तज नेह दिगम्बर वृत्ति गही ।।
षट्खण्डरमा छिन में तजि के, निर्ग्रन्थदशा वन में सजिके ।
निजरुप सुधी मन में भजिके, अरिमोह हतो रण में पचिके ।।
चतुघाति मरे क्षण में लजिके, प्रभु जीत लही तबही सजिके ।
नभ में सुर वाहन आबत हैं, बहु दुन्दुभि घोर बजावत हैं ।।
जयकारन की धुनि छाय रही, रणजीत ध्वजा फहराय रही ।
दशहू दिश से सुर आवत है, बहु दूरहि से शिर नावत हैं ।।
उर हर्ष भरे गुण गावत हैं, सुर कामिनि वीन बजावत हैं ।।
नवहू रस भाव दिखावत हैं, मनु भक्तिप्रचारसिखावत हैं ।।
सब शक्र शची नित नृत्य करें, सब साज सजावत भृत्य खरे ।
उपमा नहिं जात कही तिनकी, अनिमेषलखेछविश्री जिनकी ।।
फिरकी जब लेत महाछविसों, उपमानहिंजाय कही कविसों ।
बलयाकृति कोटि प्रभा दरसे, मनुदामिनि गोल मही परसे ।।
क्षण सूक्षम रुप अनूप भरे, क्षण थूल शरीर प्रकाश भरे ।
क्षण में गति मन्द प्रकाश करे, क्षण ताल उताल अकाश परे ।।
हरि अद्भुत नाटक आय करे, जिनकी महिमा कहि नांहि परे ।
जयवन्त जिनेश्वर देव सही, जिनकी महिमानहिं जाय कही ।।
प्रभु मो उर मांहि बसो नितही, अरु कर्म करुर कसों नितही ।
मम विघ्नसमूह नसो नितही, उर सम्यग्ज्ञान लसो नितही ।।
सब से निष्प्रेम रहावत हो, कछु राग विरोध न लावत हो ।
सबकी सुनि मौन रहावत हो, तदि दीनदयाल कहावत हो ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह अद्‌भुत बात बड़ी प्रभु जी, यशवेलि त्रिलोक बड़ी प्रभु जी।
तुम भक्ति बसो हिय में प्रभु जी, सुखदायक यह अरजी प्रभु जी ।।
यह भक्ति महानिधि देहु हमें, सतज्ञान दयानिधि देहु हमें।
जगतार जिनेश्वर देहु तुम्हीं, भवभार उतारत देव तुम्हीं ।।

दोहा

करुणा करि जिनराज जी, अशरण शरण सहाय।
अरज जिनेश्वर की सुनो, तुम त्रिभुवन के राय ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरिदक्षिण दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

देहु स्वरिद्धि अनूप, यही कृपा अब कीजिये।
फिर न वसे भवकूप, वहसमाज अब दीजिये ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। २९ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिन मन्दिर पूजा

कुसुमलताछन्द

नन्दीश्वर पश्चिम दिश राजे, श्यामवरण अंजनगिरि नाम।
ताके पश्चिम दधिमुखगिरि है, वापी बीच श्वेत अभिराम।।
ताके ऊपर जिनमन्दिर में, प्रतिमा इकशत आठ ललाम।
तिनके चरण कमल सुर पूजें, हम पूजें निजघर वसु जाम।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि पश्चिम दधिमुखगिरि जिनबिम्बसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट्। इत्याह्वानम् अत्र तिष्ठ तिष्ठः ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम् (चाल होली की)

सुधी जिन पूज रचावो, यातें शिव सम्पति पावो।
कंचनझारी में जल उत्तम, भरि जिनमन्दिर जावो।।
जन्म जरा दुख दूर करन को, श्री जिनचरण चढ़ावो।
अती हर्ष हृदय लावो, यातें शिव. सम्पति पावो।। सुधी.।।
नन्दीश्वर की पश्चिम दिश में, अंजनगिरि शुय राजे।
ताके पश्चिम दधिमुख गिरिपर, जिनमन्दिर छवि छाजे।।
तहां निज भाव लगावो, याते. सुधी. यातें.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरिपश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

चन्दन अरु कर्पूर घिसाके, केशर संग मिलावो।
जिनवरचरण जजत भविजनजों, सो भवताप नशावो।।
यही निश्चय उर लावो, यातें., सुधी., नन्दी., सुधी.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरिपश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवजीर सुखदास कमोदक, अक्षत धोय बनाओ ।
तिहुँ जग तिलक दिगम्बर प्रभु के, चरनन पुञ्ज चढ़ाओ ।।
हृदय में जिनगुण गाओ, यातें., सुधी., नन्दी., सुधी. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरिपश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

वरण वरण के पुष्प मनोहर, सुन्दर गन्ध सुहावे ।
कामदाह निरवारण कारण, श्रीजिन चरण चढ़ावे ।।
भक्तिमय नृत्य करावे, यातें., सुधी., नन्दी., सुधी. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरिपश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

फेनी गोझा मोदक खाजे, ताजे तुरत बनावे ।
क्षुधारोग निरवारण कारण, श्रीजिन चरण चढ़ावे ।।
विविध बाजे बजवावे, यातें., सुधी., नन्दी., सुधी. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरिपश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

कंचन मणिमय दीप अनूपम, सुर सुरपति बहु ल्यावे ।
हम निजशक्तिसमान दीप ले, श्रीजिनपूज रचावें ।।
स्वहितकर निजगुण गावें, यातें., सुधी., नन्दी., सुधी. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरिपश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

दशविध धूप सुगन्ध बनाकर, बहु वादित्र बजावो ।
कर्मदहन के काज दहन में, जिनपद धूप चढ़ावो ।।
अष्टविध कर्म नशावो, यातें., सुधी., नन्दी., सुधी. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरिपश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

लोंग बदाम छुहारे, पिस्ता एला आदि मँगावो ।
शिवफलकारण भक्तिभाव सों, फल जिनचरण चढ़ावो ।।
मुक्तिफल क्रम से पावो, यातें., सुधी., नन्दी., सुधी. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरिपश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल फल द्रव्य मिलाय गाय गुण, उत्तम अर्घ बनावो।
मुक्ति महा अभिराम धाम के, कारण चरण चढ़ावो।।
सदा थिर रुप रहावो, यातें निंज सम्पति पावो। सुधी.
नन्दीश्वर की पश्चिम दिश में, अंजनगिर शुभ राजे।
ताकीपश्चिमदधिमुख पर, जिन मन्दिर छवि छाजे।।
तहां निजभाव लगावो, यातें निजसम्पतिपावो।। सुधी.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरिपश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

जयमाल

दोहा

घातिकर्म घाते प्रभू, पायो केवल ज्ञान।
जिनके चरणसरोज मम, हृदय बसो हितदान।।
पूजन कर जिनराज की, उर में भक्ति विशाल।
बाहर निकसे शब्द मम, वह सुनिये जयमाल।।

तोटक छन्द

जय श्री जिनराज विराजत है, छवि समवरण में छाजत हैं।
हरिविष्ठर रत्न जड़ाव महा, सुरपूजित श्रीगणराज महा।।
तिहि ऊपर आसन पद्म धरे, प्रभु राजत चोंसठ चमर ढुरे।
शिर छत्र फिरे त्रय जोति महा, शशिसूरजज्योतिछिपावलहा।।
नभ में सुरदुन्दुभि घोर बजे, बरसे बहु फूल सुगन्ध सजे।
ध्वनि दिव्य अनक्षर गाज रही, जाकी उपमा नहिंजाय कही।।
सब जीव अजीव प्रभेद गिनो, अरु धर्म अधर्म स्वरुप भनो।
सब काल अकाश प्रकाश किये, षड् द्रव्य यही भविजानलियो।।
इक जीव अकाश त्रिलोक तनो, अरू धर्म अधर्मजु द्रव्य गिनो।
इन चारिन के पदरेश सही, सब मध्य असंख्यप्रदेश सही।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नभ सर्व अनन्त प्रदेश कह्यो, अरु पुद्गलद्रव्य त्रिभेद लह्यो ।
यह संख्य असंख्य अनन्त कहा, भविजीव तने सतभाव गहा ।।
पुनिकाल अणू सब भिन्न कहा, तातें याकों नहिं काय कहा ।
सबजान असंख्य प्रमाण अणू, यह निश्चयकाल जिनेन्द्र भनूं ।।
व्यवहार त्रिकाल अनन्त प्रभा, वरतत भावी अरु जान गमा ।
षड् द्रव्य भरै त्रैलोक्य विसें, जिन आगम में यह वृत्त लसे ।।
दसहू दिश और अलोक सही, नहिं दूजी द्रव्य जिनेश कही ।
इनकी सरधा भवि जीव करे, दृढ़ सम्यक् सो उर मांहि धरे ।।
जिनराज कृपाल कृपा करिये, दुख जन्म जरामृति कों हरिये ।
जयवन्त जिनेश्वर धर्म सदा, उर मांहि रहे निजमर्म सदा ।।

दोहा

अशरण शरण सहाय तुम, शरणागत सुखदाय ।
दीन जान कीजे दया, तुम दयाल जिनराय ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजन गिरि पश्चिमदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

हरो सर्व अघ साज, करो वृद्धि निजभाव की ।
सरो हमारे काज, यह विनती सुन लीजिये ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। ३० ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि स्थोत्तर दधिमुखगिरि जिन मन्दिर पूजा

कुसुमलता छन्द

नन्दीश्वर की पश्चिम दिश में, अंजनगिरि अतिस्यामस्वरुप।
ताकी उत्तर दिश में राजे, दधिगिरि दधिसमश्वेतस्वरुप ।।
दश हजार योजन को ऊँचो, गोल ढोलसम शोभ अनूप।
या पर अकृत्रिम जिनमन्दिर, जजत सुरासुर तिहूँजगभूप ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि स्थोत्तर दधिमुखगिरि जिनबिम्बसमूह। अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सनिक्रधापनम्।

अथाष्टकम् (चाल छन्द)

जल उज्वल शीतल लीजे, जिनवर के चरण जजीजे।
सब जन्म जरा दुख नाशे, निज शान्ति सुगुण परकाशे।।
नन्दीश्वर पश्चिम जानों, अंजन की उत्तर मानो।
दधिमुख पर जिनगृह सोहे, सुर असुर सबै मन मोहे ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि स्थोत्तर दधिमुख जिबनबिम्बेभ्यः जलम्।

चन्दन मलयागिर सारा, घनसार सुगन्ध अपारा।
भवताप विनाशन काजे, पूजों भविजन जिनराजे।।नन्दी.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि स्थोत्तर दधिमुख जिबनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

सित तन्दुल धोय धरीजे, अति उत्तम थाल भरीजे।
अक्षत सों जिनपद पूजे, अक्षयपद को पति हूजे।।नन्दी.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि स्थोत्तर दधिमुख जिबनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अशरीर अरी दुखकारी, त्रयलोक किये वश भारी ।
तिहि अरि के जीतन काजे, फूलनसों जजि जिनराजे ।।नन्दी.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि स्थोत्तर दधिमुख जिबनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

यह कर्म असाता भारी, सब जीवन को दुखकारी ।
ताके निरवारन काजे, चरुसों जजिये जिनराजे ।।नन्दी.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि स्थोत्तर दधिमुख जिबनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम्।

यह मोह महातम भारी, जग मांहि छयो अनिवारी ।
तिहि दूर करन के काजे, दीपक सों जजि जिनराजे ।।नन्दी.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि स्थोत्तर दधिमुख जिबनबिम्बेभ्यःदीपम् ।

वसु कर्म बड़े दुखकारी, सब जीव करे वश भारी ।
विधिवर्ग जलावन काजे, जजि धूपहि से जिनराजे ।।नन्दी.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि स्थोत्तर दधिमुख जिबनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

फल उत्तम जे जग मांही, भरि सुवरण भाजन माहीं ।
जिनवर के चरण चढ़ावे, सो भव्य महाफल पावे ।।नन्दी.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि स्थोत्तर दधिमुख जिबनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल फल वसु द्रव्य मिलावो, करि अर्घ प्रभूगुण गावो ।
जिनवर पूद पूज रचावो, यातें पंचमगति पावो ।।नन्दी.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि स्थोत्तर दधिमुख जिबनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल

दोह

नन्दीश्वर उत्तर दिशा, दधिमुख गिरि के भाल ।
जिनमन्दिर पूजा भई, अब सुनिये जयमाल ।।

मोतीदाम छन्द

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय जग में जिनराज महान, जयो प्रगटे जब केवलज्ञान ।
जयो सब इन्द्र सुरासुर संग, जयो जयकार करन्त अभंग ।।
बजे सुरदुन्दुभि जोर अकाश, दशोदिश छाय रहो रब खास ।
अनेक सुबाजनि को बहु शोर, तथा जयकार मचा चहुँ ओर ।।
सुचारितरुप मही रण रंग, प्रभू असहाय अरी बहु संग ।
महा अरि चार हने बलजोर, उसी जयप्रापति को यह शोर ।।
सभा दश दोय विषें जिनराज, करें उपदेश महावृष साज ।
सभी जग जन्तुन के हितकाज, खिरेजिन की धुनि दिव्यअबाज ।।
सुने भवि जीव लहे सतज्ञान, जगे उरमांहि सुभेद विज्ञान ।
धरे वृषभाव सुधी लघु वेष, करें व्रत संयम वृत्ति विशेष ।।
तजें भवि जीवपरिग्रह भार, सजें जिनरुप दिगम्बर सार ।
करें वसु कर्मन को परिहार, वरें तब ही शिवसुन्दर नार ।।
धरे लघुरुप अणुव्रत कोय, करे अघत्याग यथाविधि सोय ।
रहे घरमांहि गहे वृषभाव, गहे व्रतवेश फबै यह चाव ।।
असक्त परिग्रहवन्त अधीर, न किंचित धार सके व्रतचीर ।
स्वभावहि से दृढ़ सम्यकवंत, रहे शिवमारग में भवि संत ।।
यों शक्तिसमान सभी वृषधार, हृदय दृढ़भक्ति अखंडित सार ।
सदा उर देव गिने अरिहन्त, दयामय धर्म गुरु निर्गन्थ ।।
सुकारण सम्यक को यह जान, सुचिन्ह प्रतीति करे पहिचान ।
विवेक धरे उर मांहि अनूप, रहे सुख दुःख विषें समरुप ।।
सु याविध धर्म गृही अनगार, करो प्रभु ने उपदेश अपार ।
जिनेन्द्र वही सुखदायक देव, सुरासुर सर्व करें जिन सेव ।।
हरो हमरो विधिबंध विकार, करो हमको भवसागर पार ।
यही अरदास जिनेन्द्र सुदेव, सुना उरमांहि रहो अहमेव ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा

तुम दयाल जग मे बड़े, वीतराग जिनराज ।
अरज जिनेश्वर की सुनो, तारन तरन जिहाज ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजन गिरिस्थोत्तर दधिमुख जिन बिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

करुणानिधि जग तार, तुम स्वामी त्रैलोक्य में ।
मोहि करो भव पार, यही अरज सुन लीजिये ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। ३१ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजनगिरि प्रथम रतिकरगिरि जिन मन्दिर पूजा

कुसुमलता छन्द

नन्दीश्वर पश्चिम दिश मांही, अंजनगिरि के पूरब मान ।
विरजा वापी प्रथम विराजे, कनकवरण रतिकरगिरि जान ।।
एक सहस योजन को ऊँचो, ढोल समान गोल पहिचान ।
ताके ऊपर श्रीजिन मन्दिर, पूजत सुरपति निजहितमान ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजन गिरि पूर्व दिशा प्रथमरतिकर गिरि जिनबिम्बसमूह ! अत्रावतरावतर सम्वौषट् इत्याह्वानम् अत्र। तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम (चाल होली की)

सुरासुर पूज रचावें, मन वांछित पावें ।। सुरा.।। टेक
उज्वल नीर सुधासम लेके, मणिमय भृंग भरावे ।
जन्म जरा दुख नाशनकारण, श्री जिनचरण चढ़ावे ।।
खुशी मन भक्ति बढ़ावे, सुरासुर पूज रचावे ।। मन.
नन्दीश्वर की पश्चिम दिश में, रतिकर प्रथम कहावे ।
तापर श्री जिन भवन अकृत्रिम, सुरपति पूज रचावे ।।
सुगुण निजमुख से गावे, सुरासुर पूज रचावे ।। मन.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमांजनगिरि प्रथम रतिकर जिन बिम्बेभ्यः जलम्।

देवलोक के गन्ध मनोहर, सुर सुरेश बहु लावे ।
भव आताप निवारण कारण, श्री जिनचरण चढ़ावे ।।
हृदय से भक्ति बढ़ावे, सुरा. मन. सुरा. नन्दी. सुरा. मन. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमांजनगिरि प्रथम रतिकर जिन बिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देवजीर सुखदास सुअक्षत, सुन्दर धोय धरीजे ।
श्रीजिनचरण चढ़ावो भविजन, अक्षयपद को लीजे ।।
अष्टविध कर्म नशावे, सुरा. मन. सुरा. नन्दी. सुरा. मन. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमांजनगिरि प्रथम रतिकर जिन बिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

सुरपादप के पुष्प मनोहर, सुवरण थाल भरावे ।
कामदाह निरवारण कारण, श्रीजिन चरण चढ़ावे ।।
स्वपर पहिचान बढ़ावे, सुरा. मन. सुरा. नन्दी. सुरा. मन. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमांजनगिरि प्रथम रतिकर जिन बिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

सुन्दर सद्य छहों रस पूरित, नेवज शुद्ध बनावे ।
दोष क्षुधा दुख दूर करन को, श्री जिनचरण चढ़ावे ।।
सभी भव दुःख नशावे, सुरा. मन. सुरा. नन्दी. सुरा. मन. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमांजनगिरि प्रथम रतिकर जिन बिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

मणिमय सुवरण दीप अनूपम, सकल सुरासुर ल्यावें ।
मोहमहातम नाशन को भवि, श्रीजिन चरण चढ़ावें ।।
हरषकरजिनगुण गावें, सुरा. मन. सुरा. नन्दी. सुरा. मन. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमांजनगिरि प्रथम रतिकर जिन बिम्बेभ्यः दीपम् ।

कृष्णागुरु वर धूप दशांगी, भक्तिसहित सुर ल्यावे ।
विधिदुखनाशन स्वपर प्रकाशन, श्रीजिन पद तर खेवे ।।
बहुत विधि नृत्य करावे, सुरा. मन. सुरा. नन्दी. सुरा. मन. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमांजनगिरि प्रथम रतिकर जिन बिम्बेभ्यः धूपम् ।

कल्पवृक्ष के उत्तम फल ले, शतमुख पूज रचावे ।
नवरसभाव प्रगट कर करिके, सुरपति नृत्य करावे ।।
हृदय अतिभक्ति बढ़ावे, सुरा. मन. सुरा. नन्दी. सुरा. मन. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमांजनगिरि प्रथम रतिकर जिन बिम्बेभ्यः फलम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जलफल द्रव्य मिलाय भावसों, पूजन में मन लावे ।
सुर सुरपति जिनपतिपद पूजें, दुन्दुभि देव बजावें ।।
कुसुम वरषा वरषावें, सुरासुर पूज रचावें ।। मन.।।
नन्दीश्वर की पश्चिम दिश में, रतिकर प्रथम कहावे ।
तापर श्री जिनभवन अकीर्तम, सुरपति पूज रचावे ।।
सुगुण निजमुख सों गावे, सुरासुर पूज रचावे ।। मन.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमांजनगिरि प्रथम रतिकर जिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल

सुरपति नरपति नागपति, खगपति पुरुष प्रमान ।
पूजें जिनवर चरण कों, निजहित आनद मान ।।

पद्धड़ी छन्द

जयजय जिनराज दयानिधान,
भव सागर नागर पोत जान ।
जय आप तरे भवि जीव तार,
यों तारण तरण जिनेश सार ।।
जग जीवन को कल्याण रुप,
शिव मारग बतलायो अनूप ।
याही से करुणानिधि जिनेश,
जिनके पद पूजत सुर सुरेश ।।
भवकूप पड़े जे जगत जीव,
दुखसहित काल वीतो अतीव ।
तिनको सुख थानक द्यो अशेश,
तुम पतित उधारक हो जिनेश ।।
या दुखदायक भविसिन्धु मांहि,
जिय को कोइ शरण सहाय नांहि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसे अशरण को शरणरुप,
तुम ही सहाय हो जगत भूप ॥
अतिदीन रंग जे जगत मांहि,
तिनको इक दीखे शरण नांहि ।
तिनके बिन कारण सुखद भ्रात,
प्रभु दीनबन्धु तुम ही विख्यात ॥
जग जीत मोह अरि कर्म वेश,
कंपे तिहि से सुर असुर शेश ।
सो तुम जीतो है श्री जिनेश,
यातें हो अतुल बली महेश ॥
दुखहेतु असाता अन्तराय,
तिनको सहचारक मोहराय ।
तिन सबको जीतो तुम कृपाल,
यों सुख अनन्त भोगो विशाल ॥
सब द्रव्यन की पर्याय सार,
हो चुकीं तथा जो होनहार ।
तिन सबको जानों समय मांहि,
यों ज्ञान अनन्तो तुम्हीं मांहि ॥
त्रयकाल तने सब द्रव्यरुप,
इक समय मांहि देखो अनूप ।
यों दर्शन आप अनन्त धार,
यों तुम पद पूजों बार बार ॥
सब जीवन के गुण दर्श ज्ञान,
क्रम से होते लख जैन वान ।
तुम युगपत जानो लखो सार,
यह लोकोत्तर महिमा अपार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभु तुम गुण अगम अपार सोय,
हम पर कैसे निर्वाह होय।
यों कहत बड़े रिषिराज देव,
तो हम अब क्या कहि करें सेव।।
जों बड़े बड़े नहिं लहें पार,
तो रङ्क जीव की क्या सम्हार।
पै तुम समरथ दाता दयाल,
सबको फल द्यो तिहि जोग हाल।।
तुम पद सरोज की देव सेव,
भविजन को सुख देवे स्वमेव।
यह अद्‌भुत शक्ति अनन्तरुप,
पर में नांही लखिये अनूप।।
तुम पद कों वन्दों वार वार,
संसार जलधि से करो पार।
तुम सब देवन के देव देव,
कर जोड़ जिनेश्वर करत सेव।।

दोहा

सुरपति नरपति नागपति, तुम सब के पति देव।
अरज जिनेश्वर की सुनो, देहु स्वगुण सब एव।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमांजनगिरिप्रथम रतिकर जिनबिम्बेभ्य: पूर्णार्घ्यम्।

सोरठा

तुम भव जलधि जहाज, तारणतरण सही प्रभू।
अरज सुनो महाराज, मोकूं भवदधि तारिये।।

।। इत्याशीर्वाद।। ३२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशांजन गिरि द्वितीय रतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

कुसुमलता छन्द

अष्टम दीप दिशा पश्चिम में, अंजनगिरि के पूरब सार ।
दूजे कोण वापिका माहीं, रतिकर पर्वत बलयाकार ।।
ढोल समान गोल चौतरफा, जोजन सहस उर्ध्वता धार ।
तापर श्रीजिनमन्दिर सोहे, जजत सुरासुर अष्टप्रकार ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि पूर्व दिशाद्वितीय रतिकर जिनबिम्बसमूह! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अथाष्टकम्

गीता छन्द

शुचि गन्धमिष्ट महान उज्वल, नीर मणि झारी भरैं ।
सुरलोकपति अरु असुरपति, जिनराज के पायन परैं ।।
वरदीप अष्टम दिशा पश्चिम, दुतिय रतिकर राजहीं ।
जिनभवन तापर देव पूजें, देव दुन्दुभि गाजहीं ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि द्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

घनसार कदलीनन्द मिश्रित, दशों दिश महकावहीं ।
भवताप नाशन हेतु सुरपति, जजत जिनसुख पावहीं ।। वर

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि द्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम् ।

सुखदास अरु कम्मोद तन्दुल, सरस उज्वल धोइये ।
जिनचरण पूजन काज अक्षात, कनक थाल संजोइये ।। वर.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि द्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरलोक के शुचि गंध पूरित, कुसुम सुरपति ल्यावहीं।
त्रैलोक्यविजयी पंचशर वश, करन पूज रचावहीं।। वर.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि द्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम्।

पकवान नानाभांति ताजे, मोदकादि बनाइये।
दुख क्षुधानाशनचरण प्रभु के, भक्तिसहित चढ़ाइये।।वर.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि द्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम्।

वर दीपमणिमय तम विनाशक, सुर असुर मानव लावहीं।
त्रैलोक्यपति अरिहन्त प्रभु के, चरण मांहि चढ़ावहीं।। वर.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि द्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम्।

दशगंध सार सुगंध दशदिश, धूप होय महान है।
जिनचरण पूजत सुरअसुरपति, लहत सुख हितदान है।। वर.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि द्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम्।

फलसार मिष्ट विशाल शुचि, स्वादिष्ट शिष्ट सुलावहीं।
निर्वाणकारण भव्यजन, जिनराज चरण चढ़ावहीं।। वर.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि द्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम्।

जलगंध अक्षत पुष्प चरु घृत, दीप धूप फलावली।
जिनराजचरण चढ़ाय पावे, भव्य निजगुण आवली।।
वर दीप अष्टम दिशा पश्चिम, दुतिय रतिकर राजहीं।
जिनभवन तापर देव पूजूँ, देव दुन्दुभि गाजहीं।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि द्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

जयमाल

दोहा

अन्तर बाहर के सभी, जाहर शत्रु अनेक।
तिन सब में जिनराज जी, राखो निजहित टेक।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पास वास की आश उर, खास यही अरदास।
तुम्हें जिनेश्वर देव है, मैं हूँ जिनवरदास ।।

पद्धड़ी छन्द

जय जय अरिहंत महन्त देव, तुम चरणन की सुर करत सेव।
तुम नाम जपत सुरलोकधाम, अविवेकी पशु पावे ललाम ।।
तो भक्तिवन्त नर भव्य जीव, क्यों नांहि लहे शिवसुख अतीव।
अरिहन्त नाम आनन्दकार, याको विवरण सुखदायसार ।।
इस अर्ह धातु को पूज्य अर्थ, तातें अरिहतपद नहीं व्यर्थ ।
जग पूज्यपुरुष की विनय सेव, सुखदायक सेवक को स्वमेव ।।
अंतर अरि हर करि लही रिद्ध, अरिहंत नाम यातें प्रसिद्ध ।
निश्चय सुदृष्टि अरि कर्म एव, परमागम में यह कहो भेव ।।
हो जोय आप शिवसुखसरुप, सो औरन को दे सुख अनूप।
तुम सुख अनंत के हो निधान, यातें तुम सुखदायक प्रमान ।।
जोआप याचना करें सोय, सो औरन को क्या देय सोय ।
तुम आयाचीकपथपति अनूप, याही तें तुम दातार भूप ।।
लौकीक सम्पदा नशे सोय, ताको न निरन्तर दान होय ।
प्रभु तुम संपति अक्षय अनंत, याही से तुम दानी महन्त ।।
लौकीक राज्य सब विनश जाय, यातें न जीव कोई अघाय।
तुम अलौकीक राज्याधिराज, जगमांहिधिन्य प्रभु तुम समाज ।।
बहिरंगरमा को नहीं पार, तो अन्तरंग को कहे सार ।
तिस पर भी प्रभु तुम निर्विकार, जगधन्य वीतरागी अपार ।।
बिन क्रोध मोह अरि लयो मार, बिन लोभ संपदा गही सार ।
बिन द्वेष दुष्ट नर नरक डार, विनराग शिष्टजनदिये तार ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह अद्भुत महिमा अकथ देव, कहि कौन सके जगमांहि एव।
इत्यादि अनन्ते गुणनिधान, प्रभु पर उपकारी वच प्रमान ॥
जिनराजवृत्ति सब सुखदसार, जिहि धार भव्यजन भये पार।
जो आगे भी भवि भये सोय, सो सब निहचै भवपार होय ॥
यातें आयो जिनराज द्वार, हे कृपासिन्धु संसार पार।
मन वचन काय से करों सेव, भवतार जिनेश्वर देहु देव ॥
दोहा - वसुविध द्रव्य मिलायके, वसु विधि भंजन काज।
वसुविधिविजयी देव के, चरण जजूँ हित साज ॥

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरि द्वितीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

सोरठा

वीतराग महाराज, वीतरागिता काज में।
शिवसुख पावन आज, पद पूजूं मन लायके॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥ ३३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशांजनगिरि तृतीयरतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

कुसुमलता छन्द

नन्दीश्वर वर द्वीप आठमों, ताकी पश्चिम दिश में जान।
अंजनगिरि पर्वत है ताकी, दक्षिण वापी कोण प्रमान ।।
रतिकरगिरि के ऊपर जिनगृह, जिनवर बिम्ब अकृत्रिम मान।
सुर सुरेश तहां पूज रचावें, हम जिनगृह पूजें हित उठान ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजनगिरि तृतीयरतिकर गिरि जिनबिम्बसमूह ! अत्रावतरावतर! सम्वौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम्

(जिनेन्द्र तेरी वन्दना मैं भूलतानहीं, तथा रेखता की चाल में)

जिनेश तेरे पूजवा सुरेश आवते,
असंख्य देव भक्ति भरे शीश नावते ।। टेक ।।

जल उज्वल सुरलोक को जी, मणिमय भाजन धार।
जिनपद आगे धार दे, मुख बोलो जयकार जी ।। जि.
नन्दीश्वर पश्चिम दिशा, रतिकर तृतीय महान।
तापरजिनमन्दिर जजों, दायक शिवकल्यानजी ।। जि.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरि तृतीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

चन्दन गन्ध दशों दिशा, फैल रही भर पूर।
तासों जिनवर पद जजें, सुरगण खड़े हजूर जी ।।
जिनेश.। असंख्य.। नन्दी.। तापर.। जिनेश.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरि तृतीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोती निर्जरलोक के, सुर लावें भर थार ।
जिनवर की पूजा करें, बहुरि नवावें भाल जी ।।
जिनेश.। असंख्य. । नन्दी. । तापर. । जिनेश. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरि तृतीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

पारिजात मन्दार के,पुष्प सुगन्ध अपार ।
कामदहन के कारणें, पूजें जिनपद सार जी ।।
जिनेश.। असंख्य. । नन्दी. । तापर. । जिनेश. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरितृतीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

सुरपादप के चरु महा, षट्रस पूरित सार ।
देव जिनेश्वर चरण को, पूजें हर्ष अपार जी ।।
जिनेश.। असंख्य. । नन्दी. । तापर. । जिनेश. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरि तृतीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

जोतिवन्त मणिदीप ले, करें आरती देव ।
मोह महातम दहन को, जजें जिनेश्वर देव जी ।।
जिनेश.। असंख्य. । नन्दी. । तापर. । जिनेश. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरि तृतीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

अति सुगन्ध नभ विस्तरी, रही दिशों दिश छाय।
पूजें देव जिनेश को, ऐसी धूप चढ़ाय जी ।।
जिनेश.। असंख्य. । नन्दी. । तापर. । जिनेश. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरि तृतीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

उत्तम फल सुरवृक्ष के, मिष्ट महारस पूर ।।
देव चढ़ावे भक्ति सों, जिनवर चरण हजूर जी ।।
जिनेश.। असंख्य. । नन्दी. । तापर. । जिनेश. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशांजनगिरि तृतीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जल फल आठों द्रव्य ले, अर्घ बनाय अनूप।
चरण जिनेश्वर के जजें सुर असुरन के भूप जी ।। जि.
नन्दीश्वर पश्चिम दिशा, रतिकर तृतीय महान।
तापर जिनमन्दिर जजों, दायक शिव कल्यान जी ।।
जिनेश.। असंख्य. । नन्दी. । तापर. । जिनेश. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरपश्चिमदिशांजन गिरि तृतीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

जयमाल

विद्याधर असि चाप धर, अरु त्रिशूलधर देव।
सभी सुगुणधर देव की, करें सुरासुर सेव ।।

पद्धड़ी छन्द

जय वीर धीर जयवन्त देव, विधि अरिकराल को काल एव।
जय सन्त महन्तन को कृपाल, जय दुष्टमोह को हतन काल ।।
जय चारित की रणधरा बीच, सन्मुख देखो अरिमोह नीच।
तत्काल वीर बल भेष धार, जिहि देखत मोहै मुक्तिनार ।।
तन धार दिगम्बर कवच सार, अरु वीतरागिता मुकुट धार।
सत संजम चार अनूप जान, अरु संवर तीक्षण शर महान ।।
कर ध्यान कृपाण अरोक धार, त्रय गुप्ति रुप तिरशूल सार।
अरु उपशम शैल अनी कराल, विधि उदय मतंगज हनन भाल ।।
दशधर्म चक्र की धार देख, सब कर्मशत्रु भागे विशेख।
त्रयरत्न त्रिशक्ति सम्हाल सोय, अरु तप गज पर असवार होय ।।
असहाय आप अरिगण मँझार, अरि गोह बली कीनो अकार।
बहु अरिसमूह के मध्य सार, लीनो तुमने अरि मोह मार ।।
फिर दूजे क्षण में लगा तार, अरि शुक्लध्यान को कर प्रहार।
अरि तीन घातिया करे क्षीन, तब और कर्म भागे अधीन ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय आप जिनेश्वर देव सोय, त्रयलोकपती नृप एव होय ।
तब चतुर निकायी देव आय, तुम पद को पूजें शीश नाय ।।
प्रभु समवसरण के मध्य सार, चतुरानन आसन पद्म धार ।
मणि सिंहपीठ पर अन्तरीक्ष, राजे सुर मुनि के पति प्रतक्ष ।।
त्रय छत्र शीश अति तेजवन्त, शशि सूर्य प्रभा कोटिक लजन्त ।
अरु चौंसठ चामर दिव्य सार,सुर ढारत हर्ष हृदय अपार ।।
जहां वृक्ष अशोक दिपै उतंग, सब शोक तनों चूरे प्रसंग ।
सुर दुन्दुभि नभ में जोर होय, अरु कुसुमवृष्टि सुर करें सोय ।।
जिनकी ध्वनि दिव्य खिरे अगाध, सब तत्व प्रकाश करे अबाध ।
जिनराज शरीरप्रभा अनूप, अति चक्राकार दिपै स्वरूप ।।
इत्यादि अतुल सम्पति महान, जिहि देखत भविजन पापहान ।
तुम पद सरोज को वार वार, हम नमत शीश कर धार धार ।।
विधि विघ्नमूल तरु जार जार, चिसंचित विधिबल टार टार ।
उर अरज जिनेश्वर धार धार, दुखकार भवोदधि तार तार ।।

दोहा

इस असार संसार में, शरण तुम्हारी देव ।
सो प्रभु हमको दीजिये, करो कृपा यह देव ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमांजनगिरि तृतीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

तुम अनाथ के नाथ, मैं अनाथ चिरकाल तैं ।
स्वहित नवाऊँ माथ, मम उर आश वरो प्रभू ।।

।।इत्याशीर्वाद ।। ३४ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीं नन्दीश्वर द्वीप पश्चिम दिशांजन गिरिं चतुर्थ रतिकरगिरिं जिन मन्दिर पूजा

कुसुमलता छन्द

अष्टम द्वीप दिशा पश्चिम में, अंजनगिरि के दक्षिण भाग।
वापी दुतिय कोण में चौथा, रतिकर पर्वत अतुल सुहाग ॥
सुवरणवरण सहस योजन को, उन्नत गोल ढोल सम लाग।
तापर श्री जिनमन्दिर प्रतिमा, पूजत सुर सुरेश बड़भाग ॥

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर द्वीप पश्चिमदिशांजन गिरि दक्षिण दिशा चतुर्थ रतिकर जिन बिम्बसमूह। अत्रावतरावतर सम्वौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम् (जोगीरासा)

गंगाजल सम नीर अनूपम, कंचन झारी भरिये।
जन्मजरा दुखरहित जिनेश्वर, पदतर धारा करिये ॥
अष्टमदीप दिशा पश्चिम में, चौथो रतिकर भाई ॥
तापर श्रीजिन भवन अकृत्रिम, सुरपति पूजन आई ॥

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजनगिरि चतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

मलयागिर घनसार सुचन्दन, केशर रंग मिलावे।
भव आताप रहित जिनवर के, चरणन पूज रचावे ॥ अ.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजनगिरि चतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

देवजीर सुखदास कमोदक, अक्षत स्वच्छ करीजे।
अक्षयपद के ईश जिनेश्वर, चरणन पुंज धरीजे ॥ अ.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजनगिरि चतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वरण वरण के फूल मनोहर, निर्दोषे सुर ल्यावें ।
कामदाह दाहक जिनवर के, चरण पूज गुण गावें ।।
वरदीप अष्टम दिशा पश्चिम, दुतिय रतिकर राजहीं ।
जिनभवन तापर देव पूजें, देव दुन्दुभि गाजहीं ।।

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजनगिरि चतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

फैनी गोझा पेड़ा मोदक, लाडू आदि बनाओ ।
दोष अठारह रहित प्रभू के, चरणन अग्र चढ़ाओ ।। अ.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजनगिरि चतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

तमहर जोति प्रकाशी दीपक, रतनमई सुर लावें ।
केवलज्ञान धनी जिनपति के, चरण पूज हर्षावें ।।अ.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजनगिरि चतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

दशविध धूप सुगन्ध मनोहर, ले जिनमन्दिर आवो ।
परम शुक्लध्यानी जिनवर के, चरणन मांहि चढ़ावो ।। अ.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजनगिरि चतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

लोंग लायची एला पिस्ता, किसमिस खारक लावो ।
मुक्तिमहाफल दायक प्रभु के, चरण पूज गुण गावो ।।अ.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजनगिरि चतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल चंदन अक्षत कुसुमावलि, नेवज दीप सम्हारो ।
धूप फलावलि अर्घ बना कर, जिनवर पद तर धारो ।।
अष्टम दीप दिशा पश्चिम में, चौथो रतिकर भाई ।
तापर श्री जिनभवन अकृत्रिम, सुरपति पूजन आई ।।

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजनगिरि चतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

दोहा

अरि रज रहस निवारिके, जिन पायो शिव थान।
मम उर वास करो प्रभू, वरदायक भगवान ।।

पद्धड़ी छन्द

जय केवलज्ञान धनी जिनेश, तुम चरणकमल सेवें सुरेश ।
जय समवसरण के मध्य सार, उपदेशवृष्टि की सुधा धार ।।
जब जीव अजीव सुतत्व भेद, दरसाये चतु अनुयोग वेद ।
जय पुरुष शलाका साठ तीन, तिनको सब भेद कहो प्रवीन ।।
चौबिस तीर्थंकर प्रथम जान, द्वादश चक्री दूजे महान ।
प्रतिहरि बलहरि नव नव प्रमान, सब त्रेसठ पुरुष कहे पुरान ।।
ये सर्व मुक्ति के पात्र जान, कछु तद्भव कछु भवधर महान ।
मैं मुक्तिरुप वन्दों त्रिकाल, प्रभु मेरो काटो जगतजाल ।।
दिव दक्षिण इन्द्र शची महान, अरु लोकपाल लौकान्त जान ।
सर्वार्थसिद्ध के देव सार, इकभव अवतारी उर विचार ।।
जिन मात तात जिनराज आप, हल हरि चक्री पूरण प्रताप ।
अरु भोगभूमियां जीव जान, इनके मलमूत्र नहीं प्रमान ।।
जय शंकर चिर तप करें सार, दश पूर्व इकादश अंग धार ।
लख अबलागण को भृष्ट होय, चिरकाल भ्रमण जग करें सोय ।।
नव नारद ब्रह्मचारी अपार, उर क्रोध मान है बेशुमार ।
शंकर नार के मात तात, मुनिराज अर्जिका होंय भ्रात ।।
हरि प्रतिहरि नारद महादेव, ये जांय अघोगति नियम एव ।
बलि अतनु जुगल कुल मात तात, इनकी ऊरध गति जग विख्यात ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चक्री नर ऊरध अधो लोक, निजकृति अनुसार फलें जु थोक ।
इत्यादि बहुत वर्णन अनूप, उपदेश कियो त्रैलोक्यभूप ।।
मो मन में तिष्ठो सदा काल, जबलों न लहों त्रैलोक्यभाल ।
मन वचन काय कर करों सेव, यह लाभ जिनेश्वरदेव देव ।।

दोहा

चौथे रतिकर गिरि तनी, पूरण यह जयमाल ।
जो नर बांचे भाव सों, ताको भाग्य विशाल ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजनगिरि चतुर्थरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

जिनवर बिम्ब महान, कृत्रिम आकृत्रिम सबै ।
देहु हमें कल्यान, वन्दों मन वच काय से ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। ३५ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजनगिरि पंचमरतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

कुसुमलता छन्द

नन्दीश्वर वर दीप आठमों, पश्चिमदिश अंजनगिरि जान।
ताके पश्चिम वापी राजे, ताके प्रथम कोन में जान ।।
रतिकरगिरि पंचम कंचनमय, ऊँचो योजन सहस प्रमान।
तापर जिनमंदिर जिनप्रतिमा, अर्घ चढ़ाय करों मन ध्यान ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशांजन गिरि दक्षिणदिशास्थ पंचम रतिकर जिनबिम्ब समूह ! अत्रवतरावतर सम्वौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम (सुन्दरी छन्द)

सुरनदी जल निर्मल लायके, कनकभृङ्ग अनूप भरायके ।
जन्मदाह निवारण हेत हैं, धार जिनपद अग्र सुदेत हैं ।।
सरस अष्टम दीप सुहावनो, तास पश्चिम दिश मन भावनो ।
गिरि सुपंचम रतिकर सोह ही, जिनभवन सुरपति मन मोह ही ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजन गिरि पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

मलयचन्दन केशर गारि के, भक्ति भाव त्रियोग सम्हारिके ।
कर्मबन्ध निवारण काज जी, भव्य पूजत पद जिनराज जी ।। सरस.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजन गिरि पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगंधम्।

फटिकसम शुचि श्वेत सुहावने, अमल अक्षत स्वच्छ प्रभा बने ।
प्रचुर पुण्य बढ़ावन हेतु हैं, जिनचरण लखि पुंज सुदेत हैं ।। सरस.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजन गिरि पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

.CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरमहीरुह की कुसुमावली, तिह सुगन्ध भ्रमे भ्रमरावली ।
जिनचरण लखि दृग हरषात है, जजत मन्मथ जर जर जात है ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजन गिरि पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

सरस मोदक आदि बनाय के, चरु कनकमय थाल भराय के ।
जय जिनगृह जिनवर पूजिये, भक्तिवन्त मुदित उर हूजिये ।। सरस.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजन गिरि पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

कनकमणिमय सुन्दर जोइये, दीपअति द्युतिवन्त सँजोइये ।
विकट मोहमहातम नाशने, पूजत जिनपद ज्ञान प्रकाशने ।। सरस.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजन गिरि पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

अतिसुगन्ध सुधूप बनाइये, मुदितमन जिनमन्दिर जाइये ।
चरण पूजत भवि जिनराज के, हृदय भक्ति भरे हितसाज के ।। सरस.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजन गिरि पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

परमपावन फल भर थार हैं, अमरपती सुर संग अपार हैं ।
चरण पूजत भवि जिनराज के, तरण भवदधि साज समाज के ।। सरस.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजन गिरि पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जलफलादिक द्रव्य मिलाय के, रतन सुवरण थाल भराय के ।
शचिपती अतिभक्ति बढ़ाय के, जजतजिनपद अर्घ चढ़ाय के ।।
सरसअष्टम दीप सुहावने, तासपश्चिमदिश मन भावने ।
गिरि सु पंचम रतिकर सोहही, जिनभवन सुरपति मन मोहहीं ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजन गिरि पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल

विधि अरिभंजन परम विधि, विविध प्रकार बताय ।
सो जिनराज जयो सदा, मम उर वसिये आय ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोतीदाम छन्द

जयो जग में जिनदेव महान, जयो जिनको उपकार महान ।
शचीपती पांय तरे नित आय, सदाप्रभु जी मम होहु सहाय ।।
दियो सतधर्म दया उपदेश, जयो जग जीव सुथान विशेष ।
चतुर्दश भेद कहे जिनभूप, कहो तिनको सब भेद अनूप ।।
मिथ्यात्वससादन मिश्र तृतीय, सुअव्रत सम्यग्दृष्टि तुरीय ।
पण देशव्रती तक श्रावकरीत, तके उपरी मनि धर्म अतीत ।।
प्रमत्त छठो गुणथान सरुप, सुसप्तम है अप्रमत्त स्वरुप ।
करण अपूर्व सुअष्टम जान, तथा अनिवृत्ति नवों पहिचान ।।
सु है दशमों गुण सूक्षमलोभ, इकादशमों उपशांत अछोभ ।
सुक्षीणकषाय जु द्वादश भाव, यहां तक तो छद्मस्थ प्रभाव ।।
सुतेरम जान सयोग जिनेश, यहां तक जोग तथा सितलेश ।
अजोग चतुर्दशमों गुणथान, यही भवकारण की विधि हान ।।
मिथ्यात्वविषेंगतिइन्द्रिय काय, सभी जिनराज दई सुबताय ।
ससादन में जु पशूगति लेख, सुकाय कही त्रस एकविशेख ।।
ससादन आदि अयोग सुअन्त, सभी इकसी त्रसकाय लहंत ।
चतुर्थ चहूँ गति में गुणथान, सुपंचम है पशु मानुषमान ।।
प्रमत्तहि से सबही गुणथान, लहे नर उत्तम आरज वान ।
तृतीय द्वादश तेरह थान, कह्यो नहिं मरणों श्री भगवान ।।
मिथ्यात्वमरो गतिचारहु जाय, ससादन नर्क बिना त्रस भाय ।
सुपूरब आयु बँधो जिहि जीव, चतुर्थ चहूँगति जाय सदीव ।।
सुपंचम से गुणथान अजन्त, लहे गति एक सुदेव महन्त ।
अजायेग जिनेश्वर मुक्ति लहाय, कह्यो यह वर्णनश्रीजिनराय ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहो जगदीश्वर ज्ञान प्रभाव, चराचरवस्तु प्रत्यक्ष लखाव ।
त्रिलोक त्रिकालस्वभावविभाव, सबैहु लखे सत वस्तुस्वभाव ।।
सुनो प्रभु जी इकवार पुकार, करो हमको भवसागर पार ।
करो यह एक बड़ो उपकार, हरो भ्रम मोह मई दुखभार ।।

दोहा

जिनवर जगत्राता बड़े, विपति निवारनहार ।
इस असार संसार से, करो मोहि प्रभु पार ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजन गिरि पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

दीनबन्धु भगवान, करो कृपा मम दीन पै ।
करुणानिधि गुण जान, आयो तुम दरबार में ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। ३६ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजन षष्ठ रतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

कुसुमलता छन्द

नन्दीश्वर पश्चिम अंजनगिरि, ताकी पश्चिम दिश में जान।
वापी कोण दूसरे मांही, रतिकर कंचनवर्ण महान ।।
ताके ऊपर श्री जिनमन्दिर, अकृत्रिम सोहे अमलान ।
तामें श्रीजिन प्रतिमा राजें, तिनको बन्दों उर धर ध्यान ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजन गिरि षष्ठरतिकर गिरि जिन बिम्ब समूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम् (जोगीरासा छन्द)

गंगाजल सम उज्वल जल ले, सुवरणभृङ्ग भरायो ।
जन्म जरा दुख दूर करण को, श्रीजिनचरण चढ़ायो ।।
नन्दीश्वर पश्चिम अंजनगिरि, ताके पश्चिम सोहे ।
रतिकर ऊपर श्रीजिनमन्दिर, निरख शचीपति मोहे ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

केशरअरु कर्पूर मिलाके, चन्दन संग घसीजे ।
परम पूज्य अरिहन्तदेव के, चरणन पूज करीजे ।।न.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

मुक्ताफलसम उज्वल अक्षत, सुन्दर धोय बनावो ।
अक्षयपद के पावन कारण, श्रीजिनचरण चढ़ावो ।।न.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरतरु के वर फूल मनोहर, हर्ष सहित सुर लावे ।
समरशूल निर्मूल करन को, श्री जिनचरण चढ़ावो ।।
नन्दीश्वर पश्चिम अंजनगिरि, ताके पश्चिम सोहे ।
रतिकर ऊपर श्रीजिनमन्दिर, निरख शचीपति मोहे ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

लाडू घेवर मोदक खाजे, ताजे सरस बनाओ ।
दोष क्षुधा दुख दूरकरण को, श्रीजिनचरण चढ़ावो ।।न.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

मणिमयदीप प्रजाल मनोहर, रतन रकेवी धारो ।
मोहमहातम नाशनकारण, श्रीजिनपद तर वारो ।।न.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

दशविध गन्ध मनोहर लेके, श्रीजिनमन्दिर जावो ।
भव्यजीव भवताप विनाशन, श्रीजिनचरण चढ़ावो ।।न.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

पिस्ता लोंग सुपारी एला, आदिक फल सुखकारी ।
भव्यजीव शिवफल के कारण, जिनपद पूज प्रचारी ।।न.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जलफल अर्घ मिलाय गाय गुण, भक्तिसहित शिर नावे ।
सुरसुरेश सब मिलकर जिनवर, चरणन पूज रचावे ।।
नन्दीश्वर पश्चिम अंजनगिर, ताके पश्चिम सोहे ।
रतिकर ऊपर श्रीजिनमंदिर, निरख शुचीपति मोहे ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

दोहा

जगदीश्वर महराज के, चरणन शीश नवाय।
वरणों जयमाला अबै, प्रभु जी होहु सहाय।।

मोतीदास छन्द

जयो जग में जिनराज महान, ऋषी मुनिराज धरें तुम ध्यान।
रटें सुर शेष महेश अशेष, कटें सब कर्मप्रबन्ध विशेष।।
सुजन्मत देव सबै भवि आय, करें प्रभु सेव सुमस्तक नाय।
गयन्द ऐरावत पै असवार, सुगोद लियो हरि श्रीजगतार।।
धरै शिर छत्र ईशान सुरेश, सुचामर ढोरत दोय सुरेश।
करें जयकारसभी सुर शेष, सुभक्ति बढ़ावत हर्ष विशेष।।
महागिरि पांडुक कानन बीच, सनानसिला मनु चन्द्रमरीच।
तहां त्रयविष्ठर रत्नमयूख, लखें जिहि को न रहे उर भूख।।
प्रभू अस्नान करें हरि आप, सुधन्य जिनेश्वर पुण्यप्रताप।
सुरासुर सर्व करें जयकार, बजें बहु साज समाज अपार।।
सुआसन पद्म विराजत देव, सबै विध न्हौन करे हरि सेव।
सु एक हजारहि आठ प्रमान, भरे जल क्षीरहिं सागर आन।।
सुरी बहु नृत्य करे उर चाव, सुभक्तिसमेत नवों रस भाव।
सुआनन्द नाटक होत अनूप, सुजन्म कल्याणक पुण्यस्वरुप।।
अराधि जिनेश्वर साध नियोग, गये सुर अपने थानं मनोग।
प्रभू गृहवास विषें कर राज, धरें फिरभेष दिगम्बर साज।।
हनें चउ घाति लहें वर ज्ञान, चराचर वस्तु प्रकाशक भान।
करें उपदेश महासुखदान, भवोदधि तारक पोत महान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयो जग में वह देव अनूप, हने वसुकर्म भये शिवभूप ।
सभी सुख सम्पतिदाय अनूप,करो प्रभू हमको आप सरुप ।।

दोहा

वृषपति वृषदाता प्रभू, वृषभेश्वर समदेव ।
करो कृपा मम दीन पै, तुम शिवदायक एव ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशा षष्ठ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

भवदधि तारनहार, कारण या तुम जगत में ।
और न दूजो सार, निमित्तवली इस लोक में ।।

।।इत्याशिर्वाद।। ३७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजन सप्तम रतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

कुसुमलता छन्द

अष्टमदीप दिशा पश्चिम में, अंजनगिरि के उत्तर सार।
वापी प्रथमकोण में सोहे, रतिकर पर्वत गोलाकार ।।
तापर श्री जिनमन्दिर सोहे, ताकी महिमा अगम अपार।
ताकी आह्वाननविधि करके, पुष्प चढ़ावत हम त्रय बार ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशासप्तम रतिकर गिरि जिन बिम्बसमूह ! अत्रावतरावतर सम्वौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम् (चाल छन्द)

जल सार सुधासम कीजे, सुवरण को भृंग भरीजे।
जिन अग्र धार त्रय दीजे, बहु पुण्यभण्डार भरीजे ।।
नन्दीश्वर पश्चिम आरे, सप्तम रतिकर गिरि जारे।
तापर जिनगृह सुखकारी, सुर पूजत भक्ति सुधारी ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशासप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

वर बावनचन्दन आनो, केशर के संग घिसानो।
भवदाह निवारण काजे, भवि पूजत श्रीजिनराजे ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशासप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

सुखदास कमोद महाना, तन्दुल सित उत्तम लाना।
जिनवर पद अग्र चढ़ाना, निहचै अक्षयपद पाना ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशासप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्दार नमेरु अनूपा, इत्यादि कुसुम बहुरुपा ।
जिनवर पद अग्र चढ़ावे, सब काम व्यथा नशि जावे ।।
नन्दीश्वर पश्चिम आरे, सप्तम रतिकर गिरि जारे ।
तापर जिनगृह सुखकारी, सुर पूजत भक्ति सुधारी ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशासप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

षट्रस पकवान नवीने, तुरतहिं के पावन कीने ।
जिनवर पद अग्र चढ़ावे, दुख दोष क्षुधा नशि जावे ।।न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशासप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

दशहू दिश जोति प्रकाशे, ऐसे दीपक तम नाशे ।
जिनवरपद अग्र चढ़ावे, भवि केवल लक्ष्मी पावे ।।न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशासप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

वरधूप दशांग बनावे, तसु गन्ध अलीगण आवे ।
सो धूप धनञ्जय खेवे, विधिनाश निजातम वेवे ।।न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशासप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

फल उत्तम बहुविध लावे, जिनवर के चरण चढ़ावे ।
भव विधि अरिबन्ध नशावे, निश्चिय शिवलक्ष्मी पावे ।।न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशासप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

वसुद्रव्य मिलाय बनावे, वर थाल विषें भरवावे ।
जिनवर पद अग्र चढ़ावे, सो भवि दिवशिव सुखपावे ।।
नन्दीश्वर पश्चिम आरे, सप्तम रतिकर गिरि जारे ।
तापर जिनगृह सुखकारी, सुर पूजत भक्ति सुधारी ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशासप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

आठों द्रव्य मिलाय के, आठों अंग नवाय।
जिनवर पूजा कर कहों, जयमाला सुखदाय॥

मोतीदाम छन्द

जयो जिनराज भवार्णवतार, जयो जिनराज शिवालय धार।
जयो जिनराज सुधर्म जहाज, जयो जिनराज सु द्यो शिवसाज॥
सुनो भवकानन मांहि जिनेश, सहे हमने दुख घोर कलेश।
न अन्त लहो अजहूँ सुनि देव, करी तुमरी सहकारण सेव॥
हरो विधिबन्धन के सब फन्द, भरो सुखसम्पति आनंदकन्द।
सरे हमरो यह काज जिनेन्द्र, करो करुणा करुणाम्बुधिचन्द्र॥
सहे हमने दुख भूरि करुर, रहे नित ही सुख से अतिदूर।
गहे अब तो तुम चरण जरुर, चहे सुख द्यो प्रभु जी भरपूर॥
प्रभू तुम रुप अनूप अपार, रवी शशि कोटि लजन्त अगार।
विचारत ही भवि को सुख होय, निहारत के सुख को कह लोय॥
अनन्तवली अरु वज्रशरीर, महाछवि सुन्दर गन्ध समीर।
अखेद अस्वेद नहीं मल कोय, महावच अम्मृत कोमल सोय॥
प्रभू त्रयज्ञान विराजत एव, सुजन्मत ही अतिशय जिनदेव।
भयो जब केवलज्ञान महान, लहे अतिशय दश और सुजान॥
चतुर्दश देव किये हित मान, शुभ आठ प्रतीहारज महान।
अनन्तचतुष्टय चार बखान, धरे गुण छयालिस श्री भगवान॥
समवरसृति मध्य विराजित देव, सुरासुर सर्व करें प्रभु सेव।
महाध्वनि दिव्य खिरन्त अगाध, अनक्षर सर्वप्रकार अबाध॥
चतुर्दश मारगणा गुणथान, छह द्रव्य सभी गुण पर्ययवान।
सुतत्व कहे प्रभु सात प्रकार, प्रतीति भवार्णव तारणहार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कह्यो सतज्ञान प्रमाणस्वरुप, तथा नय भेद प्रभेद अनूप ।
कह्यो शुभ चारित शुध उपयोग, यही रत्नत्रय जान त्रियोग ।।
तथा दशलक्षण धर्म अनूप, सुद्वादश भावन सत्यस्वरुप ।
कहे प्रभु षोडशकारण सार, सुतीर्थपती पद के करतार ।।
इत्यादि अनेक दिये उपदेश, वसो हमरे उर मांहि हमेश ।
करो हमरी बुधिवृद्धि विशाल, भरो प्रभु जी शिवसम्पति हाल ।।

दोहा

जन्म मरण दुख नाश के, करो ज्ञान परकाश ।
अरज जिनेश्वर की सुनो, तुम दाता गुणराश ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशासम्मरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

जग में शरण सहाय, नाम आपको मैं सुनो ।
करो कृपा जिनराय, निपट अधम मुहि जानिके ।।

।।इत्याशिर्वाद।। ३८।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीप पश्चिम दिशांजन गिरि अष्टम रतिकर गिरि जिन मंदिर पूजा

कुसुमलता छन्द

नन्दीश्वर पश्चिम अंजनगिरि, रतिकर कंचनवर्ण सुहाग।
एकसहस योजन को ऊँचो, इन्द्रियदिशा वापी बहिभाग॥
दुतियकोण में पर्वत राजे, गोलाकार ढोल सम लाग।
ताके ऊपर श्री जिन मन्दिर, पूजत सुरपति अति अनुराग॥

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशाष्टमरतिकर गिरि जिन बिम्बसमूह ! अत्रावतरावतर सम्वौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम् (चाल निहाल दे)

पूजन करले जिनवरदेव की जी, कोई दिव शिव सुख दातार॥
गंगाजल सम नीर ले जी, कोई भरि सुवरण भृंगार।
जिनवर पद तर भाव से जी, कोई करधारा त्रयवार॥पू.॥
नन्दीश्वर पश्चिम दिशा जी, कोई अष्टम रतिकर सार।
सुर सुरेश पूजें सदा जी, कोई तापर जिन आगार॥पू.॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशाष्टम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

केशर संग घसाय के जी, चन्दन गन्ध अनूप।
भक्तिभाव उर लायके जी, पूजों जिनवरभूप॥पू.॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशाष्टम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगंधम्।

अक्षत सरस सुहावने जी, कोई देवजीर सुखदास।
अक्षयपद के कारणें जी, कोई पूज करो जिनपास॥पू.॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशाष्टम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरतरु के वरफूल ले जी, कोई महके गन्ध अपार।
कामदहन के कारणें जी, कोई पूजों जिन आगार।।पू.।।
नन्दीश्वर पश्चिमदिशा की, कोई अष्टम रतिकर सार।
सुर सुरेश पूजें सदा जी, कोई तापर जिन आगार।। पू.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशाष्टम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम्।

मिष्ट सरस नेवज मांहि जी, कोई शुद्ध तुरत बनवाय।
क्षुधाहरण के कारणें जी, कोई जिनवर भेंट कराय।।पू.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशाष्टम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम्।

कनक रतनमय दीप ले जी, कोई जगमग जोति प्रकाश।
मोहतिमिर के नाशने जी, कोई करहु आरती पास।।पू.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशाष्टम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम्।

दशविध गन्ध मिलायके जी, कोई धूप करो भवि जीव।
जिनवर पद को पूजिये जी, कोई पावो सौख्य अतीव।।पू.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशाष्टम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम्।

उत्तम फल सुरलोक के जी, कोई लावत सुरपति आप।
पूजन करि जिनराज की जी, कोई नाशत भवसंताप।।पू.।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशाष्टम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम्।

जल फल अर्घ मिलायके जी, कोई अर्घ करो गुण गाय।
अष्टकर्म के नाशने जी, कोई पूजों जिनवर पाय।। पू.
नन्दीश्वर पश्चिमदिशा की, कोई अष्टम रतिकर सार।
सुर सुरेश पूजें सदा जी, कोई तापर जिन आगार।। पू.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीप पश्चिमदिशाष्टम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

त्रेसठ प्रकृति खिपाय के, पायो केवलज्ञान।
तिन पद वन्दों भाव सों, दायक शिव कल्यान ॥

मोतीदास छन्द

जयो जगमें जिन चन्द्रजिनेश, हने जिनने चउ घाति अशेष।
लयो पहिले विधि मोह पछार, तदनन्तर तीन करे विधि छार ॥
हने पहिले अरि सात करुर, चतुर्थम थान लहे गुण भूर।
नमें गुणथान अरी छत्तीस, दशें गुण में अरि लोभ गरीस ॥
द्वदाश में गुणथान सु अन्त, अशेष अरी क्षण मांहि नशन्त।
तिही गुरु देव दिगम्बर रुप, कहावत सर्वप्रकार अनूप ॥
सुकेवलज्ञान धनी जिनराज, सुतेरमथान समवसृति साज।
करें उपदेश महा भवि काज, भवाम्बुधितारण परम जहाज ॥
असंख्य सुरासुर चार प्रकार, तथा पशुजाति अनेक प्रकार।
महा मुनिराज तथा नरराज, चतुर्विधसंघ सुने जिनगाज ॥
कई भवि सम्यकवन्त सुजीव, धरे व्रत संयम भार अतीव।
कई व्रत देश धरें दृढ़ भेष, कई उर चाह दिगम्बर भेष ॥
कई भवि सम्यग्दर्शन पाय, मिथ्यात्व वमें अति ही दुखदाय।
कई जिन पूजन को व्रत धार, करे जिनभक्ति अनेक प्रकार ॥
कई चऊ दान तनो व्रत लेय, कई निशिभोजन त्याग करेय।
कई व्रत ब्रह्म धरें दृढ़रुप, सभी दुर्भाव तजें दुखकूप ॥
धरें व्रतभाव सुशक्ति समान, करें पुरुषारथ से व्रत ध्यान।
हरें विधि पूरब संचित कूर, धरें पग मुक्ति सुमारग भूर ॥
तुम ही प्रभु जी भवतारण हार, तुम ही प्रभु जी करुणानिधि सार।
तुम ही प्रभु जी जग में सुखकार, जिनेश्वर को भवसागर तार ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा

कर्मबन्ध को नाश कर, बसे मुक्ति आगार।
सो प्रभु मेरे उर बसो, करो भवोदधि पार ॥

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपपश्चिमदिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

सोरठा

अशरण शरण सहाय, इस असार संसार में।
हूजों सदा सहाय, तुम दाता जग में बड़े ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥ ३९ ॥

अथ प्रत्येकार्घ (कुसुमलता छन्द)

नन्दीश्वर पश्चिमदिश माहीं, जिनमंदिर रचना अविकार।
जहां जहां जिनप्रतिमा राजे, अनुपम रत्नमई अविकार ॥
तहां तहां बहुभक्ति भाव कर, पूजों जिनवर बिम्ब विचार।
सर्वसिद्धिदायक अघघायक, करो सहाय अनेक प्रकार ॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशासम्बन्धिसर्वजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

नन्दीश्वर पश्चिम दिशवर्ती, व्यन्तर भवनपती सुर सार।
अथवा जोतिष देव विराजे, जिनके गृह जिनवर आगार ॥
जहां जहां जैसे जिनप्रतिमा, अकृत्रिम वा कृत्य विचार।
जिनके चरण कमल को बहुविध, अर्घ चढ़ाय करों नवकार ॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमदिशासम्बन्धि भवनत्रिक देवगृह जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

इति पश्चिम दिशा पूजा सम्पूर्णा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशांजन गिरि जिन मन्दिर पूजा

जोगीरासा छन्द

नन्दीश्वर की उत्तरदिश में, अंजनगिरि वर सोहे ।
जोजन सहस चौरासी ऊँचो, श्यामवरण मन मोहे ।।
ढोल समान गोल ता ऊपर, श्री जिनमंदिर जानो ।
आठ अधिकइकशत जिनप्रतिमा, पूजत सुख अधिकानो ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशांजन गिरि जिनबिम्ब समूह ! तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अथाष्टकम् (चाल होली की)

जिनपद की पूज रचाऊँ, हृदय तिनके गुण गाऊँ ।।टेर।।
निर्मलनीर कनक की झारी, भरि जिनमन्दिर लाऊँ ।
श्री अरिहन्तचरण के आगे, धार देय शिर नाऊँ ।।
जन्मत्रय दुःख मिटाऊँ, हृदय तिनके गुण गाऊँ ।। जि.
नन्दीश्वर उत्तरदिश सोहे, अंजन जिनगृह ध्याऊँ ।
मनवचकाय लगाय गाय गुण, जिनपद शीश नवाऊँ।। जि.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

चन्दन केशर संगमिलाकर, रतन कटोरी धारो ।
सुरसुरपति जिनराजचरण की, पूजा कर बिस्तारो ।।
उन्हीं प्रभु को मैं ध्याऊँ, हृ.। जि.। हृ.। न. ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः सुगंधम् ।

उज्वल अक्षत धोय मनोहर, कंचन थाल भरावे ।
भव्यजीव बहुभक्ति भावसों, श्री जिनचरण चढ़ावे ।।
स्वहित कर पूज रचाऊँ, हृ.। जि:। हृ.। न. ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पारिजात मन्दारआदि के, पुष्प विबुधगण लावें ।
श्रीजिनमंदिर जाय शचीपति, जिनपद अग्र चढ़ावें ।।
चहां मैं शीश नवाऊँ , ह.। जि.। ह.। न. ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम्।

षट्रसमय पकवान बना कर, हर्षसहित सुर ल्यावें ।
श्रीजिनचरण पूजकर सुरगुण, पुण्य प्रकृति उपजावें।।
यही मैं निशिदिन चाहूँ, ह.। जि.। ह.। न. ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम्।

वरन वरन के रत्न मनोहर, सुर सुरपति मिल ल्यावें ।
श्री सर्वज्ञदेव की पूजा, करत ज्ञाननिधि पावें ।।
यही मैं आश लगाऊँ , ह.। जि.। ह.। न. ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः दीपम्।

कृष्णागरु वर धूप दशांगी, भव्य मनोहर लावे ।
वसुविध कर्मदहन के कारण, श्री जिनचरण चढ़ावे ।।
यही शक्ती मैं पाऊँ , ह.। जि.। ह.। न. ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः धूपम्।

षट्रिषु के फल उत्तम लेके, श्रीजिनपूज रचावें ।
भव्यजीव अतिहर्षित मन में, जन्म सफल कर पावें ।।
यही मैं मन में चाहूँ, ह.। जि.। ह.। न. ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः फलम्।

जल फल अर्घ मिलाय गाय गुण, जिनचरणों चित लावे ।
श्री सर्वज्ञ जिनेश्वर आगे, अर्घ अनूप चढ़ावे ।।
कर्मविधि बन्ध मिटाऊँ, हृदय जिनके गुण गाऊँ ।। जि.
नन्दीश्वर उत्तरदिश सोहे, अंजन जिनगृह ध्याऊँ ।
मन वचकाय लगाय गाय गुण, जिनपद शीश नवाऊँ ।।जि.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

दोहा

सुरपति नरपति नागपति, खगपति पूजत पांय।
निस्पृही निर्ग्रन्थ मुनि, ते भी वन्दें आय ।।
ऐसे श्री अरिहन्तपद, परम दिगम्बर देव।
जिनगुरु चरण सरोज की, करों सदा मैं सेव ।।

(चाल विहेहक्षेत्र पूजा की)

समवसरण के बीच में, जगसार हो, चरणन में शिर नाय।
सुर नर खग सेवें सदा, जगसारहो, चरणन में शिर नाय ।।
शिर नाय चतुरनिकाय सुर खग, नर पशू सेवा करें।
मन लाय श्रवणन सुने जिन, उपदेश आनद विस्तरे ।।
त्रयकाल जिनधुनि सुधा वरसे, तृप्त भविचातक भये।
भवदाह को दुख सबै विनशै, स्वहित सुख सहजें लये ।।
श्री अरिहन्त प्रताप से, जगसार हो, जातिविरोध नशाय।
अतिशय श्रीजिनराज को, जगसार हो, जयवन्तो हित-दाय ।।
हितदाय सिंहनि मृग चुखावे, गाय नाहरबाल को।
अहि मोर बाज कपोत खेले; सहित काक मराल को ।।
ऊँदर बिलाव कलाप कर करि, रमत इक ठौहर बिखें।
गजराज अरु मृगराज मिल कर, नेह आपस में लखें ।।
जिनवर की वाणी खिरे जगसार हो, सुधाधार धर गाज।
भविजनमन खेती फले जगसार हो, शुभ अंकूर समाज ।।
सब साज सुख को लहै भविजन, हृदय अति सन्तोषिया।
मनु जन दरिद्र निधीश होकर, तृषित अम्मृत रस पिया ।।
बहु भक्ति कर सुर शक्र नाचे, ताल देत सुहावनी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सब साजबाज समाज अद्भुत, धन्य जिन त्रिभुवन धनी ।।
गणधर पार न पावहीं जगसार हो, इन्द्र रहे शिर नाय ।
मुनिजन ध्यान धरें सदा जगसार हो, तुम त्रिभुवन के राय ।।
जगराय जग हितदाय तुम गुण, बेलि कीरति विस्तरी ।
त्रैलोक्य मण्डप सर्व छायो, शीश पर सुख फल रही ।।
वह फल अनूपम अविच्छित्र, अरोक अमित स्वरुप है ।
दीजे जिनेश्वर देव हमको, वह सुफल सुखरुप है ।।

दोहा

तात मात भ्राता तुम्हीं, मालिक परम दयाल ।
यह निश्चय मन जानके, पूजो आश कृपाल ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

बड़े गरीब निबाज, मै गरीब जग में बड़ो ।
दीजो सर्व समाज, जो जैसो जँह चाहिये ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। ४०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि पूर्वदधिमुख जिन मन्दिर पूजा

दोहा

दधिमुख दधिसम श्वेतछवि, जोजन दश हज्जार।
उन्नत तापर जिनभवन, पूजें सुरपति सार ।।
ताकी बहुविध भक्ति कर, आह्वानन विधि सार।
अपने घर पूजन करुँ, वांछितार्थ दातार ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशांजनगिरि पूर्व दधिमुख गिरि जिनमंदिर जिन बिम्बसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्ह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम (रुप चौपाई)

पद्मद्रह जल उज्वल लीजे, जिनचरणाम्बुज धार सुदीजे ।
जन्मजरा दुख दाह निवारो, भव्य जीव समकित उरधारो ।।
नन्दीश्वर उत्तरदिश जानो, अंजनगिरिके पूरब मानो ।
दधिमुखगिरि पर जिनगृह सोहे, सुर नर पूजत भवि मन मोहे ।।

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि पूर्व दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

केशर अरु कर्पूर मिलाया, वावन चन्दन संग घसाया ।
जिनपद पूजत भक्तिसुधारी, भवआताप मिटावत भारी ।।न.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि पूर्व दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

उज्वल अक्षत धोय धरीजे, उज्वल सुवरण थाल भरीजे ।
उज्वल जिनपद पूज रचावे, उज्वल भावभवि फल पावे ।।न.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि पूर्व दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुसुम अनेक प्रकार मँगावें, कुसुमायुधविजयी गुण गावें।
कुसुम जिनेश्वर चरण चढ़ावें, कुसुमवाणवाधानश जावे।।
नन्दीश्वर उत्तर दिश जानो, अंजनगिरि की पूरब मानो।
दधिमुखगिरिपरजिनगृह सोहे, सुर नर पूजत भविजन मोहे।।

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि पूर्व दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम्

उत्तम नेवज विविध बनावो, उत्तम भाजन में भरि लावो।
उत्तम भाव भविक मन लावो, उत्तमदेवपूजि सुख पावो।।न.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि पूर्व दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम्।

जोतिवन्त दीपक शुचि लीजे, जोतिवन्त जिनपद पूजी जे।
ज्ञान जोति चित तमको नाशे, जोतिवंतनिज भाव प्रकाशे।।न.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि पूर्व दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः दीपम्।

दहन कर्म अरिधूप बनाओ, दहन शुक्ल ध्यानीपद पावो।
दहन मांहि भवि धूप जराओ, दहन कर्महनिशिवपदपावो।।न.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि पूर्व दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः धूपम्।

सुफल अनेक थाल भरि लीजे, सुफल कामना मन में कीजे।
शुभफल दाता के पद पूजों, शुभफलपायमुकतिपदहूजे।।न.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि पूर्व दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः फलम्।

आठ द्रव्यमय अर्घ बनाओ, आठों अंग नायगुण गाओ।
अष्टम क्षितिपतिपूज रचाओ, अष्टम पृथिवी पति कहलाओ।।
नन्दीश्वर उत्तर दिश जानो, अंजनगिरि की पूरब मानो।
दधिमुखगिरिपरजिनगृह सोहे, सुर नर पूजत भविजन मोहे।।

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजनगिरि पूर्व दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

सोरठा

नन्दीश्वर जिनधाम, उत्तर दधिमुख प्रथम की।
पुनि पुनि करों प्रणाम, गाऊँ जयमाला अबै ।।

पद्धड़ी छन्द

जय नन्दीश्वर वद दीप जान, जय ताकी उत्तरदिश महान ।
जय अंजनगिरि सो है उतंग, जय गोल ढोलसम श्यामरंग ।।
जोजन चौरासी सहस सार, ऊँचो ता ऊपर जिनागार ।
जय पूरब ताकी दिश मँझार, जय सजल वापिका भरी सार ।।
ता बीच जान दधिमुख पहार, उन्नत है योजन दश हजार ।
अति श्वेतवर्ण दधिसम अनूप, चहुँ ओर ढोलसम गोलरुप ।।
ता ऊपर श्री जिनभवन सार, सब समवसरण शोभा अपार ।
जिन अन्तरीक्ष राजै सदीव, नित पूज करत तहां भव्य जीव ।।
शतपंच धनुष जिनतनु प्रमान, पद्मासन सोहे दीप्तिमान ।
वसु प्रातिहार्य मंगल सुद्रव्य, इत्यादि और महिमा जु सर्व ।।
जिनछवि निरखत मन मुदित होय, चिरकाल पापमल पुञ्ज धोय ।
भवि पावन समकित रतन सार, संसार खार तें करो पार ।।
अति तेजवन्त जिन दिव्यरुप, प्रभु परम वीतराग स्वरुप ।
मनु सुवरण मांहि सुगन्ध धार, अरु शशिकर मिल प्रगटी अपार ।।
वसु कर्मदाह करि दुखित जीव, तिनको सुखदायक प्रभु सदीव ।
सुर असुर सबै बहुभक्ति लाय, तुम चरणकमल सेवें बनाय ।।
ऋषि मुनि महन्त तुम ध्यान धार, संसार जलधि से होंय पार ।
हम शरणागत आये अबार, हे कृपासिन्धु भवदधि उतार ।।
जगजयी कर्म अरि करो चूर, बहु जीवन को दुख करो दूर ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुन अरज जिनेश्वर की हुजूर, करिए ममनाथ आप रुप ॥

दोहा

करुणानिधि जिनराज तुम, तारण तरण महेश ।
तुम पदपंकज को नमें, सकल सुरासुर शेष ॥

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशांजनगिरि पूर्वदिशाप्रथम दधिमुख गिरि जिनेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

नमूं अंग वसु नाय, भक्तिभाव चित में धरुं ।
मम भव भ्रमण नशाय, अरज सुनो प्रभु दास की॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥ ४१ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशांजन दक्षिण दधिमुखगिरि जिन मन्दिर पूजा

दोहा

नन्दीश्वर उत्तरदिशा, अंजनगिरि वर जोर ।
ताकी दक्षिण वापिका, शोभनीक जल घोर ।।
तास मध्य दधिमुख कह्यो, पर्वत दधिसम श्वेत ।
ता ऊपर जिनभवन हैं, दिवशिव सौख्यनिकेत ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा दक्षिण दधिमुखगिरि जिनबिम्ब समूह! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम (कुसुमलता छन्द)

पुण्डरीक द्रह सम उज्वल जल, जलज गन्ध मिश्रित सुखकार।
धार देत श्री जिनवर आगे, जन्म जरा दुख नाशन हार ।।
नन्दीश्वर उत्तर अंजनगिरि, ताकी दक्षिण वापी सार ।
ताके बीच विराजे दधिमुख, ता पर वन्दों जिन आगार ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा दक्षिण दधिमुखजिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

बावन चन्दन दाहनिकन्दन, कदलीनन्दन है सुखदाय ।
पूजत श्रीजिनचरणाकमल भवि, भवातापदुख देत नशाय ।।
नन्दीश्वर उत्तर अंजनगिरि, ताकी दक्षिण वापी सार ।
ताके बीच विराजे दधिमुख, ता पर वन्दों जिन आगार ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा दक्षिण दधिमुखजिनबिम्बेभ्यः सुगंधम् ।

श्री सुखदास कमोद वासमति, सरल शालि लै विविध प्रकार ।
अक्षतपुंज जिनेश्वर आगे, धरत भव्य पावे भव पार ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नन्दीश्वर उत्तर अंजनगिरि, ताकी दक्षिण वापी सार ।
ताके बीच विराजे दधिमुख, ता पर वन्दों जिन आगार ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा दक्षिण दधिमुखजिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

श्री गुलाब मचकुन्द केवड़ा, बेला कमल चमेली लाय ।
कामदाह निरबारन कारण, जिनचरणम्बुज देत चढ़ाय ।।
नन्दीश्वर उत्तर अंजनगिरि, ताकी दक्षिण वापी सार ।
ताके बीच विराजे दधिमुख, ता पर वन्दों जिन आगार ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा दक्षिण दधिमुखजिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

लाडू घेवर मोदक फैनी, षट्रस व्यंजन तुरत बनाय ।
क्षुधारोग के दूरकरण कों, जिनपद पूजै भवि मन लाय ।।
नन्दीश्वर उत्तर अंजनगिरि, ताकी दक्षिण वापी सार ।
ताके बीच विराजे दधिमुख, ता पर वन्दों जिन आगार ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा दक्षिण दधिमुखजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

दीप रतनमय सुरपति लावे, भक्तिभाव चित में उमगाय ।
केवलज्ञाननिधान प्राप्ति के, हेतु जिनेश्वर पूजे आय ।।
नन्दीश्वर उत्तर अंजनगिरि, ताकी दक्षिण वापी सार ।
ताके बीच विराजे दधिमुख, ता पर वन्दों जिन आगार ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा द्वितीय दधिमुखजिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

चन्दन अगर तगर कृष्णागुरु, धूप सुगन्ध मई बनवाय ।
भविजन कर्मदहन के काजे, जिनपद कमल जजें मन लाय ।।
नन्दीश्वर उत्तर अंजनगिरि, ताकी दक्षिण वापी सार ।
ताके बीच विराजे दधिमुख, ता पर वन्दों जिन आगार ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा दक्षिण दधिमुखजिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोंग लायची पिस्ता किसमिस, एला केला दाख मँगाय।
श्रीफल आदि मुक्ति के कारण, भविजन पूजत जिनवर पांय।।
नन्दीश्वर उत्तर अंजनगिरि, ताकी दक्षिण वापी सार।
ताके बीच विराजे दधिमुख, ता पर वन्दों जिन आगार।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा द्वितीय दधिमुखजिनबिम्बेभ्यः फलम्।

जल फल द्रव्य मिलाय गाय गुण, अर्घ बनाय भक्ति उर लाय।
अष्टम क्षितिपति पद पावन कों, सुरपति जिनपति पूजत जाय।।
नन्दीश्वर उत्तर अंजनगिरि, ताकी दक्षिण वापी सार।
ताके बीच विराजे दधिमुख, ता पर वन्दों जिन आगार।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा दक्षिण दधिमुखजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

जयमाल

गीताछन्द

संसारकारण अतिभयानक, विषम विषधर जोर है।
अतिप्रबल चार कषाय तस्कर, त्रास तिनकी घोर है।।
जगजीव पथिक भ्रमें निरंतर, दुःख बहुविध पावहीं।
मैं चरण पूजों देव जिनके, सुमग जो दरसावहीं।।

पद्धड़ी छन्द

जय जय जिनराज दयानिधान, दरशायो जग में मग महान।
जय समवसरण के मध्य सार, उपदेश कियो आनन्दकार।।
सब तत्वप्रकाश कियो अशेष, आस्त्रव वर्णन यह है विशेष।
आस्त्रव सत्तावन भेद सार, तिन मूलभेद जाने जु चार।।
मिथ्या अविरति जु कषाय योग, इन्ही वश सुख दुख सर्व भोग।
मिथ्यात्वभेद है पांच जान, अविरति के बारह भेद मान।।
पच्चीस कषाय कहे जिनेश, अरु योग जान पन्द्रह विशेष।
इन सब को जोड़े होत सर्व, सत्तावन आस्त्रवभेद सर्व।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिथ्यात्व विषें पचवन बखान, आहारक द्विक बिन सर्व मान।
पच्चास दूसरे थान जान, मिथ्यात्व पंच बिन यह प्रमान।।
अरु तीजे चौथे के मँझार, व्यालीस और छयालीस धार।।
गुण पंचम में तेतीस भेद, चौबीस कहे षष्टम अखेद।।
जय सप्तम अष्टम गुण मँझार, वावीस भेद आस्त्रव उदार।
जय नवम थान के सात भाग, प्रतिभाग एक इक हानि लाग।।
तहां प्रथमभाग सोलह प्रमान, अरु अन्तभाग दशभेद जान।
पन्द्रह से एकादश प्रयन्त, जय मध्यभाग पांचो लहन्त।।
जय दशमें गुण दश भेद जान, ग्यारम बारम नौ नौ प्रमान।
जय तेरम गुण में सात जोग, चौदह स्वामी जिन हैं अजोग।।
यह आस्त्रव भेद कह्यो जिनेश, सिद्धान्त चक्रि सोई विशेष।
गोमट्टसार में कह्यो देव, आस्त्रव अधिकार विषें जु भेव।।
सब तत्व भेददर्शी जिनेश, सत ज्ञान दान दायक महेश।
हे कृपासिन्धु कर कृपा सार, संसार खार तें करो पार।।

दोहा

तुम पदतर निजशीश धर, करत विनय सुरराय।
सो जगपति या जगत में, भव भव दोहु सहाय।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा दक्षिण दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

सोरठा

तुम देवन के देव, गणधरादि सेवें चरण।
छिपो नकोई भेद, मम मनसा पूरी करो।।

।। इत्याशीर्वाद ।। ४२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजन पश्चिम दधिमुख गिरि जिन मन्दिर पूजा

अडिल्ल छन्द

नन्दीश्वर वर द्वीप आठमों जानिये ।
ताकी उत्तरदिश गिरि अंजन मानिये ।।
ताके पश्चिम वापी मध्य विराजहीं ।
दधिमुखगिरि जिनभवन मांहि छवि छाजहीं ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशापश्चिमदधिमुखगिरि जिनबिम्ब समूह! अत्रावतरावतर सम्वौषट् इत्याह्वानम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम (जोगीरासा)

चारों गति के जीव जगत में, जन्ममरण दुख पावें ।
ता दुख दूरकरण को भविजन, जल जिनचरण चढ़ावे ।।
नन्दीश्वर उत्तर अंजनगिरि, ताकी पश्चिम सोहे ।
दधिमुखगिरि पर श्री जिनमंदिर, सुरसुरपति मन मोहे ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा पश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

चाह दाह दाहै जीवन को, विधि वश मिलत न चाहा ।
ता दुख दूरकरण को सुरपति, चन्दन चरण चढ़ाहा ।। न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा पश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः चन्दनम् ।

सुरपति नरपति चक्री सब पद, जग में अथिर बताये ।
अक्षयपद पावन को भविजन, अक्षत चरण चढ़ाये ।।न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा पश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ब्रह्मा हरि हर शक्र चक्रपति, जीते काम सभी ते ।
पुष्प चढ़ाय जिनेश्वर आगे, भव्य मदनसर जीते ।।
नन्दीश्वर उत्तर अंजनगिरि, ताकी पश्चिम सोहे ।
दधिमुख गिरि पर श्रीजिनमंदिर, सुर सुरपति मन मोहे ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा पश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

दानव देव मनुज विद्याधर, सूर्य शशी वश जाके ।
तादुख दोष क्षुधाहर प्रभु के, चरण जजत चरु लाके ।।न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा पश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

शंकर सूर्य शशी हरि ब्रह्मा, मोह जाल में आये ।
ता अरि मोह महातम नाशन, जिनपद दीप चढ़ाये ।। न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा पश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

ज्ञान दरश आवरण महा अरि, उनके दाहन काजे ।
भविजन धूप दहन में खेवें, सन्मुख श्री महराजे ।। न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा पश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

अन्तराय दुखदाय जगत में, या सम दूजो नाहीं ।
ताहि निवारणकाज सुफल ले, भविजन भेंट कराहीं ।। न.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा पश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जलफल अर्घ बनाय मनोहर, सुरपति भक्ति बढ़ा के ।
सुरपद सफल गिनत सुरनायक, जिनपद अर्घ चढ़ा के ।।
नन्दीश्वर उत्तर अंजनगिरि, ताकी पश्चिम सोहे ।
दधिमुख गिरि पर श्रीजिनमंदिर, सुर सुरपति मन मोहे ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा पश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

सुर नर पशु नारक विषें, तन धारे यह जीव।
देहरहित सिद्धातमा, तिन पद नमों सदीव।।

पद्धड़ी छन्द

जय श्रीपति श्री अरिहन्त देव, जय लखत चराचर वस्तु भेव।
जय चार घातिया कर्म हान, जय केवज्ञान लहो महान।।
सर्वज्ञ सर्वदर्शी जिनेश, जय ब्रह्मा विष्णु तुम्हीं महेश।
जय समवसरण के मध्य सार, चतुरानन राजें निराधार।।
जय सप्त तत्त्व षट् द्रव्य सार, सव वर्णन कीनों बहु प्रकार।
तहां जीव देव के भेद मांहि, तनभेद कहो मैं कहूँ ताहि।।
औदारिक वैक्रियिक देह सार, आहारक तैजस कर्म धार।
यों पांच प्रकार शरीर जान, नर पशु को औदारिक प्रमान।।
वैक्रियिक देव नारकि शरीर, अब आहारकविधि सुनो वीर।
आगमप्रमाणमय अर्थ जोय, काहू मुनि के सन्देह होय।।
मुनि दशम द्वार से प्रगट होय, आहार शरीर जु कहो सोय।
सित फटिकवरण इकहस्त मान, नहिं चक्षुगम्य गतधातु जान।।
केवलि श्रुतकेवलि निकट जाय, फिर आय सुगुरु तन में समाय।
केवलि जिनको है तन अनूप, सो परमौदारिक दिव्यरुप।।
नहिं रहे धातु उपधातु कोय, दुति फटिकसमान शरीर होय।
जय तैजस दोय प्रकार जान, शुभ अशुभ भेद मुनि के महान।।
कर्माण-वर्गणा स्कन्ध रुप, कार्माण-देह कापोतरुप।
तैजस कार्माण अनादि संग, इकसमय होय जिन चार अंग।।
जय विग्रहगति बिन सर्वकाल, तन तीन तथा चारो विशाल।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इक विग्रहगति में दोय देह, तैजस कार्माण कही जु तेह ॥
जय वैक्रिय आहारक बताय, ये पंचेन्द्रिय के होय काय ।
औदारिक एकेन्द्रिय लगाय, पंचेन्द्रिय तक जानो सुभाय ॥
इत्यादि अनेक शरीर भेद, वर्णन कीनो जिनवर अखेद ।
सो जगदीश्वर मम उर मँझार, कर वास खास संसार तार ॥
जगतारी जगदीश जिन, जयवन्तो त्रयकाल ॥
जयलक्ष्मी मम दीजिये, अरिसमूह में हाल ॥

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा पश्चिम दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

सुनो स्वपर हितकार, वचवारिधिपति चन्द्रसम ।
वचन सुधा उनहार, मम उर वास करो प्रभु ॥

॥इत्याशिर्वाद॥ ४३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशांजन उत्तर दधिमुख गिरिं जिन मन्दिर पूजा

अडिल्ल

नन्दीश्वर वर द्वीप दिशा उत्तर कही ।
चौथे दधिमुख ऊपर जिनगृह मणिमयी ।।
सकल सुरासुर आय भक्ति मन लायके ।
पूजत जिनवरचरण मही शिर नायके ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजन उत्तर दधिमुखगिरि जिन बिम्बसमूह। अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम (गीता छन्द)

सुरनदी उद्भव जल अनूपम, मिष्ट शीतल लीजिये ।
भवतृषा दाह निकन्द कारण, धार जिनपद दीजिये ।।
वर द्वीप नन्दीश्वर मनोहर, तास उत्तर सजल हैं ।
दधिमुख चतुर्थ महान तापर, जिनभवन सुर जजत हैं ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशांजन उत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

गोशीर और कपूर केशर, गन्ध द्रव्य सुहावनी ।
भवताप नाशन हेतु भवि, जिनराजचरण चढ़ावनी ।। व.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशांजन उत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

सुखदास और कमोद तन्दुल, श्वेतवर्ण सुहावने ।
जिनराज चरण अगारि भविजन, पुंज धारत पावने ।। व.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशांजन उत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्दार सुन्दर पारिजात, नमेरु कुसुम समूह ले ।
जिनराज अग्र चढ़ाय भविजन, मीन केतन शर दले ।।
वर द्वीप नन्दीश्वर मनोहर, तासु उत्तर सजत हैं ।
दधिमुख चतुर्थ महान तापर, जिनभवन सुर जजत हैं ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशांजन उत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

मनमोद कारण मोदकादिक, विविध नेवज राजहीं ।
जिनपद चढ़ावत भव्यजन के, क्षुधादुख सब भाजहीं ।। व.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशांजन उत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

द्युतिवन्त रतन अनूप लेकर, देव नन्दीश्वर विखें ।
जिनराजचरण चढ़ाय दीपक, लहत निजसम्पत्ति अखैं ।। व.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशांजन उत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

घनसार कृष्णागुरु सुगन्धित, द्रव्य उत्तम लाइये ।
वसुविधिहरण जिनचरण आगे, भक्ति सहित चढ़ाइये ।। व.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशांजन उत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

फलललित मिष्ट महान मनहर, कनक थाल भरायके ।
वर मुक्तिफल भविजन लहे, जिनराजचरण चढ़ाइके ।। व.

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशांजन उत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः फ़लम् ।

जलगन्ध अक्षत पुष्प चरु वर, दीप धूप फलावली ।
यह अर्घ लाय चढ़ाय जिनपद, सुख लहे विबुधावली ।
वर द्वीप नन्दीश्वर मनोहर, तासु उत्तर सजत हैं ।
दधिमुख चतुर्थ महान तापर, जिनभवन सुर जजत हैं ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशांजन उत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

दशविध धम्र सम्हारि के, दशविध बन्ध विदार।
बसे जाय शिवमहल में, सो प्रभु मोकों तार ।।

पद्धड़ी छन्द

जय श्री सर्वज्ञ महन्त देव, जय चतुर्निकायी करत सेव ।
जय जिन सब तत्व कियो प्रकाश, दरसायो शिवपुर पंथवास ।।
संसार तत्व में बन्ध भेद, दरसायो श्री जिनवर अखेद ।
तहां बन्ध चार परकार जान, थिति प्रकृति प्रदेशनुभाग मान ।।
तहां प्रकृतिबन्ध के नाम जान, सो ज्ञानावरणादिक पिछान ।
कर्माणू गणना लख प्रदेश, ये दोय बन्ध हैं जोग लेश ।।
जिमि विधिसहवास जु काल सोय, थितिबन्ध तासु को नाम होय।
जैसो सुखदुख मय फल विशाल, अनुभागवन्ध वह कह्यो हाल ।।
चारों के चउ चउ भेद मान, उत्कृष्ट अनुत्कृष्टी प्रमान ।
अजघन्य चतुर्थ जघन्य भेद, इमि सोलह भेद गिनो अखेद ।।
ते सोलह भी चउ चउ प्रमान, सादी अनादि ध्रुव अध्रुव वान ।
इन सब के लक्षण गुण महान, गोमट्टसार तें लेहु जान ।।
अब बन्ध तत्त्व फिर दश प्रकार, तिनको वर्णन जानो अपार ।
संक्षेप नाम कछु कहूँ सोय, गुरु परम दिगम्बर कह्यो जोय ।।
जय बन्ध उदय अरु उदीरणाय, अरु सत्ता उत्कर्षण कहाय ।
अपकर्षण संक्रम उपशमेघ, नव निधति उशम निःकांचितेय ।।
विधि जीव मिले यह बन्ध जान, ताको फल उदय कह्यो पुरान ।
बिन काल उदय आवे जु सोय, उद्दीरण जानो भव्य लोय ।।
विधि द्रव्य रहे सौ सत्व सार, उत्कर्षण थिति बढ़ती विचार ।
थिति घटने को उपकर्ष मान, ज्यों श्रेणिक भू पहली सुथान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमरुप संक्रमण जान सार, उपशम निजकाल उदय प्रचार।
संक्रमण उदय बिन निधति जान, चउ बिना निकांचित बन्ध मान।।
संक्रमण बिना नव करण सार, इक आयुकर्म के होंय सार।
वाकी सातों विधि के मँझार, दश करण होंय यह हृदय धार।।
इन आदि अनेक विधान थान, सब बन्धभेद वरणों पुरान।
सो जगत जिनेश्वर जग मँझार, जयवन्त रहो कीरति अपार।।

दोहा

दशविध बन्ध विदारिके, वसे मुक्ति में जाय।
सो सिद्धेश हमेश मम, जूजो शरण सहाय।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजन उत्तर दधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

सोरठा

करो कर्म परिहार, धार स्वगुण मम उर विषें।
हे प्रभु जग तें तार, तुम स्वामी त्रैलोक के।।

।। इत्याशीर्वाद ।। ४४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजन गिरि प्रथम रतिकर गिरिजिनमन्दिर पूजा

गीता छन्द

शुभ द्वीप नन्दीश्वर मनोहर, तास उत्तर में सही ।
अतिश्याम अँजन नाम पर्वत, तास पूरब दिश कही ।।
जलसहित वापी तास पहले, कोन में रतिकर कहा ।
तापर जिनेश्वर भवन जिहि को, सुर असुर पूजें महा ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा प्रथम रतिकर जिन बिम्ब समूह! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्

अथाष्टकम (दोहा)

उत्तम जल भृंगार भर, कर उज्वल निज भाव ।
जो भवि जिनवर पद जजे, सो निजरुप लखाव ।।
नन्दीश्वर उत्तर दिशा, पहलो रतिकर एव ।
तापर जिनगृह जजत हैं, सुर सुरपति वसु भेव ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम्।

चन्दन चन्द्रमरीचिसम, शीतलगुण करतार ।
जिनवरपद भवि पूजि के, पावत है भव पार ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

हीर नीर नीरज शशी, तासम अक्षत श्वेत ।
पुंज देय जिनअग्र भवि, अजर अमर पद देत ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम्।

दृग मन नासा को करें, मोहित सुमन अनूप ।
जिनवरचरण चढ़ाय भवि, होत ब्रह्मपद भूप ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नेवज विविध प्रकार के, कंचनथाल भराय।
क्षुधादोष निरवार-हीं, भविजन अग्र चढ़ाय ।।
नन्दीश्वर उत्तर दिशा, पहलो रतिकर एव ।
तापर जिनगृह जजत हैं, सुर सुरपति वसु भेव ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

तमहर ज्योति जगाय के, हर्ष हृदय में धार ।
सुर सुरपति जिनचरण को, पूजत स्वहित विचार ।।न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

दशविध धूप मिलाय के, धूप बना के खेव ।
कर्मदहन के कारणें, पूजे श्री जिनदेव ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

उत्तम शुचिफल लाय के, पूजें श्री जिनराज ।
भक्तिभाव उर में धरो, पावें जिनपद राज ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल फल द्रव्य मिलाय के, अर्घ बनावें एव ।
शिवसम्पति के लाभ को, पूजैं श्री जिनदेव ।।
नन्दीश्वर उत्तर दिशा, पहलो रतिकर एव ।
तापर जिनगृह जजत हैं, सुर सुरपति वसु भेव ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा प्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल

अडिल्ल

सकल सुरासुर पूजत जिनके चरण कों ।
ऋषि मुनिजन मन ध्यावत भवदधितरण को ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चक्रपती नरराज जपें अघहरण को ।
तिनको मैं नित जजों सुमंगलकरण को ।।

भुजंगप्रयात छन्द

जयो देव देवेन्द्र भी चर्ण सेवे, जयो देव नागेन्द्र भी शीश नावे ।
जयोदेव यक्षेन्द्र सेवा रहावे, जयोदेव मर्त्येन्द्र पूजा रचावे ।।
जयोदेव राजेन्द्र चक्री खगेशा, जयोदेव अंघ्री सुसेवें हमेशा ।
जयोदेव तोकों सु पूजें दिवेन्द्रा, जयो देव तोकों नमें है मृगेन्द्रा ।।
जयो देव भू में तुहीं सौख्यकारी, जयोदेव तूं ही सुधर्माधिकारी ।
जयो देव तूं ही महानन्दकर्ता, जयोदेव तूं ही महामोह हर्ता ।।
जयो देव तू एक चिद्रूप धारी, जयोदेव दृग्ज्ञान चारित्र धारी ।
जयो देव रत्नत्रयी के सुस्वामी, जयो देव के नंताख्य चौ के सुपामी ।।
जयो देव कल्याण पांचो सुईशा, जयो देव षट्खंड चक्री महेशा ।
जयोदेव तूं ही सुतत्वोपदेशी, जयो देव आठैं सुभूमी निवासी ।।
जयोदेव तूं ही वसू कर्मनाशी, जयो देव तू अष्टरिद्धी प्रकाशी ।
जयो देव नौ लब्धि के आप स्वामी, जयो देव सद्धर्म धारे आगामी ।।
जयो देव महात्मय तेरा अनंता, नहीं चार ज्ञानी लहें जास अंता ।
जयो देव भू में तुम्हीं हो सहाई, तुम्हीं तात माता तुम्हीं ज्येष्ठ भाई ।।
तुहीं देव भू में बिना काज त्राता, अयाचीक सम्पति के आप दाता ।
महा आपदा में तुम्हीं हो सहाई, प्रभू सत्य मैंने यही जान पाई ।।
अनेकों सती को तुं हूआ सहाया, अनकों दुखी को दिया चित्त चाया ।
अनेकों सुनीचों सु तू ने उबारा, करे कौन संख्या गणी आप हारे ।।
प्रभू मैं तिहारे पदों का सुचेरा, महाकर्म ने मोहि दे देव घेरा ।
दृढ़ीचित हो के लहो शर्ण तेरा, तुहीं देव न्यायी करो न्याय मेरा ।।
न मैंने विधी का कछू भी विगारा, न मैंने कछू राज याका निवारा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिनाकाज मोको दियो दुःख भारी, कृपासिन्धु मेरी सुनो या पुकारी ।।
जिसो जासको दोष तो ताहि दीजे, तुहीं न्याय स्वामी सही न्याय कीजे।
हमें तो प्रभु एक आशा तुम्हारी, निसुनो देव या एक अर्जी हमारी ।।

दोहा

निजिपति निजनिधि दीजिये, लीजे विरद निभाय।
आश जिनेश्वर की भरो, तुम हो त्रिभुवन राय ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाप्रथमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

करो कृपा जिनराज, आज काज यह कीजिये ।
दीजे मुक्तिसमाज, आये को जस लीजिये ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। ४५ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजन गिरि द्वितीय रतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

जोगीरासा छन्द

नन्दीश्वर वर द्वीप आठमों, ताके उत्तर जानो ।
अंजनगिरि ताकी पूरब दिश, वापी कोण प्रमानो ।।
तामें दूजो रतिकर पर्वत, तापर जिनगृह मानो ।
सकल सुरासुर ताहि जजत हैं, भक्तिभाव अधिकानो ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर द्वीपोत्तरदिशाद्वितीय रतिकरगिरि जिन बिम्बसमूह! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अथाष्टकम (सोरठा)

उज्वल नीर अनूप, कंचनझारी में भरों ।
पूजों श्रीजिन भूप, जन्म जरा दुख को हरो ।।
नन्दीश्वर जिनधाम, उत्तर अंजन पूर्व में ।
पूजों रतिकर नाम, सुर सुरेश पूजा करें ।।

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशाद्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

बावन चन्दन सार, केशर रंग मिलाय के ।
जजि जिनपद हितकार, अविनाशी पद पाइये ।।न.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशाद्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम् ।

स्वच्छ सुगन्धित श्वेत, अक्षत कंचन थाल भर ।
पूजों जिन निजहेत, भविजन अक्षयपद मिले ।। न.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशाद्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुवरण वर्ण अनेक, पूष्प मनोहर लीजिये ।
जिनपूजा की टेक, हरे अतनुबल पलक में ।।
नन्दीश्वर जिनधाम, उत्तर अंजन पूर्व दिश ।
दूजो रतिकर नाम, सुर सुरेश पूजा करें ।।

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशाद्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

नेवज विविध प्रकार, षट्रसमय मन मोहने ।
पूजों जिनपद सार, क्षुधारोग उर भाजहीं ।। न.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशाद्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

दीपक ज्योति प्रकाश, तमहर उज्वल चन्द्रसम ।
पूजों जिनपद खास, वास लहो शिवमहल को ।। न.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशाद्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

कृष्णागरु कर्पूर, चन्दन धूप सुगन्ध है ।
दुखद कर्म है दूर, पूजों श्रीजिनचरण को ।। न.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशाद्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम्।

श्रीफल लोंग बदाम, पिस्ता किसमिस आदि ले ।
पूजों जिन अभिराम, मनबांछित यातें मिलें ।। न.

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशाद्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल फल द्रव्य मिलाय, अर्घ बनाओ भावसों ।
पूजों श्री जिनराय, कर्मबन्ध दुखदा मिटे ।।
नन्दीश्वर जिनधाम, उत्तर अंजन पूर्व दिश ।
दूजो रतिकर नाम, सुर सुरेश पूजा करें ।।

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तर दिशाद्वितीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

दोहा

कर्मबन्ध को नाश के, भये शुद्ध निजरुप।
सो परमात्मा सिद्ध प्रभु, मोकों कर शिवभूप।।

पद्धड़ी छन्द

जय शुद्ध द्रव्य आतम स्वरुप, जय वीतराग त्रैलोक्यभूप।
त्रैलोक्य शिखर पर विद्यमान, वसु दीरघ सब निजगुण समान।।
जय बिन-मूरत चैतन्यरुप, जय निराकार आकृति अनूप।
जय अमल अचल अक्षय अनन्त, जय अविनाशी सुखमय रहन्त।।
जय अवगाहन उत्कृष्ट सार, शत पंच धनुष पच्चीस धार।
जय जय जघन्य कर अर्घ तीन, मध्यम इन आदि अनेक चीन।।
खड्गासन आसन पद्म धार, अथवा अनेक आसन प्रकार।
सब जल थल ढाई द्वीप मांहि, तिह ऊपर सिद्ध सदा रहाहिं।।
सब बन्धरहित प्रभु निर्विकार, अशरण्य शरण जग निराधार।
त्रैलोक्यशिखर के अन्त मांहि, तनुवातवल्य में थिर रहांहि।।
जय सम्यग्दर्शन ज्ञान सार, बल वीरज सौख्य अनन्त धार।
जय जन्ममरण कर रहित देव, जय सर्व गुणों कर सहित देव।।
जय कायविवर्जित निष्कषाय, जय क्रोध मान बिन लोभ माय।
निर्विषय सर्वज्ञायक महेश, रिषि मुनिजन ध्यान धरें हमेश।।
तुम चरणकमल को शीश नाय, सुर असुर ध्यान धारें बनाय।
जय नरपति खगपति नाग ईश, पदभक्ति करत नित नाय शीश।।
जय जय त्रिकाल त्रैलोक्य मांहि, जो वस्तु चराचर लखे ताहि।
प्रभु पूरण ब्रह्मस्वरुप देव, हम शीश नायनित करत सेव।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे सर्व शिरोमणि सिद्ध देव, तुम तक नहिं पहुँचे शब्द भेव ।
तदि भक्तिभाव फलदाय सोय, भव भव के मांहि सहाय होय ।।
यातें मैं अरज करुँ पुकार, हे कृपासिन्धु संसार तार ।
इमि अरज जिनेश्वर करे देव, जय शिवफल देकर सुयश लेव ।।

दोहा

नन्दीश्वर उत्तर दिशा, जिनगृह रतिकर भाल ।
मन वच काय लगाय के, वरणी यह जयमाल ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाद्वितीयदधिमुख जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

मन वच काय लगाय, बन्दों सिद्ध महेश को ।
जिनपद हिरदे धार, चहूँ सिद्ध सुधान कों ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। ४६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांजन गिरि तृतीय रतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

गीता छन्द

वर द्वीप अष्टम दिशा उत्तर, तृतिय रतिकर राजहीं ।
तिहि शीश जिनवर भवन सोहे, बहु रतनमय छाजहीं ।।
जिनराज बिम्ब अकृत्य सोहे, कोटि रवि शशि लाजहीं ।
इक वरष में त्रयवार सुरपति, तहां पूज रचावहीं ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशातृतीय रतिकर गिरि जिन बिम्बसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अथाष्टकम् (गीता छन्द)

मुनिराज मनसम नीर निर्मल, रतन भृंग भराइये ।
जिनराज चरणसरोज आगे, भविक नीर चढ़ाइये ।।
वर द्वीप अष्टम इन्द्र दिश में, तृतिय रतिकर गिरि कहो ।
तापर जिनेश्वरभवन सुरपति, जजत भविजन सरदहो ।।

ओं ह्रीं नंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशा तृतीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

गोशीर वावन गन्ध पावन, महक दशदिश में भरी ।
जिनराज पदतर धार देकर, उष्णता विधिकृत हरी ।। वर.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा तृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम् ।

अतिसरल सित शुचि सार अक्षत, थाल भर करि लीजिये ।
जिनराज चरण चढ़ाय भविजन, अक्षयपद को लीजिये ।। वर.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा तृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुवर्ग सुवरण गन्धपूरित, कुसुम वर कर लेय के ।
भवि अतनुशर की पीर नाशै, पुंज जिनपद देय के ।।
वर द्वीप अष्टम इन्द्रदिश में, तृतिय रतिकर जिन कहो ।
तापर जिनेश्वर भवन सुरपति, जजत भविजन सरदहो ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा तृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम्।

पकवान नानाविध बना कर, कनक थाल सजाइये ।
जिनराजचरण चढ़ाय भविजन, क्षुधारोग नशाइये ।। वर.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा तृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

वर दीपज्योति प्रकाश तमहर, रतन सुवरण के करों ।
भविजीव भ्रमतम हरण कारण, जिनचरण आगे धरों ।। वर.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा तृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

दशगंध प्रसरित दशदिशा में, धूप उत्तम लीजिये ।
जिनराजचरण चढ़ाय भविजन, विघ्न कर्म दहीजिये ।। वर.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा तृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम्।

श्रीफल सुपारी लोंग पिस्ता, दाख खारक लीजिये ।
भविजन महाफल मुकति कारण, भेंट जिनवर कीजिये ।। वर.

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा तृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम्।

जल आदि फल पर्यंत वसुविध, द्रव्य अर्घ बनाइये ।
वसुकर्मनाशक शिवनिवासक, देवचर्ण चढ़ाइये ।।
वर द्वीप अष्टम इन्द्रदिश में, तृतिय रतिकर जिन कहो ।
तापर जिनेश्वर भवन सुरपति, जजत भविजन सरदहो ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा तृतीयरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

दोहा

श्री अरिहन्त जिनेश के, चरणन शीश नवाय।
जिन जयमाला वरनऊँ, जिनवर होहु सहाय ।।

पद्धड़ी छन्द

जय वीतराग प्रभु ज्ञान ईश, जय निजलक्ष्मी निधिदान ईश।
जय अनुपम उज्वल ध्यान ईश, जय तुम जग मांहि महान ईश ।।
बिन क्रोध मोह अरि लियो मार, बिन मान अयाचकवृति धार।
बिन माया माया सर्व डार, बिन लोभ गही सम्पति अपार ।।
बिन द्वेष दुष्ट को दुख अपार, बिन राग सन्तजन दये तार।
यह वृत्ति अलौकिक देख देव, सुर असुर करें तुम चरणसेव ।।
जय निजसम्पति नहिं करो दान, जय परसम्पंति को नहीं ध्यान।
जय तो भी सब को शिवसमाज, जय देहु धन्य दातार राज ।।
जय याचक तुम दरबार आय, नहिं लेय कछू इच्छा पलाय।
जय धन्य तुम्हीं दातार देव, शिर नाय जिनेश्वर करे सेव ।।
जय चायक आवे तुम अगार, सब युगपत माँगे लगातार।
सब इच्छित फल पावे अनूप, धनि तुम लक्ष्मी अक्षय सरुप ।।
जय इन्द्र याचना करो सोय, ऋषि मुनि भी याचकरुप होय।
तुम चरण कमल की भक्ति सार, मांगे उद्भुत महिमा अपार ।।
जय बाहिज लक्ष्मी अति अगाध, तो अन्तरङ्ग को कहै साध।
जय नाम लेत रसना पवित्त, सुर ध्यावत हैं प्रभु एक चित्त ।।
तुम अशरण शरण सहाय देव, तुम विनकारण सुखदाय देव।
तुम भवसागर से पार देव, हम करत सदा तुम चरंणसेव ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय जब तक मेरो जगत वास, जय जब तक देवे कर्म त्रास ।
जय जब तक तुम पदकमल आश, मम हृदय विराजें आप खास ।।

दोहा

भवनाशन भगवान के, चरणन शीश नवाय ।
अरज करूँ यह एक मैं, भव भव होहु सहाय ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा तृतीय रतिकर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

तारण तरण जिनेश, यह अरजी सुन लीजिये ।
काटो कर्मकलेश, मम इच्छा पूरी करो ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। ४७ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशांजन गिरि चतुर्थ रतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

चौपाई छन्द

नन्दीश्वर उत्तर दिश जानो, चौथो रतिकर जिनगृह मानो ।
सुर सुरपति नित पूजन आवें, जिनपद को हम अर्घ चढ़ावे ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा चतुर्थ रतिकर जिन बिम्ब समूह! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अथाष्टकम् (चौपाई छन्द)

पद्मद्रह जल उज्वल लावे, सुरपति जिनपद अग्र चढ़ावे ।
भक्तिसहित प्रभु के गुण गावे, जन्म मरण दुख मूल नशावे।।
नन्दीश्वर उत्तरदिश जानो, चौथो रतिकरगिरि तहाँ मानो ।
तापर जिनमन्दिर सुखदाई, पूजत सुरपति मन हरषाई ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाचतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

मलयागिरि चन्दन घस लीजे, ता मधि केशर रंग धरीजे ।
भक्तिसहित जिनवर को पूजे, भव आतापरहित भवि हूजे ।। न. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाचतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगनधम् ।

अक्षत कंचनथाल भरावो, जिनवर चरणन पुंज चढ़ावो ।
मोदसहित जिनके गुण गावो, या विध अक्षतपद को पावो ।। न. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाचतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

दशदिश गन्ध रही महकाय, ऐसे फूल सुगन्धित लाय ।
मकरध्वज मदभंजन काज, भव्यजीव पूजें जिनराज ।। न. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाचतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फेनी गोझा मोदक खाजे, शुद्ध सरस बनवावत साजे ।
दोष क्षुधा निरवारण काजे, चरण जजत भवि श्रीजिनराजे ।।
नन्दीश्वर उत्तरदिश जानो, चौथो रतिकरगिरि तहां मानो ।
तापर जिनमन्दिर सुखदाई, पूजत सुरपति मन हरषाई ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाचतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

उत्तम दीप बना कर लीजे, जिनपद को भवि पूजन कीजे ।
यातें मोहमहातम भागे, ज्ञानप्रकाश अनूपम जागे ।। न. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाचतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम्।

गन्ध अनूप दशों दिश सोहे, भविजीवन के मन को मोहे ।
ऐसी धूप धनंजय खेवे, भव्यजीव अनुभव से वेवै ।। न. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाचतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम्।

श्री फल लोंग बदाम छुहारे, नारिकेल पिस्ता अधिकारे ।
श्री जिनवर की भेंट चढ़ावे, भव्यजीव शिवफल को पावे ।। न. ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाचतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल फल अर्घ बनाय चढ़ावे, जिनपद भक्ति हृदय में लावे ।
सो निश्चय निजपुण्य बढ़ावे, क्रम क्रम से शिवमन्दिर जावे ।।
नन्दीश्वर उत्तरदिश जानो, चौथो रतिकरगिरि तहां मानो ।
तापर जिनमन्दिर सुखदाई, पूजत सुरपति मन हरषाई ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाचतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल

दोहा

श्री जिनचरण प्रणाम कर, धर सिद्धन को ध्यान ।
जयमाला वर्णन करों, जिन आज्ञा परिमान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्धड़ी छन्द

जय दीनबन्धु करुणानिधान, जय अशरण शरणसहाय मान ।
जय भवजलतारण तरण एव, जय जय कर सुरपति करत सेव ।।
जय प्रथम दिगम्बरधर्म धार, जय जीते दूजे घाति चार ।
जय तृतिय धर्म उपदेश देय, जय जय जय या विध त्रय भनेय ।।
जय परपदार्थ सब त्याग दीन, जय आत्मस्वार्थपरिणमन कीन ।
जय पुरुषारथ कर सिद्ध चार, जय जय जय याविधि त्रय उचार ।।
जय क्षायिकसम्यक प्रथम धार, जय फिर लीनों चारित्र सार ।
जय प्रगटो केवलज्ञान भान, जय जय जय इमि त्रयविध महान ।।
जय भक्तजीव सुख लहै सार, जय दुष्ट अविनयी दुख पसार ।
जय परम वीतरागी अनूप, जय जय जय इमि त्रय जगतभूप ।।
जय नाम जपै सो सुख लहन्त, जय ध्यान धरै सो दिव वसन्त ।
जय निस्पृह भवि निरवान जाय, जय जय जय इमि त्रयविध कहाय ।।
जय उरध मध्य पाताल वास, जय तुम चरणाम्बुज जपै खास ।
त्रैलोक्यपती तुम ही जिनेश, इमि जय जय जय त्रयवार वेश ।।
जय तिहुँ काल में एकरुप, जय शुद्ध नयार्पित वच सरुप ।
जय उत्पात-व्यय-ध्रौव्य-रुप, ऐसे जय जय जय त्रय अनूप ।।
जय तुम जिनेश निर्मल महान, जो समल कहे सो क्रूर जान ।
जो दृगरोगी लख संख श्वेत, पीतादि कहे सो नर अचेत ।।
प्रभु तुम शरीर की ज्योति पाय, परकाश रत्नमय भयो आय ।
प्रभु तुम स्वभाव अतिस्वच्छ जान, परकाश भयो स्फाटिक समान ।।
जय जय तुम महिमा अगम सार, गणपति नहिं पावे कहत पार ।
जय तुम प्राभव से मानथम्भ, जग मान हरे अद्भुत अचम्भ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय जय जिनराज दयानिधान, कर दया-जिनेश्वर पै महान ।
संसार खार तें करो पार, जगबान्धव यह सुनिये पुकार ।।

दोहा

दयाधुरन्धर देव तुम, गुण सागर भरपूर ।
करो जिनेश्वर पै कृपा, मम चित वसो हुजूर ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा चतुर्थ रतिकर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

या जगविपत मँझार, विनहित बांधव तुम सुने ।
मेरी सुनो पुकार, वारवार अरजी करों ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। ४८ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशांजन गिरि पंचम रतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

गीता छन्द

वर द्वीप अष्टम इन्द्र दिश में, पांचमा रतिकर कह्यो ।
तापर अकृत्रिम श्री जिनालय, सुर असुर दर्शन लह्यो ।।
तहां बिम्ब जिनवर के अनूपम, सुरासुर मन मोहई ।
पुरुदेव सम सर्वांग जिनके, रतनमय छवि सोहई ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशापंचमरतिकर गिरि जिन बिम्बसमूह । अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ।

अथाष्टकम् (जोगीरासा छन्द)

अन्तर्दाह दहे जगप्राणी, गति गति में दुख पावे ।
ता दुख दूरकरन के कारण, जल जिनचरण चढ़ावे ।।
नन्दीश्वर की उत्तरदिश में, पंचम रतिकर सोहे ।
तापर श्रीजिनमंदिर राजे, सकल सुरासुर मोहे ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

जन्ममरण दुखताप तपे नर, भव भव में दुख पावे ।
शांतिसुधा सुखपावतभविजन, चन्दन चरण चढ़ावे ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम् ।

तनमन धरत विपदा अति, जग में थिर न रहावे ।
अक्षयपद के काज चतुर नर, अक्षत चरण चढ़ावे ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नारी नपुंसक पुरुष वेद के, खेद सहे बहु तेरे ।
ता दुखहरणचरण जिनपतिके, पुष्प चढ़ावत मेरे ।।
नन्दीश्वर की उत्तरदिश में, पंचम रतिकर सोहे ।
तापर श्री जिनमन्दिर राजे, सकल सुरासुर मोहे ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

जगतजीव कुल जात लजावत, एक क्षुधा के पेरे ।
ता अरि जीतन उत्तम चरु ले, पूजत जिन! पद तेरे ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

ज्ञान प्रकाश बिना जग मांही, जीव सहे दुख भारी ।
ताकी प्रापति काज जिनेश्वर, पद तर दीपक धारी ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

या विधिवश नरपति पशु होवे, थावर में सुर आवे ।
ता विधिदहन दहन धूपायन, श्री जिनचरण चढ़ावे ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

सर्वोत्तम अविनाशी सुख कर, मुक्ति महाफल ध्यावो ।
ताके काज भव्य जिनवर के, पदतर सुफल चढ़ावो ।। न.

ओं ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जल फल आठों द्रव्य मिलाकर, अर्घ बनाओ भाई ।
अष्टकर्म के नाशनकारण, पूजों श्री जिनराई ।।
नन्दीश्वर की उत्तरदिश में, पंचम रतिकर सोहे ।
तापर श्री जिनमन्दिर राजे, सकल सुरासुर मोहे ।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशा पंचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

दोहा

खड्ग चापधर वज्रधर, विद्याधर नर वीर।
वीतराग पदतर धरें, निजमस्तक धर धीर।।

पद्धड़ी छन्द

जय जय जिनराज दयानिधान, भवकानन हानन दवमहान।
जय भव्यकमलगण अमल भान, जय सन्त चकोरन चन्द्र जान।।
जय दुखदवाग्नि को मेघरुप, जय विपतिमेघ को पवनरुप।
जय अघपर्वत को वज्रधार, जय भ्रमतम को रविकिरण सार।।
जय कामसर्प को गरुड़रुप, जय क्रोधजहर को अमृतकूप।
जय मानमहागज को मृगेन्द्र, जय चरणकमल पूजें सुरेन्द्र।।
जय मायातरुवर को कुठार, जय लोभजहर को सुधाधार।
जय मिथ्यामद गद वैद्यराज, जय भवजलतारण को जहाज।।
जय भविजन को सुरतरु समान, जय चिन्तामणि तुम ही प्रमान।
जय कालचक्र को कालरुप, जय देवन के सरताज भूप।।
जय चार घातिया कर्मनाश, जय केवलज्ञान भयो प्रकाश।
जय भविजीवन हितकाज सार, जय आरज में कीनों विहार।।
जय परिग्रहत्यागी नग्नकाय, जय गुरुवर निस्पृह कहे भाय।
वसुवीस मूलगुण धार सोय, जय धर्मगुरु जानो जु लोय।।
जय दयाधर्म उपदेश देव, जय मुनि श्रावक दो भांति भेव।
जय सकलव्रती मुनिराज धर्म, जय देशव्रती है गृही पर्म।।
जय गृही धर्म बारह प्रकार, सम्यक्त्व बिना सब विफल सार।
जय समकित दर्जा प्रथम जान, इस बिना क्रिया सब व्यर्थ मान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इत्यादि बहुत उपदेश देय, शिवधाम विषैं प्रभु वास लेय ।
अक्षय अनन्त थिर रहे सार, सो सिद्ध करो भवसिन्धु पार ।।
जब तक मम जग में रहो वास, जब तक अरिकर्म करे प्रकाश ।
तब तक तुम होहु सहाय देव, कर जोड़ जिनेश्वर करत सेव ।।

दोहा

जब तक रवि शशि गगन में, मेरु रहे भू मांहि ।
तब तक वरतो धर्म जिन, जयवन्तो जगमांहि ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशांपचमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

देख खेह सम जान, नेह तजो यातें सुधी ।
हित अपनो पहिचान, सेवो जिनवर धर्म की ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। ४९।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशांजन गिरि षष्ठ रतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

जोगीरासा छन्द

नन्दीश्वर की उत्तरदिश में, षष्ठम रतिकर सोहे ।
तापर श्रीजिनभवन अकृत्रिम, सुरसुरपति मन मोहे ।।
भावभक्ति कर शक्तिहीन हम, तुम पद चित में ध्यावें ।
याकी भक्तिभाव सों निश्चय, मन वांछित नर पावें ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशा षष्ठरतिकर जिन बिम्बसमूह! अत्रावतरावतर सम्वौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्

अथाष्टकम् (गीताछन्द)

चहुँगति भ्रमत बहुत दुख पायो, कहूँ थिर न रहाइयो ।
इस दुखद वागिनिशमन कारण, जिनचरण जल लाइयो ।।
शुभ द्वीप अष्टम इन्द्रदिश में, षष्ठ रतिकरगिरि जहां ।
जिनभवन सुरपति नित जजें, अतिमोद उर धरे तहां ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाषष्ठरतिकर जिनबिम्बेभ्य जलम्।

जगमांहि बहुत शरीर धारे, भवाताप सह्यो घनो ।
तिहि शमनकारण परमचंदन, जिनचरण पूजन भनो ।। शु०

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाषष्ठरतिकर जिनबिम्बेभ्य सुगन्धम्।

बहुकाल बिन निजरुप जाने, जगत में विपदा भरी ।
तिहि भ्रमनिवारण हेतु अक्षत, लाय जिनपूजा करी ।। शु०

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाषष्ठरतिकर जिनबिम्बेभ्य अक्षतम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनकल्पना के जाल मांही, फँस्यो बहुविध दुख सह्यो ।
तिहि चाहदाह विनाशकारण, पुष्पपूजन जिन कह्यो ।।
शुभ द्वीप अष्टम इन्द्र दिश में, षष्ठ रतिकर गिरि जहां ।
जिनभवन सुरपति नित जजें अति, हर्ष उर धारें तहां ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाषष्ठरतिकर जिनविम्वेभ्य पुष्पम् ।

सुर असुर ब्रह्मा हरि महेश्वर, सर्व याके वश परें ।
तिहि क्षुधानाशन सरस चरुले, जिनचरण आगे धरें ।।शु०

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाषष्ठरतिकर जिनविम्वेभ्य नैवेद्यम् ।

जिहि तम विशें शशि सूर्य भरमें, जीव निज न लखावहीं ।
तिहि भ्रममहातम नाशकारण, दीप पूजन ल्यावहीं ।। शु०

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाषष्ठरतिकर जिनविम्वेभ्य दीपम् ।

दश गन्धमिश्रित धूप कीजे, भव्य भक्ति चढ़ाय के ।
वसुविधि जलावन हेतु जिन, पूजें सुधूप चढ़ाय के ।। शु०

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाषष्ठरतिकर जिनविम्वेभ्य धूपम् ।

जगवासनाशक इक अपूपम, धर्म जिनवर ने कह्यो ।
तसु प्राप्तिकारण भव्य उत्तम, सुफल जिनवर पद सज्यो ।।शु०

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाषष्ठरतिकर जिनविम्वेभ्य फलम् ।

जल गन्ध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप बनावने ।
फल लाय अर्घ बनाय जिनवर, चरण मांहि चढ़ावने ।।
शुभ द्वीप अष्टम इन्द्र दिश में, षष्ठ रतिकर गिरि जहां ।
जिनभवन सुरपति नित जजें अति, हर्ष उर धारें तहां ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाषष्ठरतिकर जिनविम्वेभ्य अर्घ्यम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाल

दोहा

तिहुँ जग चन्द्र जिनेश के, चरणन शीश नवाय।
गाऊँ जयमाला सही, सुनो सुधी चित लाय ।।

पद्धड़ी छन्द

जय वीतराग देवाधिदेव, शत इन्द्र आपकी करत सेव।
जय तुम सर्वज्ञ कहे पुरान, जिनके प्रगटो केवल सुज्ञान ।।
जय सकल वस्तु ज्ञायकस्वरुप, त्रैलोक्यवर्ति त्रयकाल रुप।
जय सबको जानों एक बार, जय ज्ञानशक्ति ऐसी अपार ।।
जय सुख अनन्त क्षायिकस्वरुप, जय तैसो ही बल है अनूप।
जय दर्श अनन्तानन्त धार, जय जानि चतुष्टय नन्त सार ।।
जय क्षायिकलब्धि अनन्त रुप, गुण अक्षत धारे निज अनूप।
जय निराहार तन ज्योतिवन्त, जिहि आगे बहु रवि शशि जलन्त ।।
जय प्रभाचक्र अति जगमगात, भवि देखत भव निज सात सात।
जय तीन छत्र शिर पर सुहात, जिनकी मुक्तामणि झलझलात ।।
मनु तीन रुप धर कर अनूप, पद जजत नखतयुत नखतभूप।
जय चौंसठ चामर ढरत सोय, जय दुन्दुभिरब अतिमधुर होय ।।
जय तरु अशोक सब हरे शोक, जिहि देखत भागे पापथोक।
जय नभ में बरसे फूल सार, मनु अतनु भग्यो हथयार डार ।।
जय जिनध्वनि बरसे सुधाधार, भविचातक तृप्ति लहे अपार।
जय धर्म तनो उपदेश सार, हितरुप सदा आनन्दकार ।।
जय सिंहासन पर अन्तरीक्ष, चतुरानन पद्मासन प्रतीक्ष।
जिनराज विराजे अतुल जोत, जिनके प्रताप निशि नाहिं होत ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इत्यादि अतुल लक्ष्मी निवास, जिनराज विराजत भूमि खास ।
जय शतयोजन चहुँ दिश मँझार, नहिं पड़े काल अचरज अपार ।।
नहिं होय जीववध जिनप्रभाव, जय जातविरोधी मित्रभाव ।
जय जय जिनराज दयानिधान, भविजीवन को नित कर्महान ।।
जय मम उर मांहि बसो जिनरेश, जय ज्ञानज्योति वकसो अशेश ।
जय भवभ्रामर निरबार देव, कर जोड़ जिनेश्वर करत सेव ।।

दोहा

अकृत्रिम जिन चैत्यगृह बन्दों मन वच काय ।
बुधिवारिधि वर्धित करो, मेरी करो सहाय ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशाषष्ठरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

कृपा करो महाराज, निज विद्याबल दीजिये ।
बड़े गरीब निवाज, इतनो जस प्रभु लीजिये ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। ५० ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीनन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशांजन गिरि सप्तम रतिकर गिरि जिन मन्दिर पूजा

अडिल्ल छन्द

नन्दीश्वर वर द्वीप आठमों जानिये ।
इन्द्रदिशा में सप्तम रतिकर मानिये ।।
तापर श्रीजिनभवन जजें सुर आयके ।
हम तिनको शिर नाय जजें मन लायके ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर द्वीपोत्तरदिशासप्तमरतिकर जिनबिम्बसमूह! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्

अथाष्टकम् (टेर छन्द)

भविश्री जिनवर के पाय, सुकारण पूजत हैं ।। भवि.।।
पद्मद्रह को उज्वल जल ले, रतन कटोरी धारा ।
धार देत श्रीजिनवर आगे, जन्म जरा निरवारा ।।सु.
नन्दीश्वर उत्तर सप्तम गिरि, रतिकर जिनगृह जानो ।
सकल सुरासुर पूज रचावें, सफल देव पद मानों ।। सु.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा सप्तम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

वावन चन्दन दाहनिकन्दन, केशर संग घसाया ।
जन्मरोग भवरोग निवारण, जिनपद अग्र चढ़ाया ।।
सुका. । भवि. । नन्दी. । सकल. । सुका. । भवि. ।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा सप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम्।

तंदुल स्वच्छ सरल सित शुचि अति, चंदन थार भराये ।
अक्षयपद पावनजिनपद में, अक्षत सुरन चढ़ाये ।।
सुका. । भवि. । नन्दी. । सकल. । सुका. । भवि. ।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा सप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हेमरतन के रंग विरंगे, पुष्प सुरासुर लावे ।
काम अग्नि के शमनकरण को, श्री जिनचरण चढ़ावे ।।
सुका. । भवि. । नन्दी. । सकल. । सुका. । भवि. ।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा सप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

सूपकारकृत व्यंजन ताजे, शुद्ध थाल भर लावे ।
क्षुधारोग दुख दूर करन को, जिनवरचरण चढ़ावे ।।
सुका. । भवि. । नन्दी. । सकल. । सुका. । भवि. ।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा सप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

नानाविध के द्वीप मनोहर, शक्तिसमान बनावे ।
भ्रमतमहरणकरण आतमहित, श्री जिनचरण चढ़ावे ।।
सुका. । भवि. । नन्दी. । सकल. । सुका. । भवि. ।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा सप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

धूप सुगन्ध दशों दिश फैली, अलिसमूह चलि आवे ।
दुष्टकर्म जारन के कारण, श्रीजिन भव्य चढ़ावे ।।
सुका. । भवि. । नन्दी. । सकल. । सुका. । भवि. ।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा सप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

बहुविध मिष्ट शिष्ट फल लेकर, सुवरण थाल भरावे ।
मुक्ति महाफल काज शचीपति, जिनपद अग्र चढ़ावे ।।
सुका. । भवि. । नन्दी. । सकल. । सुका. । भवि. ।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा सप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जलफल अर्घ बनाय गायगुय, शशिसमूह चलि आवे ।
तीर्थेश्वर के चरणन आगे, सुरपति आय चढ़ावे ।। सु.
नन्दीश्वर उत्तर सप्तम गिरि, रतिकर जिनगृह जानो ।
सर्व सुरासुर पूज रचावें, सफल देवपद मानो ।। सु.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा सप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयमाला

दोहा

त्रेसठ प्रकृति खिपाय के, पायो केवलज्ञान।
जिनपद चरणसरोज को, नमों सदा हित मान ।।

पद्धड़ी छन्द

जय केवल ज्ञान धनी जिनेश, जय चारण रिषि मुनि जपत शेश।
जय त्रेसठ प्रकृति दई खपाय, जय जिनके नाम कहूँ सुगाय ।।
जय ज्ञानावरण सुपंच भेद, नव भेद दर्शनावरण खेद ।
वसु वीस मोहनिय प्रकृति चूर, जय अंतरायपण करे दूर ।।
जय सोहल प्रकृति अघाति हान, पायो जिनराज महान ज्ञान।
शत इन्द्र चरण को शीश नाय, तुमको नवकार करे जिनाय।
जय भवनपती दश भेद देव, प्रतिभेद पुरन्दर चार एव ।
इस भांति भवन चालीस इन्द्र, वत्तीस इसी विध व्यन्तरेन्द्र ।।
चौबीस कल्पवासी सुरेश, शशि सूर्य दोय द्युतिवर महेश ।
चक्री नरेश पशु सिंह मान, शत इन्द्र इसी विध भव्य मान ।।
इक इक सुरपति को विभव सार, भवि जानो जिन आगम दुवार।
सबकी सेना है सात भाँत, बहु भाँति विक्रिया धरे भ्रात ।।
जिनराज पंच कल्याण सार, पूजन को आवें सुर अपार।
लौकान्तिक तप कल्याण एक, पूजन को आवें यही टेक ।।
अहमिन्द्र न छोड़े निज सुथान, जय ऐसो वस्तुस्वभाव जान।
निजथल से विनय करें अशेष, अति मन्दराग वर्ते हमेश ।।
जिनराज दियो उपदेश एव, हम करत सदा जिनचरण सेव।
जय जय भवतारक तुम जिनेश, जग मांहि एक तुमहीं अशेश ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय तुम पदरज मम शिर मँझार, अनिवार रहो यह अरज सार।
सुनि लेहु जिनेश्वर देव एव, कर कृपा यही जगतार देव ।।

दोहा

नन्दीश्वर उत्तरदिशा, सप्तम रतिकर भाल।
जिनमन्दिर ताकी भई, पूरन यह जयमाल।।

ओं ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशा सप्तमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।

सोरठा

दीनबन्धु महाराज, अरज सुनो मम दीन की।
तारणतरण जिहाज, भवजल पार उतारिये ।।

।। इत्याशीर्वाद ।। ५१ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नन्दीश्वर द्वीपोत्तर दिशाष्टमरतिकर गिरिमन्दिर पूजा

कुसुमलता छन्द

नन्दीश्वर उत्तर अंजनगिरि, ताकी उत्तर वापी जान ।
दूजे कोन आठमों रतिकर, जिनमन्दिर सोहे सिरथान ।।
चित्र विचित्र रत्नमय प्रतिमा, इकशत आठ शाश्वती मान ।
सुर सुरपति नित पूजन जावे, मैं तिनको पूजों घर ध्यान ।।

ओं ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपोत्तर दिशाष्टमरतिकर गिरि जिन बिम्बसमूह! अत्रावतरावतर सम्वौषट् इत्याह्वानम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्

अथाष्टकम् (जोगीरासा)

ज्ञानावरणी कर्म उदय से, निजपरज्ञान न पावे ।
ता अरि नाशकरन को भविजन, जिन पद नीर चढ़ावे ।।
नन्दीश्वर उत्तर रतिकर गिरि, अष्टम जिनगृह जानो ।
सुरसुरपति जिनपूज रचावे, पावे सुख अधिकानो ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर द्वीपोत्तरदिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः जलम् ।

दूजों कर्म दर्शनावरणी, दर्शनगुण को रोके ।
जिनवर पद पूजों चन्दन सों, यातें विधिरस सोखे ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर द्वीपोत्तरदिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः सुगन्धम् ।

तीजो कर्म वेदनी जग में, सुख साता को घाती ।
जजत जिनेश्वरपद अक्षय सों, यातें निजनिधि पाती ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर द्वीपोत्तरदिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अक्षतम् ।

मोहकर्म बलवान जगत में, इन्द्रादिक वश कीने ।
फूल चढ़ाय जिनेश्वर आगे, मोहकाम वश लीने ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर द्वीपोत्तरदिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः पुष्पम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आयुकर्म को बन्धन भारी, जीव जगत कसि राखे ।
नेवजसों जिनपूज जगतजन, निज अनुभवरस चाखे ।।
नन्दीश्वर उत्तर रतिकरगिरि, अष्टम जिनगृह जानो ।।
सुरसुरपति जिनपूज रचावे, पावे सुख अधिकानो ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर द्वीपोत्तरदिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यम् ।

नामकर्मवश जीव जगत में, नाना देह धरे है।
दीपक से जो पूजत भविजन, अविचल वास करे है ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर द्वीपोत्तरदिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः दीपम् ।

गोत्रकर्म के उदय जीव यह, ऊँच नीच कुल पावे ।
धूप दहन खेवत जिन आगे, जिनपद को भवि पावे ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर द्वीपोत्तरदिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः धूपम् ।

अन्तराय दुखदाय बड़ो जग, यातें भय हरि माने ।
श्री जिनचरण चढ़ाय मंहाफल, भवि या विधि को भाने ।। न.

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर द्वीपोत्तरदिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः फलम् ।

जलफल द्रव्य मिलाय मनोहर, अर्घ करो भरि थारी ।
श्रीजिन सन्मुख पुंज करत ही, सब सम्पति परिहारी ।।
नन्दीश्वर उत्तर रतिकरगिरि, अष्टम जिनगृह जानो ।।
सुरसुरपति जिनपूज रचावे, पावे सुख अधिकानो ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वर द्वीपोत्तरदिशाष्टमरतिकर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

जयमाल

दोहा

अष्टम द्वीप सुहावनो, ताकी उत्तर ठौर ।
अष्टम रतिकर जिनभवन, नमों सदा कर जोर ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्धडी छन्द

जय नन्दीश्वर वर द्वीप जान, जय ताकी उत्तरदिश महान।
जय अंजनपर्वत श्यामरंग, जय ताकी उत्तरदिश अभंग ।।
अपराजित वापी शोभमान, तिहि दुतिय कोन के मध्य जान।
जय रतिकर पर्वत हेमरुप, ता ऊपर जिनगृह छवि अनूप ।।
जय शतयोजन आयाम जान, लम्बे तिहि अर्घ कहे पुरान।
पचहत्तर योजन है उतंग, वावन जिनमन्दिर इसी ढंग ।।
जय समवसरणरणना महान, जिहि देखत भविजन पापहान।
जय जय जिनबिम्ब विराजमान, शत आठ अधिक शोभा समान ।।
जय उच्च धनुष शतपंच देह, पद्मासन राजे गत सनेह।
जय दीप्तिवन्त अति रुपवन्त, जनु बोलत है मानो हसन्त ।।
जय जिनस्वरुप लखि देवराज, अतिहर्षित उर पूजा समाज।
निजशची साथ बहुभक्तिभाव, जिनवरपद पूजे सहित चाव ।।
अति उज्वल जल ले कर मँझार, अरु गन्धसहित चन्दन अपार।
जिनचरणकमल तर धार देत, मानों बांधत भवसिन्धु सेत ।।
जय मुक्ताफल अक्षतसरुप, जिनपतिपद पूजे स्वर्गभूप।
जय कल्पवृक्ष के फूल सार, जय शक्र धरे जिनपद अगार ।।
जय नेवज बहुविध स्वादरुप, सुरपति जिनचरण जजें अनूप।
जय रतन अमौलिक दीप सार, विबुधेश चढ़ावें प्रभु अगार ।।
जय स्वर्गधूप अतिगन्ध सर, अमरेश चढ़ावें जिन अगार।
जय उत्तमफल जिनपद मँझार, जय शक्र चढ़ावे हर्ष धार ।।
कर द्युति नुति हरि जिनवर अगार, बहुमुदित चढ़ावे अर्घ थार।
जय करुणानिधि जिनदेव देव, हम शरणागत आये सु एव ।।
देवेशमहित तुम हे जिनाय, भवभव हूजो हमरे सहाय।
कर कृपा यही जगतार देव, कर जोड़ जिनेश्वर करत सेव ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा

नन्दीश्वर वर द्वीप के, बावन जिन अगार ।
वन्दों मन काय से, बांछितार्थ दातार ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशाषष्ठम रतिकर जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यम् ।

सोरठा

तुम प्रभु दीनदयाल, मैं अतिदीन दुखी सुनो ।
मेरी अरज कृपाल, करो पार संसार से ।।

।। इत्याशीर्वादः ।। ५२ ।।

5134

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रत्येकार्घ

दोहा

नन्दीश्वर उत्तरदिशा, जहां होंय जिनरुप ।
तिन सब को पूजों सदा, अर्घ चढ़ाय अनूप ।।

ओं ह्रीं श्रीनंदीश्वरद्वीपोत्तरदिशासर्वजिनबिम्बेंभ्यः अर्घ्यम् ।

सोरठा

तिहि नभथल गत अमरगण, जिनके जिनवर धाम ।
वन्दों मन वच काय से, जजों अर्घ अभिराम ।।

ओं ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीप सर्वज्योतिर्भ वनव्यंतरदेवभवनजिनविम्बेभ्यः अर्घ्यम् ।

कुसुमलता छन्द

ढाई द्वीप एक सौ सत्तर, क्षेत्र मध्यवर्ती जिनराज ।
अथवा सर्व सिद्ध परमेश्वर, आचारज पाठक मुनिराज ।।
भूत भविष्यत वर्तमान के, पाँचों परमेष्ठी हितसाज ।
जन्म जन्म मम रहो सहायक, अरंज जिनेश्वर की सुखसाज ।।

ओं ह्रीं श्रीत्रिकालवर्ति पंचपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यम् नमः ।।

।। इति श्रीनन्दीश्वरद्वीप विधानं सम्पूर्णम् ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत् परिषद् के प्रकाशन

001 सिद्धचक्र विधान (संस्कृत)
002 विमल भक्ति संग्रह (पष्टम)
003 धर्ममार्गसार (द्वि.)
004 आराधना कथाकोष (द्वि.)
005 रत्नाकर की लहरें
006 अष्टपाहुड (द्वि.)
007 पंचास्तिकाय (द्वि.)
008 पंचस्तोत्र संग्रह (द्वि.)
009 पुरुषार्थ सिद्धयुपाय (द्वि.)
010 चर्चासागर
011 चन्द्रप्रभ चरित
012 सम्यकत्वकौमुदी (द्वि.)
013 परीक्षामुख (द्वि.)
014 क्षत्रचूड़ामणि (द्वि.)
015 तत्त्वानुशासन (द्वि.)
016 योगसार
017 नीतिसार समुच्चय
018 परमात्मप्रकाश
019 न्यायदीपिका (द्वि.)
020 शान्तिसुधासिन्धु
021 इन्द्रनंदि नीतिसार
022 इष्टोपदेश (तृ.)
023 समाधितन्त्र (तृ.)
024 वरांगचरित (संस्कृत, हिन्दी)
025 भरतेश वैभव (भाग-1,2)द्वि.
026 वैरागमणि माला
027 ध्यानसूत्राणि (तृ.)
028 श्रुतावतार
029 अमितगति श्रावकाचार
030 महामृत्युंजय पूजा विधान
031 स्वयंभूस्तोत्र (द्वि.)
032 द्रव्य संग्रह प्रश्नोत्तर टीका पष्ठम
033 धम्मरसायन
034 सार समुच्चय
035 प्रश्नोत्तर श्रावकाचार
036 आलापपद्धति (द्वि.)
037 मदनपराजय
038 वसुनन्दि श्रावकाचार
039 सागार धर्मामृत (तृ.)
040 बोधामृतसार
041 पाण्डवपुराण (द्वि.)
042 आप्तपरीक्षा (द्वि.)
043 पार्श्वचरितम् (द्वि.)
044 जीवकचिन्तामणि
045 आप्तमीमांसा
046 मेरुमन्दर पुराण
047 युक्त्यनुशासन
048 सूर्यप्रकाश ग्रन्थ
049 भाव संग्रह
050 लघुतत्त्वस्फोट
051 रत्नकरण्ड श्रावकाचार-टीका
052 अमरसेन चरित्र
053 मूलाचार भाषा वचनिका
054 पद्मपुराण
055 प्रमेयरत्नमाला
056 यशस्तिलकचम्पू भाग-1
057 यशस्तिलकचम्पू भाग-2
058 अर्थप्रकाशिका
059 निजात्मशुद्धिभावना
060 आत्मानुशासन (द्वि.)
061 सुधर्मध्यान प्रदीप
061 मगंलघट के भीतर अमृत
063 भक्ति मुक्ति सोपान
064 अंगपण्णत्ति
065 पार्श्वाभ्युदय
066 मल्लिनाथ पुराण (द्वि.)
067 विमलनाथ पुराण (द्वि.)
068 नेमिनाथ पुराण (द्वि.)
069 प्रवचनसार
070 धन्यकुमार चरितम्
071 सिद्धप्रिय स्तोत्र
072 सुदर्शन चरित्
073 अमृताशीति
074 रयणसार
075 मोक्षशास्त्र(प्रश्नो. टीका तृ.)
076 मर्यादा की रक्षा (तृ.)
077 स्या द् बाल शिक्षा भाग-1
078 स्या द् बाल शिक्षा भाग-2
079 स्या द् बाल शिक्षा भाग-3
080 स्या द् बाल शिक्षा भाग-4
081 पंचामृत अभिषेक पाठ (द्वि.)
082 वात्सल्य रत्नाकर भाग-1,2,3
083 नैतिक संस्कार भाग-1-3
084 सुभौम चरित्र
085 पद्मपुराण हिन्दी
086 भक्तामर स्तोत्र (प्रश्नो.टी.)
087 युगल आचार्य पूजा
088 सर्वार्थसिद्धि (मूल)
089 बालबोध स्तुति शिक्षा(च)
090 छहढाला (प्रश्नो.टी.पष्ठम)
091 चारित्रचक्रवर्ती
092 शान्तिनाथ विधान
093 नित्यपाठावली
094 कल्याणमन्दिर स्तोत्र विधान
095 चौबीस ठाणा
096 जैन सिद्धान्त प्रवेशिका
097 सुशीला उपन्यास
098 हनुमान चरित
099 अलौकिक दर्पण
100 प्रशांत वाणी (द्वि.)
101 जैन शासन
102 धर्मपरीक्षा
103 शान्तिनाथ पुराण
104 महावीर पुराण
105 प्रद्युम्नचरित
106 चौबीसी पुराण
107 पुण्यास्रव कथाकोष
108 मदनजुद्ध काव्य
109 भावत्रयफलदर्शी
110 श्रेणिक चरित्
111 तीर्थराज पर आचार्य विमलसागर कृतित्व
112 श्रीमद् भगवद् जिनसहस्त्रनाम पूजा विधान
113 भक्तामर विधान
114 णमोकार मंत्र कल्प
115 विमल ज्ञान प्रबोधिका टीका (द्वि.)
116 भारत का भरत (द्वि.)
117 मान्यखेट के हीरे
118 सम्मेदशिखर महात्मय (द्वि.)
119 सत्पथ की ओर
120 जिनाभिषेक
121 सम्मेदशिखर पूजा विधान
122 जिनवाणी
123 ऋषिमण्डल विधान
124 जिनदत्त चरित्
125 नागकुमार चरितम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi